Read and Laugh Series

नाकमें दम

और

जवानी बनाम बुढ़ापा

— उर्फ —

(मियांकी जूती मियांके सर)

हास्य-पूर्ण नाटक

(सचित्र)

Moliere—4—6.

—❀ ❀—

लेखक—
श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए० एल०, एल० बी०

—❀-❀—

—o—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी काशी

चौथी बार] १९३८ [मूल्य १।।)

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी काशी

शाखाएँ
२०३ हरिसन रोड कलकत्ता
गनपत रोड लाहौर
दरीबा कलां दिल्ली
बाकीपुर पटना

मुद्रक
रामशरण सिंह यादव
वणिक प्रेस
साक्षीविनायक काशी

वक्तव्य

प्रिय पाठक !

आज मैं फिर आप लोगोंके सामने अपने गुरु मोलियरके दो नाटकोंको हिन्दुस्तानी बनाकर लाया हूं। गो आप पहले इनको "मासिक मनोरंजन" और 'हिन्दी सर्वस्व' मे देख चुके हैं तो भी आपसे इनपर एक नजर डालनेके लिये मैं अनुरोध कर रहा हूँ। क्योंकि पहलेसे अब इनमें बहुत कुछ फर्क हो गया है। उम्मीद है कि जिस तरह से आपने 'मार-मारकर हकीम' 'आखोंमे धूल' और 'हवाई डाक्टर' को खुले दिलसे अपनाया है उसी तरहसे और उसी तपाकसे इनको भी आप आवभगत करके अपनायेंगे। यह हिन्दुस्तानियोंकी अपूर्व अतिथिसेवा और कोमल हृदयकी प्रशंसा सुनकर फ्रांससे आपसे मिलनेके लिये आये हैं। मगर विदेशी भाईकी सूरतमें नहीं बल्कि खासे हिन्दुस्तानी बनकर। देखू तो सही आप इनसे कैसा बर्ताव करते हैं।

पाठकगण, सम्पादकगण और नाटकमण्डलियोंके एक्टरगण जिस तरहसे आप सब लोगोंने मेरे नाटकोंको चावसे पढ़कर, बढियासे बढिया उनकी समालोचनाएं करके, उनको स्टेजपर बार-बार खूबीके साथ खेलकर मेरा उत्साह बढाया है उसके लिये

मैं आप सब लोगोंको किन शब्दोंमें धन्यवाद दूं ?

ईश्वरसे मेरी यही प्रार्थना है कि मुझे शक्ति दे कि जबतक जीवित रहूँ तबतक मातृभाषा तथा आप लोगोंकी सेवामें उपस्थित रहूँ और अपने परम पूजनीय गुरु मोलियरके सब नाटकोंको अपनाकर हिन्दुस्तानी बना डालू और यों मोलियरको हिन्दुस्तान में भी जीवित करके उनके नामकी धूम मचा दूं। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है। इसके सिवा अपने गुरुको और क्या दे सकता हूँ ?

गोंडा
२ नवम्बर १९१८ } —जी॰ पी॰ श्रीवास्तव

नाकमें दम

[*Moliere No 4 Le Mariage Force*]

मोलियरका यह नाटक पहले पहल तीन अंकोंमें २९-जनवरी १६६४ को *Louvre* में खेला गया था। बादशाह *Luus XIV* ने जिनकी उमर उस वक्त २६ बरसकी थी इसमें *Gipsy* का पार्ट खेला था। इसलिये इसका नाम उस वक्त *Ballet du Roi* पड़ गया था। उसके बाद १५ फ़ेब्रुअरीको यह एक ही अंकमें *Palais Roal* मे खेला गया। मोलियर मुसीबतमलका पार्ट करते थे।

M. Taschareau साहब फरमाते हैं कि इस नाटकमें दो मुख्य दृश्य हैं जिसमें फिलासफरोंका खाका उड़ाया गया है। मोलियरने इन दोनों दृश्योंको सिर्फ हंसानेहीकी गरजसे नहीं, बल्कि एक खास मतलबसे लिखा था और उनका वह मतलब बडी खूबसूरतीसे पूरा भी हो गया। बात यह थी कि उन दिनों फिलासफर *Aristotle* के मतका प्रचार इस बुरी तरह हो रहा था और लोग उसकी तरफ-दारी करनेमें ऐसे खप्ती और जिद्दी हो रहे थे कि इस मत-के खिलाफ जबान हिलाना एक बडा भारी जुर्म समझा जाता था। यहांतक कि पेरिसका विश्व-विद्यालय भी इस

मतके विरोधियोंके खूनका ऐसा प्यासा हुआ कि उनको मौतकी सजा दिलानेकी नीयतसे पेरिसकी पारलियामेंटसे १६२४ के चौथी सितम्बरवाले कानूनको जारी करानेवाला ही था कि ऐसे नाजुक वक्तमें मोलियरकी हास्यरसपूर्ण लेखनीने *Aristotle* के मतकी हँसी उड़ाकर फ्रांसमें इस होनेवाले अन्धेरको रोका। उनके दो फिलासफर *Pancrace* (मौलाना खप्तुलहवास) और *Marphurius* (पं० संकोचानन्द) ने स्टेजपर आकर वह धूम मचाई कि लोग शर्मसे कट-कट गये और विश्व विद्यालयको इस खूनी कानूनको जारी करानेकी फिर हिम्मत न पड़ी। मौलाना खप्तुलहवासवाला दृश्य बेढब हंसानेवाला है बशर्ते कि एक्टिंग पूरे तरहसे हो। क्योंकि यह सीन एक्टिंगके लिहाजसे जरा मुश्किल है।

मैंने इसके आधारपर हिन्दीमें यह 'नाकमें दम' पहले १९१२ में लिखा था जो आरेके "मासिक मनोरंजन" में प्रकाशित हुआ। उसके बाद १९१७ में मैंने फिर इसको नये सिरेसे लिखकर जहांतक मुमकिन हो सका मोलियरके मजाकको निबाहते हुए इसे हिन्दुस्तानी बनानेकी कोशिश की। इस दफे संन्यासियोंके दो नये दृश्य मिलाकर कुछ शिक्षा लानेकी भी चेष्टा की गई है। *Gipsies* के *ballet* नाचका अभाव उच्चकानन्दके मजाकसे पूरा किया गया है।

जहां फ्रांसीसी मजाक हिन्दुस्तानी रंगमें भद्दा मालूम हुआ, वहां उसी वजनके हिन्दुस्तानी मजाकसे काम लिया गया है। १९२२ में गोंडा और फैजाबादमें उसके अभिनय दो बार हो चुके हैं। दोनों स्थानोंपर खप्तुलहवासका पार्ट मुझीको करना पड़ा था। सौभाग्यसे हिन्दुस्तानी स्टेजपर भी इस नाटकको पूरी सफलता प्राप्त हुई।

पात्र

१-मुसीबतमल ·· ··· कुलच्छनीके साथ शादी करने-वाला एक बूढा अमीर

२-सलाहबख्श ··· ··· ··· ··· मुसीबतमलका दोस्त

३-झटपटराय ··· ··· ··· ··· कुलच्छनीका चचा

४-बिगड़ेदिल ··· ·· ··· ··· झटपटरायका लड़का

५-मौलाना खब्तुलहवास ··· ··· यूनानी दार्शनिक

६-पं० सङ्कोचानन्द ·· ·· ··· ··· तत्वज्ञानी

७-उच्चकानन्द ··· ··· ··· ··· ··· ज्योतिषी

८-घरबिगाड़ ··· ··· ··· ··· कुलच्छनीका प्रेमी

चार संन्यासी

पात्री

९-मैडम कुलच्छनी ··· ··· ··· झटपटरायकी भतीजी
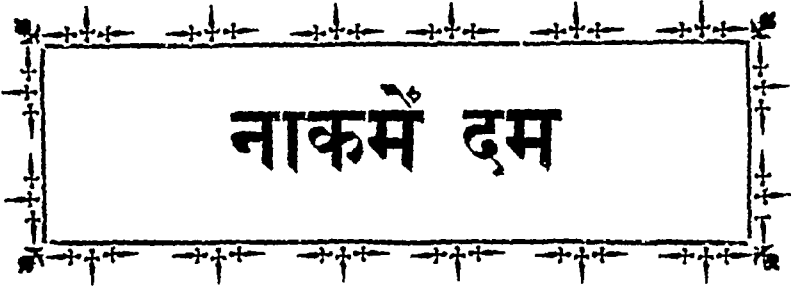
नाकमें दम

नाक में दम

पहला दृश्य

गोबरचन्दके मकानका सामना

[चार संन्यासियोंका मिलकर गाते हुए आना]

कोरस

"दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसंतौ पुनरायातः ।
कालः क्रीड़ति गच्छत्या युस्तदपि न मुंचत्याशावायुः ॥
भज गोविंद भज गोविंद भज गोविंदं मूढ़मते ॥ १ ॥
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥ध्रुव०॥
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतल भिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुंचत्याशापाशः ॥२॥

यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥३॥
जटिली मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायांबरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपिच न पश्यति मूढ़ उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥४॥
भगवद्गीता किंचिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता ।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चा ॥
अंगं गलितं पलित मुंडं दशनविहीन जातं तुडम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥६॥
बालस्तावत् क्रीड़ासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिंतामग्नः परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥ ७ ॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलुदुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे ॥ ८ ॥
पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययन पुनरपि वर्षं तदपि न मुंचत्याशामर्षम् ॥ ९ ॥
वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥१०॥
नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मासवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥११॥
कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः को मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥

गेयं गीता नामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसगे चित्तं देय दीनजनाय च वित्तम् ॥१३॥
यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहा पाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥
सुखतः क्रियते रामायोगः पश्चाद्धंत शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरण शरणं तदपि न मुंचति पापाचरणम् ॥
—श्रीशकराचार्य

[*मुसीबतमलका अपने मकानकी खिड़कीपर दिखाई देना*]

मुसीबत०—(*खिड़कीपर*) कौन हो भाई ? क्यों सुबही सुबह आस्मान सरपर उठा रखा है ?

१ संन्यासी—ईश्वरका भजन करते हुए जाते हैं बाबा ।

मुसीबत०—तो इतना गला फाड़नेकी क्या जरूरत है ? क्या ईश्वर आजकल ऊँचा सुनने लगे है ?

२ संन्यासी—आहा ! प्रातःकालमें तो ईश्वर भजनसे सकल संसार गुञ्ज उठना चाहिये । परन्तु हा ! अब भारत-की गति कैसी हो गयी कि ईश्वर भजन भी अब लोगोंके कानोंमे बुरा मालूम होने लगा ।

मुसीबत०—आखिर इस अजन-भजनकी जरूरत क्या है ? ईश्वर अच्छे हों चाहे बुरे हों । तुमसे मतलब ?

३ संन्यासी—दाताजी, ईश्वर सकल संसारका सिर-

जनहार है, पालनहार है। वह परमात्मा परम दयालु जगदीश्वर है।

मुसीबत०—अच्छा, तो परम नहीं परम परम परम-दयालु जगदीश्वर हैं, होंगे। हमसे क्या सरोकार? दुनिया-को बनाया। हमको पैदा किया। अच्छा किया। जब उन्हें ग़रज़ थी तब तो ऐसा किया। हम तो उनसे कहने नहीं गये कि ऐसा कीजिये, वैसा कीजिये। तो फिर हमसे उनसे कैसा सरोकार? तुम्हीं बताओ, ठीक है न?

१ संन्यासी—नहीं दाताजी। ऐसा कहना उचित नहीं है। हमको आपको क्या—वरन् सकल जीव-जन्तुओंको उसका गुण गाना चाहिये।

मुसीबत०—जी हां, तुम्हारी तरह दुनियामे सब थोड़े ही फालतू हैं, जो अपना काम छोडके इसमें अपना वक्त ख़राब करे?

२ संन्यासी—बाबा, यह भी तो अपना ही काम है। मनुष्य तो स्वार्थी जीव है। वह ईश्वरका स्मरण करता है तो अपने ही किसी न किसी स्वार्थके लिये।

मुसीबत०—तो क्या उनकी याद करनेसे लोगोंका मतलब पूरा हो जाता है?

३ संन्यासी—बाबा, ईश्वर नाममें तो वह गुण है कि

सकल मनोकामना सिद्ध हो जाती है। कोई सत्य भावसे उनका स्मरण भी तो करे।

मुसीबत०—अगर ऐसा है, तो कहिये अपनी शादीके लिये उनका फिर ध्यान करू ?

१-२-३-४-सन्यासी—अय ! इस अवस्थामे विवाह !!

मुसीबत०—क्यों क्या, हर्ज है ? तुम लोग तो ऐसे चकराये कि जैसे मैं फांसीपर चढने जाता हूँ।

१ सन्यासी—दाताजी, इस अवस्थामें अब अपनी मुक्तिके लिये ईश्वरका ध्यान कीजिये। इस लोकसे सम्बन्ध तोड़िये। अपना परलोक बनाइये।

२ सन्यासी—इस अवस्थामें विवाहकी वेदीपर चढ़ना फासी चढ़नेसे भी कठिनतर है। क्योंकि इसकी फंसरी तो कुछ ही घड़ीमें छुटकारा दे देती है, परन्तु उसकी फंसरी शिरपर चिन्ताओंका टोप पहनाकर सदैव दम घोंटती रहती है। और—

"चिता चिन्ता समाह्युक्ता बिन्दुमात्रं विशेषतः।
सजीवं दहते चिन्ता निर्जीवं दहते चिता॥"

३ संन्यासी—हा भारतमाता ! जहां तेरे पुत्र जब वृद्धावस्थाको प्राप्त होते थे, ससारके झगड़ोंसे दूर भागते थे। पर्वतों और तपोवनोंको निकल जाते थे और एकान्तमें

उस दाताके ध्यानमें अपने अन्तिम दिवस बिताकर जीवन सुफल करते थे। तहा धर्म कर्मकी अब यह दशा हो गयी!

"प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये न तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यसि॥"

मुसीबत०—वाह! वाह! क्या अच्छी सलाह है। अगर किसीको मरनेमे अभी सालभरकी देर हो, तो इस सलाहपर चलनेसे कल ही मर जाय। जब घरपर मौत न आती हो, तो अलबत्ता जंगलों पहाडोंकी खाक छाने और चीते और भेड़ियेके पेटमे जाय। मगर आपकी दुआसे यमराज साहब हैजा, ताऊन, तपेदिक, इङ्गो डिङ्गोफीवर, इन्फ्लुइञ्जा और निमोनियाके रूपमे फैशन बदलकर हर तीसरे महीने देखिये तो मौजूद रहते हैं। अगर ईश्वरको यही मजूर होता कि दुनियाके लोग जङ्गलोंमे ठोकरे खायं, तो यह इतने दुनियामे मजे क्यों पैदा किये है? इतनी प्यारी-प्यारी सूरतें फिर किसके लिये बनाई है? सोचो तो। दो दिन-की जिन्दगी है। आखिर मरना तो है ही। इसको क्यों वाही तबाहीमें बिताते हो? धोबीके कुत्तेकी तरह मारे-मारे फिरते हो? लड़कपन खेल-कूदमें गुजरा। जवानी पेटके धन्धेमें बीती। अरे अब बुढापेमें तो आराम कर लो। दुनियाके कुछ मजे उठा लो। यही बुढ़ापा तो

एक इतमीनानका वक्त है। अगर दुनियामें आकर बेरङ्ग ही वापस गये तो यहां पैदा होनेका फायदा क्या?

गाना

मुसीबत०—*बेकार यार करते हो जीवन बरबाद।*
दरदरका फिरना छोड़ो, दुनियासे मत मुख मोड़ो।
वृद्धावस्था आयी है, अब भी तो कुछ सुख भोगो।
हुए क्यों तुम वैरागी, रोती होगी घरवाली।
बे घर हो तो घर कर लो, है लाखों जोबनवाली।
हाँ, एकसे एक हैं अल्हड़ वो कमसिन हैं भोलीवो
भाली हैं आंखें तो खोलो जरा। बेकार०।

१ संन्यासी—

"न भूतपूर्वं न कदापि वार्ता,हेम्नः कुरंगो न कदापि दृष्टः।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य,विनाशकाले विपरीत बुद्धिः॥"

२—संन्यासी—

"स्त्रियो हि मूलं निधनस्य पुंसः,स्त्रियो हि मूलं व्यसनस्य पुंस
स्त्रियो हि मूल नरकस्य पुंसः,स्त्रियो हि मूलं कलहस्य पुंसः

१-२-३-४-सन्यासी—बेकार यार करते जीवन बरबाद।

"अनभ्यासे विषं शास्त्र अजीर्णे भोजनं विषम्॥

मूर्खस्य च विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषम् ।"
यह बात यार रखना हमारी भी याद ।

(संन्यासियोंका प्रस्थान)

(मुसीबतमलका अपने मकानसे बाहर निकलना और फिर अपने दरवाजेकी तरफ घूमकर कहना)

मुसीबत०—(*अपने घरके आदमियोंसे*) सुना ? मैं अभी लौट आता हूँ। घरकी हिफाजत अच्छी तरहसे करना। खबरदार, कोई चीज़ गड़बड़ न होने पावे। अगर कोई मुझे रुपये देनेके लिये आवे तो मुझे फौरन मुन्शी सलाहबख्श-के यहांसे बुलवा लेना। मगर कोई मांगने आवे तो कह देना कि वह देहली चले गये। समझे ?

(सलाहबख्शका आना)

सलाह०— (*आखिरी बात सुनकर*) शाबाश ! हुकुम दे तो इस तरहका।

मुसीबत०—अल्लाह ! मुन्शी सलाहबख्श ! खूब आये आप इस वक्त। मैं आपहीके यहां जा रहा था।

सलाह०—क्यों ? क्यों ? खैरियत तो है न ?

मुसीबत०—आपसे बड़े जरूरी मामलेमें सलाह लेनी है।

सलाह०--मै हर तरहसे खिदमत करनेके लिये तैयार हूं। कहिये तो सही मामला क्या है ।

मुसीबत०—अच्छा तो फिर जरा गौरसे सुनिये, क्योंकि बिना दोस्तोंकी रायके कोई काम करना मेरे ख्यालमें ठीक नहीं।

सलाह०—मैं साहब भला किस काबिल हूं, जो आपको राय दे सकूं। यह सब आपकी कदरदानी है। अच्छा कहिये, बात क्या है।

मुसीबत०—मगर पहले आप मुझसे वादा कीजिये कि इस मामलेमें मुझे आप अपनी सच्ची राय बताइयेगा।

सलाह०—तो झूठी राय देनेकी मुझे क्या जरूरत पडी है?

मुसीबत०—देखिये, कोई बात मुँहदेखी न कहियेगा न खुशाम्दाना कहियेगा। क्योंकि ऐसी बाते सच्ची नहीं होतीं।

सलाह०—जी हाँ, कभी नहीं।

मुसीबत०—मेरी रायमें जो दोस्त सच्चे दिलसे बाते नहीं करता, वह दोस्त नही दुश्मन है।

सलाह०—बेशक।

मुसीबत०—मगर सच्चे दोस्त आजकल कहाँ मिलते हैं?

सलाह०—यह भी आपका कहना ठीक है।

मुसीबत०—अच्छा; तो आप मुझसे वादा करते हैं न आप मुझे अपनी सच्ची और सही राय देंगे?

सलाह०—हाँ साहब, वादा करता हूँ।

मुसीबत०—अच्छा, क़सम खाइये।

सलाह०—लीजिये, यह भी सही (*मुसीबतमलके सरपर हाथ रखकर*) आपके क़दम मुबारककी कसम। मगर वह आखिर कौनसी बात है, जिसमें इस क़दर पाबन्दियोंकी जरूरत है?

मुसीबत०—मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि मैं दाढी-मूछें मुड़ा डालूं।

सलाह०—क्यों? क्या जूंए पड़ गये हैं या कोई मर गया है?

मुसीबत०-ईश्वर न करे। मगर बात यह है कि दाढ़ीमे इतना बोझ होता है कि कमर झुका देती है। इसीलिये अगर हमलोग भी अपना लङ्गर कटा दें तो जरूर कमर सीधी हो जायगी और असल बात यह है कि औरतको प्यार करनेमें दाढ़ीकी वजहसे बडी उलझन होती है।

सलाह०—अजी हजरत, अब आपको औरतसे क्या सरोकार?

मुसीबत०—नहीं सरोकार है तो अब हो जायगा। सरोकार करनेसे सरोकार होता है। यही तो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि शादी करूँ?

सलाह०—कौन ?—आप ?

मुसीबत०—हाँ, मै, मै, मै खुद ।

सलाह०—तो दाढ़ीकी फिक्र आप फजूल करते है । ईश्वर चाहेगा तो शादी होते ही आप अच्छी तरह मुड़ जायँगे ।

मुसीबत०— वाह ! वाह ! तो इससे बेहतर फिर क्या चाहिये ? जोरूकी जोरू और बाल-सफाकी पुड़ियाकी पुड़िया ।

सलाह०—आप होशमे हैं न ?

मुसीबत०— क्यों, आखिर इस सवालसे मतलब ?

सलाह०—आप मुझे एक बात बताइये ।

मुसीबत०—कहिये ।

सलाह०—आपकी उमर क्या होगी ?

मुसीबत०—मेरी उमर ?

सलाह०—जी हाँ, आपहीकी ।

मुसीबत०—क्या मालूम ? मुझे कुछ ख्याल नहीं है । मगर मैं बिल्कुल भला चङ्गा हूँ ।

सलाह०—तौ भी अन्दाजन कुछ तो मालूम होगा ।

मुसीबत०—कुछ भी नहीं । कहीं उमरका ख्याल किसीको रहता है ?

सलाह०—अच्छा, यह बताइये कि पहले पहल जब हमसे आपसे जान पहचान हुई थी उस वक्त आप कै बरसके थे।

मुसीबत०—तब तो मैं सिर्फ बीस ही बरसका था।

सलाह०—देहलीमें हम आप कै साल रहे?

मुसीबत०—आठ बरस।

सलाह०—और मुरादाबादमें?

मुसीबत०—सात बरस।

सलाह०—उसके बाद आप कलकत्ते चले गये थे।

मुसीबत०—हाँ, वहाँ साढे पाच बरसतक रहा।

सलाह०—और वहाँसे यहाँ कब आये?

मुसीबत०—सन् अट्ठानबेमें।

सलाह०—अच्छा, तो अट्ठानबेसे सन् बारहतक चौदह बरस। आठ बरस देहलीमें रहे बाईस। सात बरस मुरादाबादमें उन्तीस। पांच बरस कलकत्तेमे चौंतीस और बीस बरस जान-पहचान होनेके पहले चौव्वन। इसलिये आपही-के हिसाबसे आप इस वक्त कमसे कम चौव्वन बरसके हैं।

मुसीबत०—मैं? मैं चौव्वन बरसका? क्या ग़ज़ब करते हैं आप? यह कभी मुमकिन ही नहीं जनाब।

सलाह०—अजी नहीं साहब, मेरे जोड़नेमें कभी गल्ती

नहीं हो सकती। जब आपने सच्ची राय देनेके लिये मुझसे वादा कर लिया है, कसमे खिला ली है तो मै आपसे यह जरूर कहूँगा कि आपके लिये शादी करना ठीक नही। यह सब झगडे नवजवानोंहीके लिये छोड दीजिये। आपकी उमरवाले लोगोंको तो इसका ख्यालतक भी नहीं करना चाहिये। शादी बरबादी तो मशहूर ही है। उसपर भी किसीने क्या ही अच्छा कहा है कि ब्याह करना दुनिया-भरकी सब बेवकूफियोंसे बढ़कर है और फिर खासकर इस उमरमें जब हमलोग बुजुर्ग और अक्लमन्द समझे जाते हैं। हमलोगोंको अब भगवद्भजन करना चाहिये न कि ऐसी बेवकूफीमे फंसना। यही मेरी दोस्ताना सादी-सी सच्ची राय है। मैं आपको सलाह देता हूँ कि शादी करनेका ख्याल एकदम छोड़ दीजिये और नहीं तो बूढ़ेके मरनेके बाद इतने रोज आजाद रहकर अब आप अपने पैरोंमें सबसे कड़ी ज़ञ्जीर बांधना चाहते हैं तो वही 'मियाकी जूती मियांके सर' वाला हाल होगा। मैं क्या—सब लोग आपको बेवकूफोंका सरदार कहेंगे और आप बुरी तरह हंसे जायेंगे।

मुसीबत०—कभी नहीं। मैं तो शादी करनेपर तुला बैठा हूँ और खासकर उस रंगीली रसीली अलबेलीके

साथ शादी करनेमें कभी नहीं हंसा जा सकता।

सलाह०—आह! तब तो बात ही और है। यह पहले आपने क्यों नहीं बताया?

मुसीबत०—और क्या कहूं? ऐसी ग़जबकी खूबसूरत है वह कि कुछ पूछिये नहीं। अभी सिन ही क्या है? चढती जवानी है। पूरी जवानीमे देखियेगा।

सलाह०—ओहो! तब तो मै ही ग़लतीपर था। आप ज़रूर शादी कीजिये। ऐसी शादी तो हर वक्त हर सिनमें रायज है।

"सिद्धमन्नं फलं पक्वं नारी प्रथमयौवनम्।
सुभाषितं च ताम्बूलं सद्या गृह्णाति बुद्धिमान्॥"

मुसीबत०—वाह! वाह! शास्त्रमे भी क्या ऐसा लिखा है? जरूर लिखा होगा। लाइये, हाथ मुन्शी सलाहबख्श और क्या कहूँ मैं आपसे। उस लड़कीको देखते ही मैं उसपर चपरगट्टू भी हो गया हूं।

सलाह०—तब आप फजूल किसीसे पूछ-तांछ करते हैं। अजी जनाब, ऐसी शादी तो मरनेके बाद भी रायज है।

"पसे सुरदन बनाए जाएंगे सागर मेरे गिलके।
लबे जां बख्शके बोसे मिलेंगे खाकमें मिलके॥"

मुसीबत०—तो मुनासिब यही है कि शादी कर डालूं।

सलाह०—जरूर। क्योंकि मरनेके बाद कोई घरमें भी चाहिये।

मुसीबत०—तभी तो मैं उसके चचासे मिल अपनी चटपट शादी तै कर ली है।

सलाह०—वाह! वाह! खूब किया।

मुसीबत०—और शादी कलही होगी। अब देर नहीं सही जाती।

सलाह०—वाह! वाह!

मुसीबत०—क्यों मुन्शी सलाहबख्श, आखिर मै शादी क्यों न करूं? क्या आप समझते हैं कि मै शादी करनेके काबिल नहीं हूँ। अजी उमरका ख्याल छोड़िये। असल चीज तो देखिये। क्या मेरे हाथ काम नहीं देते कि टांगे काम नहीं देतीं। किसी जवानको मेरे सामने खड़ा कर दीजिये फिर देखिये, किसके चेहरेपर ज्यादा दमक मालूम होती है। बाल सफेद हो गये हैं तो इससे क्या? यह तो बच्चोंके भी हो जाते हैं। (*दात दिखाता है*) देखिये दांत, इसमें तो कोई खराबी नहीं है। अगर हो भी तो क्या? चार वक्त मैं खूब चाब चाबके खाना नहीं खाता हूं? और हाजमा मेरा देखिये कितना जबरदस्त है। अब तो आपके दिलसे हिचकिचाहट दूर हुई।

सलाह०—जी हां, बिलकुल। आपका कहना बहुत ठीक है। जरूर शादी कीजिये। पड़ोसी बड़ी दोआएँ देंगे।

मुसीबत०—शादी करनेके पहले मेरी भी राय नहीं थी। मगर अब जब इतनी-इतनी जबरदस्त वजूहात मुझे शादी करनेके लिये मजबूर कर रही है, तो फिर शादी क्यों न की जाये? जनाब, वडी किस्मतसे किसीको ऐसी फैशनेबिल जोरू नसीब होती है। यह क्या कम खुशी है कि जब मैं कहींसे थका-मान्दा घर आऊंगा तो वह मुझे हिलायगी, डोलायगी, खेलायगी, झुलायगी और दूसरी बात यह है कि जहां शादीकी तहाँ दो-चार दर्जन ताबड़-तोड़ बच्चे हो पड़े। फिर देखियेगा तमाशा। कोई इधर चहक रहा है। कोई उधर कूद रहा है। कोई चिल्लायगा—ओ मेले फादल! कोई हाथ पकड़के खींचेगा—अले पापा दमलीका गुल आन दो। अः! अः! अः! मुझे तो अब सचमुच मालूम होता है कि मेरे बच्चे चारों तरफ खेल खेलकर मेरी दाढ़ी नोच रहे हैं।

सलाह०—बेशक! बेशक! इससे बढ़कर कौनसी खुशी हो सकती है? जरूर शादी कीजिये। बहुत जल्द शादी कीजिये। मगर ज़रा ख्याल रखियेगा कि जब बच्चे हों तो एक जोड़ा हमको भी दीजियेगा।

मुसीबत०—तो आपकी सलाह है न ?

सलाह०—जी हां, भला मैं ऐसे नेक काममे क्यों बाधा डालने लगा ?

मुसीबत०—बड़ी खुशीकी बात है कि अब आप मुझे यह सच्चे दोस्तकी तरह सलाह दे रहे हैं।

सलाह०—मगर यह तो बताइये, किससे आप शादी करनेवाले हैं ?

मुसीबत०—मिस कुलच्छनीके साथ।

सलाह०—अच्छा, वह·· वह, मैं समझ गया। तब तो ईश्वर ही खैर करे।

मुसीबत०—क्या कहा ?

सलाह०—यही कि जोडी बडी अच्छी है। चूकिये मत उनसे शादी कर डालिये।

मुसीबत०—न कहियेगा कैसा पसन्द किया है ?

सलाह०—क्या कहना है ! तकदीर हो तो आपकीसी !

मुसीबत०—अह ! अह ! अह ! मारे खुशीके मैं तो घुला जा रहा हूँ। आपका इस नेक सलाहके लिये हजार-हजार शुक्रिया अदा करता हूं। इस शादीकी खुशीमे जो जलसा करूंगा उसमें आप जरूर शरीक होइयेगा। मैं आपको न्योता दे देता हूँ।

सलाह०—न्योता देनेकी क्या ज़रूरत? शादी होने तो दीजिये, फिर देखियेगा बिना बुलाये ईश्वर चाहेगा तो सैकड़ों रोज़ आपके घर पहुँचेंगे।

मुसीबत०—ईश्वर वह दिन तो दिखाये। जाइयेगा? अच्छा, आदाबर्ज।

सलाह०—(*अलग*) जब चूंटीके पर निकलते हैं तो उसके मरनेका दिन नज़दीक होता है। जब चिराग़की टेममें लपट उठती है तो वह बुझनेके करीब होता है। जब बुड्ढोंके दिलमे शादीका शौक चर्राता है तो उनकी बरबादी शुरू हो जाती है। कहा कुलच्छनी चढी जवानीमें मस्त। ज़माने की हवा खाये हुई, दुनियाको चराये हुई और कहां यह काठके उल्लू मुसीबतमल क़ब्रमें पांव लटकाये हुए। अक्लसे हाथ धोये हुए। जोडी हो तो ऐसी हो! जोड़ी हो तो ऐसी हो! (*कहता हुआ जाता है*)।

मुसीबत०—(*अकेला*) इस शादीसे खुशी-ही-खुशी होगी; क्योंकि इसका ज़िक्र सबको खुश करता है। जिससे कहता हूँ, वही खूब हँसता है। वाह रे मैं! मैं ही मैं हूँ इस वक्त। क़िस्मत हो तो ऐसी हो! क़िस्मत हो तो ऐसी हो!

दूसरा दृश्य

सडक

(कुलच्छनीका गाते हुए आना)

गाना

वनूं बांकी दुल्हनियांरी प्यारी प्यारी जो शौहरको पाऊं ।
ब्याही जाऊँ, मैडम कहलाऊं फिरतो मोटरपर थेटरको जाऊं ।
वहां यारोंसे होगा शेकहैण्ड, बैठा देखेगा मेरा हसबैण्ड ।
कोई डियर कहे, कोई दिलवर कहे, कोई डारलिंग मैडम ।
मैं नखरेसे बोलू डियर कम, हियर कम ।
सबसे चुहल करूंगी, मटक मटक चलूंगी ।
फैशनसे बन ठनके फबन सवर दिलको हरूँगी ॥

(मुसीबतमलका आना)

मुसीबत०—(*अलग*) अह ! अह ! अह ! देखते हो खाल टपक पड़ी । क्या चाल है । क्या ढाल है । क्या आन है । क्या बान है । लचक देखो । अह ! अह ! कमरका पता ही नहीं मिलता किधर है ।

"एक तो हुस्न बला उस पे बनावट आफत,
घर बिगाड़ेंगे हजारोंके सँवरनेवाले ।"

भला ऐसा भी कोई आदमी निपोड़संख होगा जो इन-को देखे और उसका जी इनके साथ शादी करनेको न चाहे? (*कुलच्छनीसे*) अरे ओ अपने आइन्दा शौहरकी प्यारी आइन्दा बीबी, क्या मैं आपसे पूछ सकता हूं कि आप इस वक्त कहां तशरीफ ले जा रही हैं?

कुलच्छनी—आपका टोकना बिल्कुल बेजा और फैशन-के खिलाफ है, इसलिये मैं इसका जवाब देनेसे इनकार करती हूँ।

मुसीबत०—अच्छा प्यारी, कल जब हमारी आपकी दोनोंकी खुशी-खुशी शादी होगी, तब तो आप मुझे किसी चीजके लिये इनकार नहीं कर सकती है। क्योंकि आप कलसे मेरी चीज कहलायेंगी। आप मेरी, आपका सब बदन सरसे पैरतक मेरा। आपकी कनखियोंका सनकियों-का मैं ही अकेला मालिक। आपके पौडरवाले गालोंका मै ही मालिक। दिल भडकानेवाले आपके ओठोंका मैं ही मालिक। आपके नन्हें-नन्हे हाथोंका मैं ही मालिक। आप-के······गरज यह है कि आपके रोएं-रोएं तक सब मेरे। जिस तरहसे चाहूँगा, मैं आपको प्यार करूंगा। क्यों प्यारी. इस शादीसे आप खुश हैं न?

कुलच्छनी—जी हाँ, खुशी तो जरूर है। क्योंकि घर-

नाक्सें हम

वालोंके हर वक्तके दबावमे मेरा नाकमें दम हो गया था। धन्य भाग ! मैं उनके पंजेसे छूटती हूं। इसलिये नहीं कि कढाईसे निकालूं और आगमे गिरूं। बल्कि इसलिये कि आजादीसे जिन्दगी गुजारूं और दुनियाके मजे उड़ाऊं। मगर आपकी बातोंसे मुझे मालूम होता है कि अभी आपको फैशनेबिल जेण्टिलमैन होनेमे बहुत कसर बाकी है। खैर, मैं इस कसरको पूरी कर दूंगी और आपके बदलेमे भी मैं ही खुद और ज्यादा फैशनेबिल हो जाऊँगी। तो भी आपको हमेशा नये और अप-टू-डेट फैशनके मुताबिक मेरे साथ रहना पडेगा। क्योंकि मैं पुराने तरीकोंको एकदम नापसन्द करती हूँ। जैसे मर्द आदमी है वैसे औरत भी आदमी है और आदमी *Social creature* (समाजप्रिय जीव) है, इसलिये बिना सोसाइटीके मैं जिन्दा नहीं रह सकती। मुझसे मिलनेके लिये मेरे सैकडों दोस्त आया करेंगे और उनके साथ मैं हमेशा *club, Party dinnerc theatre* वगैरहमे जाया करूंगी। आपको मेरे किसी मामलेमें किसी किस्मका दखल देनेका कोई अख्तियार या हक नहीं होगा। जब आप मुझसे मिलना चाहेंगे तो आपको इसके लिये मेरे पास पहलेसे दरख्वास्त भेजनी पड़ेगी, जिसके मंजूर होनेपर आप मुझसे हफ्तेमें मेरी

फुर्सतके वक्त पाच मिनटतक मुझसे मिल सकेंगे। इससे ज्यादा वक्त शायद मैं आपको न दे सकूंगी। क्योंकि मुझे फुरसत बहुत कम रहेगी। मैं उम्मीद करती हूँ कि आप उन बेवकूफ और शक्की मर्दों की तरह न होंगे जो अक्लके अन्धे अपनी जोरुओंको पिंजड़ेमे बन्द करके सामने बैठे दिन-रात पहरा दिया करते हैं। बल्कि आप मर्दोंमे एक नमूना होंगे और ऐसा कि आप बडे फख्रके साथ मुझे अपने नवजवान दोस्तोंसे *introduce* करते रहेंगे। फिर तो हमारी आपकी जिन्दगी खूब मजेमे निबहेगी। मुझे यकीन है कि आप मेरी इन आजादियोंको पसन्द करेंगे और इनकी कद्र करेंगे। क्योंकि "कद्रगौहर (*अपनी तरफ इशारा करके*) शाह दानद (*मुसीबतमलकी तरफ*) या विदानद जौहरी (*दर्शकोंकी तरफ*)" ..मगर......यह क्या? आपका चेहरा एकदम *down* क्यों हो गया?

मुसीबत०—मेरे सरमे मिर्गी आ गयी है।

कुलच्छनी—आह! यह तो अकसर बहुत लोगोंको आया करती है। मगर हमारी आपकी शादी इन सब बातोंको दुरुस्त कर देगी। अच्छा *good bye*! मैं *Leck & Co* के यहा जाकर एक मोटरकार और एक *ladies buggy* के लिये *order* दिये देती हू। और इन सभोंका

बिल आपके नाम भेजवा दूंगी। (*जाती है*)

(*सलाहबख्शका आना*)

सलाह०—अख्खा! बाबू मुसीबतमल आप हैं? मैं आपहीको ढूंढ रहा था। इस शहरमे एक नया सौदागर आया हुआ है, उसके पास एक-से-एक बढकर हीरे जवाहिरातके जडाऊ गहने हैं और शादीके वक्त अपनी लेडी साहबाको देनेके लिये आपको ऐसे गहनोंकी जरूरत भी है। इसलिये यही मैं आपसे कहने आया हूँ, कि जेवरात उसके यहाँ जरूर खरीदिये।

मुसीबत०—अजी, मारिये गोली जेवरातको। अभी इनकी कोई जल्दी नहीं है।

सलाह०—क्यों, क्यों? खैर तो है? वह जोश-ओ-खरोश सब क्या हुए? (*अलग*) मुँहपर इतनी फटकार क्यों बरस रही है?

मुसीबत०—क्या बताऊँ बाबू सलाहबख्श, कुछ कहते नहीं बनता। मुझे इस शादीके बारेमे यकायक एक शक पैदा हो गया है। कल रात मैंने एक अजीब ओ गरीब सपना देखा था, जिसको बिना किसी क़ाबिल आदमीसे ठीक-ठीक विचरवाये हुए मुनासिब नहीं मालूम होता है कि मैं इस शादीके मामलेमें हाथ डालूं। क्योंकि सपना

आप जानते हैं, अकसर मानिन्द आइनेके होता है, जिसमें होनेवाली वात अक्लमन्दोंको साफ-साफ दिखाई देती है। इसी वजहसे जरा तवियत परेशान हो गयी है और दिलमें खलवली पड़ी हुई है। मैंने देखा कि मैं एक किश्तीमें वैठा हुआ हूँ। वलाकी अन्धेरी रात है। तूफानका वह जोर और वादलोंकी वह गड़गडाहट ·· ··।

सलाह०—इस वक्त तो मुझे माफ कीजिये। एक वड़े जरूरी काममें हूँ और दूसरे मैं सपने-उपनेके वारेमें कुछ समझता नहीं हूँ। अगर आपको कुछ शक पड़ गया है और इस शादीकी भलाई-वुराई जानना चाहते हैं तो आप-हीके पड़ोसमें एक वडे आलिम-फाजिल मौलाना और दूसरे एक वडे भारी तत्वज्ञानीजी रहते हैं, इन लोगोंसे पूछिये। जो कुछ मुझे आपसे कहना था, वह तो मैं कह ही चुका हूँ। अच्छा, आदावर्ज। (*जाता है*)

मुसीवत०—वेशक। इस मामलेमे इन लोगोंकी राय जरूर लेनी चाहिये। इनकी राय वड़ी पक्की और सही होगी।

(*जाता है*)

पहला दृश्य

खफ्तुलहवासका मकान

[*मौलाना खफ्तुलहवास और मुसीबतमल*]

खफ्तुल०—(*जिस तरफसे आता है उसी तरफ घूमकर*) नालायक ! बदतमीज ! तहजीबका दुश्मन ! अहमक ! दूर हो। अभी दमेजदनमें फरार हो। इल्मी दुनियासे मैं तुझे शहर बदर कराके छोड़ूंगा।

मुसीबतमल—अहा ! अच्छे जरूरतके वक्त मिले यह।

खफ्तुल०—(*मुसीबतमलको न देखकर*) बडी-बडी वजूहातसे मैं कायम कर दूंगा और आलिमोंके आलिम अरस्तूके सबूतोंसे माजी हाल मुस्तकबिल और कयासतक करनेवाले सीगोंमे भी साबित कर दूंगा कि तू—'अहमकुन् अहमकाने अहमकून अहमकतुन अहमकाताने अहमकातुन् है।

मुसीबत०—बेशक। मगर यह लड़ किससे रहे हैं? खप्तुलहवाससे) अजी मौलाना साहब—

खप्तुल०—(*मुसीबतमलको बिना देखे हुए*) मन्तकका क़ायदा एक भी नहीं मालूम। मगर बहस करनेको मुस्तैद!

मुसीबत०—मारे गुस्सेके अन्धे हो रहे हैं। मुझे देखते तक नहीं (*मौलानासे*) जनाबमन—

खप्तुल०—यह बात इल्मकी सलतनतसे एक दम खारिज कर देनेके क़ाबिल है।

मुसीबत०—किसीने इन्हे बेतरह भड़का दिया है। (*मौलानासे*) अजी हजरत—

खप्तुल—मन् जइअल् हजमालम् यज़फर बेहाजतही।

मुसीबत०—मैंने कहा आदाबर्ज है मौलाना खप्तुल-हवास साहब!

खप्तुल०—तसलीम।

मुसीबत०—क्या मैं—

खप्तुल०—(*जहाँसे आता है वहां फ़िर लौटकर*) तुझे अपनी ग़ल्तियां मालूम भी हैं? बेमतलबका जुमला!!!

मुसीबत०—सुनिये तो—

खप्तुल०—फायल ग़ायब, महफूल बेजगह, फेलजू-मानी और मतलबका मतलब खप्त।

मुसीबत०—जरा मेरी—

खफ्तुल०—मैं इसको जरूर गलत साबित कर दूंगा—"व मन्‌ग्म्मा बेसहामिल उजबी लम्‌यनली"—मतलब मानी सब।

मुसीबत०—जनाब मौलाना साहब, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्यों आप इतने खफा हैं?

खफ्तुल०—इसकी एक बडी जबर्दस्त वजह है।

मुसीबत०—मिहरबानी करके जरा मुझे भी बताइये।

खफ्तुल०—एक अहमक एक बिलकुल गलत बात खूंखार और डरावनी बातको कायम करना चाहता था।

मुसीबत०—वह कौनसी बात है?

खफ्तुल०—आह बाबू मुसीबतमल! क्या कहे जमानेकी बदनसीबी। किसी चीजकी हालत पूछनेके काबिल नहीं है। यह दुनिया एक आम बरबादी, खराबी और तबाहीमे गर्क है। एक खौफनाक आजादी हर जगह रायज है और कोतवालोंको जो कि सलतनतमें अमन फैलानेके लिये तैनात हैं ऐसी नाकाबिल बरदाश्त और शर्मनाक बातको जो मैं आपसे कहने जा रहा हूँ बरदाश्त करनेके लिये चिल्लूभर पानीमे डूब मरना चाहिये।*

---

* यह इशारा पेरिसके विश्वविद्यालयकी तरफ था।

मुसीबत०—ओफ ओ! आखिर ऐसी वह कौनसी बात है?

खफ्तुल०—क्या यह खौफनाक बात नहीं है—वह बात जो इन्तकामके लिये गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही है और जिसका शोरगुल सातवें आस्मानतक सुनाई दे रहा है—कि कोई शख्स अलानियां तौरपर "जूतेकी शकल" कहे?

मुसीबत०—इसकी फिलासफी मेरी समझमें नहीं आयी।

खफ्तुल०—मैं कहता हूँ कि हमलोगोंकी 'जूतेकी बनावट' कहना चाहिये न कि 'जूतेकी शकल'। क्योंकि बनावट और शकलमें बहुत बड़ा फर्क है। जानदार कुदरती चीजोंकी ऊपरी सतहको शकल कहते हैं और बेजान मसनूई अशियाके ऊपरी ढांचेको बनावट कहते है। मगर शकल कभी नहीं कहते। *(जिधरसे आया था फिर वहां जाकर)* हां, बेवकूफ कूड़मग्ज, तुझे इस तरहके बातें करनी चाहिये। इसको अरस्तूने सिफतके बयानमें बड़े जोरोंके अलफाजमें लिखा है।

मुसीबत०—(*अलग*) हो गये अच्छी तरहसे फाजिल यह तो। इसीलिये लोग कहते हैं कि बहुत पढ़ना बुरा है।

(*खफ्तुलहवाससे*) अजी मौलाना साहब, इन बातोंको मारिये गोली।

खफ्तुल०—मेरा गुस्सा इतना चढ़ा है कि मैं नहीं जानता कि क्या कह रहा हूँ।

मुसीबत०—अच्छा, अब जूते और शकलकी जान बखशिये। सुनिये, मुझे आपसे कुछ कहना है।

खफ्तुल०—(*फिर उसी तरफ घूमकर*) गुस्ताख! कूडमग्ज!

मुसीबत०—अब जाने दीजिये साहब!

खफ्तुल०—(*उसी तरहसे*) नाहंजार! मरदूद!

मुसीबत०—मैं आपसे मिन्नत करता हूँ।

खफ्तुल०—भला इस बातको कभी मैं मान सकता हूँ?

मुसीबत०—वह बात ही गलत है। हाँ मैं—

खफ्तुल०—अरस्तूने इसको एकदम गलत साबित कर दिया है।

मुसीबत०—क्यों नहीं? सच है। मगर—

खफ्तुल०—और बड़े जोरोंके अलफाजमें।

मुसीबत०—जी हाँ, आपका कहना दुरुस्त है। (*उस तरफ घूमकर जिधरसे मौलाना आया था*) बेशक! तू बड़ा बेवकूफ है और बेअकिल है जो तू इतने बड़े लायक-फायक आलिमसे जो लिखना-पढना जानते हैं बहस करनेकी कोशिश

करता है। (*ख़प्तुलहवाससे*) लीजिये, अब वह झगड़ा खतम हुआ। मैंने भी उसे डांट दिया। मैं एक मामलेके बारेमे आपसे राय पूछने आया हूँ। मैं आपका बड़ा ही एहसान-मन्द हूँगा अगर आप अपनी नेक सलाह बताकर मेरी परे-शानी कम कर देंगे। मेरा इरादा शादी करनेका है और उसके लिये मैंने एक बलाकी खूबसूरत और फैशनेबिल नव-जवान लड़की पसन्द की है। मै उसे चाहता भी हूँ और वह भी मुझसे ही व्याह करना चाहती है। इसके चचा भी राजी हो गये है, मगर डर यह है कि कहीं ऐसा न हो कि बादको पछताना पड़े और हाथपर सर रखके रोना पड़े। आप हकीम हैं, आलिम हैं। आप मुझे यह बताइये कि मै अब क्या करूँ ? आपकी राय इस मामलेमे बड़ी पक्की होगी। आप मुझे क्या सलाह देते हैं ? शादी करूँ या न करूँ ?

ख़प्तुल०—"मन् ज़इअल हजमा लम् यजफर बेहाजत ही।" अगर जूतेकी शकलवाली बात क़ायम हो गयी तो मैं बेवकूफ साबित हो जाऊंगा।

मुसीबत०—मर, कम्बख्त तो तू है ही। सबूतकी क्या जरूरत ? (*ख़प्तुलहवाससे*) अय किबला ! जरा इधर भी कान दीजिये। घण्टे भरसे आपसे बातें कर रहा हूँ और आप सुनते ही नहीं।

खप्तुल०—मोआफीका ख्वास्तगार हूँ। मारे खफगीके दिमाग उबल रहा है।

मुसीबत०—अच्छा, अब गम खाइये। जरा मेरी एक बात सुन लीजिये।

खप्तुल०—अच्छा, क्या चाहते हैं आप?

मुसीबत०—मैं आपसे कुछ बाते करना चाहता हूँ।

खप्तुल०—यह कहिये। अच्छा, बाते करनेमे आप कौनसी जबान इस्तेमाल करेंगे।

मुसीबत०—कौनसी जबान!

खप्तुल०—हाँ।

मुसीबत०—अरे वही जबान जो मेरे मुंहमें है। क्या मैं किसी औरसे थोडे ही मांगने जाऊंगा?

खप्तुल०—मेरा मतलब तर्जे बयान, तर्जे कलामसे है।

मुसीबत०—ओह! यह बात?

खप्तुल०—आप मुझसे अर्बी बोलेंगे?

मुसीबत०—अजी तौबा कीजिये क़िबला।

खप्तुल०—तो क्या तुर्की? मुसीबत०—नहीं।

खप्तुल०—अत्ताली? मुसीबत०—नहीं।

खप्तुल०—यूनानी? मुसीबत०—नहीं।

खप्तुल०—लातीनी? मुसीबत०—नहीं।

खफ्तुल०—यहूदी ? मुसीबत०—नहीं ।

खफ्तुल०—रूसी ? मुसीबत०—नहीं ।

खफ्तुल०—तातारी ? मुसीबत०—नहीं ।

खफ्तुल०—फारसी ? मुसीबत०—नहीं ।

खफ्तुल०—पश्तो ? मुसीबत०—नहीं ।

खफ्तुल०—मुलतानी ?

मुसीबत०—नहीं······नहीं—हिन्दुस्तानी—हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानी ।

खफ्तुल—आहा ! हिन्दुस्तानी ?

मुसीबत०—हाँ जनाब, वही ।

खफ्तुल०—लाहौल बिला कूवत ! तो आप उस तरफ जाइये । क्योंकि यह कान खास इल्मी और ग़ैरमुल्की जबानके लिये मोकर्रर है और मादरी तथा दहकानी ज़बानके लिये यह कान नहीं है ।

मुसीबत०—ऐसे आदमियोंके साथ बातें करना क्या पूरी क़वायद करनी पड़ती है ।

खफ्तुल०—अच्छा, आप बताइये । आप किस गरजसे यहां तशरीफ़ लाये हैं ?

मुसीबत०—एक मुशकिल आ पड़ी है । उसपर आपकी सलाह लेने आया हूँ ।

खप्तुल०—मैं समझ गया। यह कोई इल्मी मुशकिल होगी। है न यही बात ?

मुसीबत०—माफ कीजिये जनाब ! मैं—

खप्तुल०—शायद आप यह जानना चाहते होंगे कि माद्दा और सिफत हसतीके लेहाजसे हममानीया जूमानी अलफ़ाज़ हैं ?

मुसीबत—नहीं साहब ! मेरे—

खप्तुल०—या यह कि मन्तक हुनर है या इल्म ?

मुसीबत०—अजी नहीं जनाब—

खप्तुल०—या यह कि मन्तकमें दिमाग़की तीनों खासियतोंकी जरूरत पड़ती है। या फकत तीसरीकी ?

मुसीबत०—उफ ! नहीं क़िबला। मगर कुछ—

खप्तुल०—या यह कि आसमान सात है या एक ?

मुसीबत०—अरे कुछ सुनियेगा भी ?

खप्तुल०—या यह कि नतीजा दलीलका खुलासा होता है ?

मुसीबत०—नहीं नहीं, मैं—

खप्तुल०—या यह कि अच्छाईकी असलियत इश्तियाक़में होती है या मोआफिकतमें ?

मुसीबत०—उफ ! नाकमे दम हो गया !

खप्तुल०—या यह कि अर्बीमें हर्फ़चे क्यों नहीं इस्त-माल होता ?

मुसीबत०—मुझे भी तो कुछ कहने दीजिये—

खप्तुल०—या यह कि फ़ारसी अर्बीसे निकलती है या अर्बी फारसीसे ?

मुसीबत०—नहीं नहीं नहीं। भाड़में जा कम्बख्त !

खप्तुल०—तब क्या आप पूछते हैं ? हमारी समझमें नहीं आता। अच्छा, आप ही बताइये।

मुसीबत०—मैं तो कहने जा रहा हूँ, मगर आप सुनिये तो। मामला यह है कि मैं एक लडकीसे शादी करना चाहता हूँ। (*इस जगहसे मौलाना भी साथ-साथ बोलने लगता है*) जो कि बहुत खूबसूरत और नौजवान है। मैं उसे बेहद चाहता हूँ और उसके चचाको उसकी शादी मेरे साथ कर देनेके लिये राजी भी कर लिया है। मगर डरता हूँ—

खप्तुल०—(*साथ-साथ बोलता है*) कलाम यानी तर्ज़े गुफ्तगू इनसानको अपने ख्यालात जाहिर करनेके लिये दिया गया है। जिस तरह ख्यालात चीज़ोंकी तस्वीरें हैं, उसी तरह हमारे अलफाज ख्यलातकी तस्वीरें हैं। (*मुसीबतमल उकता-कर खप्तुलहवासका मुँह अपने हाथसे बार-बार बन्द करता है और जब हाथ उठाता है तब खप्तुलहवास बोलने लगता*

है) मगर ये तस्वीरें और तस्वीरोंसे मुख्तलिफ हैं। क्योंकि और तस्वीरें अपने असलसे हर हिस्सेमें अलग रहती हैं, लेकिन गुफ्तगूमें इसका असल खुद शामिल रहता है। इसलिये गुफ्तगू बाहिरी निशानोंमें जाहिर किये हुए ख्यालात हैं। इससे यह नतीजा निकलता है कि जो अच्छी तरहसे सोच सकता है, वही अच्छी तरहसे बोल सकता है। इस वास्ते गुफ्तगू—जो कि तमाम निशानोंमे बहुत ही क़ाबिल फहम निशान है उसके जरियेसे अपने ख्यालातको जाहिर करो।

(मुसीबत खप्तुलहवासको धक्का दे देकर घरमें ढकेल देता है और दरवाजा बन्द कर देता है ताकि निकल न सके)

खप्तुल०—*(घरके भीतरसे)* हां, गुफ्तगू क्या है ? यह दिलका मुतरज्जिम और जानकी तस्वीर है और *(खिड़की के ऊपर आकर)* यह ऐसा आइना है, जिसमे दिलके छिपे हुए खुफिया रोज साफ तरीकेसे जाहिर होते हैं। इसलिये जब आपमें बोलने और बयान करनेकी ताकत है, तो क्यों नहीं आप अपने ख्यालातको हमपर जाहिर करनेके लिये गुफ्तगूका इस्तेमाल करते हैं ?

मुसीबत०--यही तो मैं करना चाहता हूं, मगर आप सुनते कहा है ?

खप्तुल०—कहिये, मैं सुनता हूँ।

मुसीबत०—मैं आपसे यह कहता हूँ जनाबमन कि—

खप्तुल०—मगर इसका ख्याल रखिये जो कुछ कहिये थोड़ेमें।

मुसीबत—बहुत अच्छा। मैं—

खप्तुल०—तूल तबीली छोड़ दीजियेगा।

मुसीबत०—उफ! जनाब क्या—

खप्तुल०—अपने ख्यालातको मुख्तसर कर चन्द जुमलोंमें कहियेगा।

मुसीबत०—मैं सब कुछ करूंगा। आप सुनें भी तो—

ख़प्तुल०—देखिये, तूल कलाम न होने पावे और न घुमाव-फिराव हो। (*मुसीबतमल मारे गुस्सेके ढेला उठा-उठाकर मौलानाको मारनेके लिये खिड़कीपर फेंकता है*)

खप्तुल०—अय! यह कौनसी बदतमीजी? गुफ्तगू करनेके बजाय तुम गुस्सा होते हो। बस, मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। जाओ, यहाँसे। तुम उस आदमीसे भी ज्यादा गुस्ताख हो जो 'जूतेकी शकल' कहता था। मैं बड़े-बड़े सबूतोंसे, दलीलोंसे, बहससे और मन्तकके हर कायदेसे साबित कर दूँगा कि तुम बेवकूफके सिवा कुछ नहीं हो और न कभी इसके अलावा कुछ हो सकते हो। और मैं

जनाब मौलवी मौलाना खप्तुलहवास साहब हूं और हमेशा यहीं रहूँगा।

मुसीबत०—उफ! नाकमे दम कर दिया इसने। ऐसा तो खप्ती हमने देखा ही नहीं।

खप्तुल०—(*दूसरी तरफसे स्टेजपर आकर*) मैं आलिम हूँ, मैं फाजिल हूँ, मैं हकीम हूँ।

मुसीबत०—अयं! फिर?

खप्तुल०—मैं ल्याकत और काबिलियतका आदमी हूं। (*जाता हुआ*) कुदरती, इखलाकी, मुल्की, हर इल्मका मैं उस्ताद हूँ। (*लौटता हुआ*) मैं आलिम और बहुत ही बडा आलिम हूँ। (*जाता हुआ*) मैं दुनियाके तमाम इल्मों-को जानता हूं और सीगे मुबालगे मैं जानता हूँ। इल्म किस्सा, इल्म तवारीख, इल्म तवारीखजिन, (*लौटता हुआ*) कायदा, नजम, इल्म फसाहत, इल्म बलागत, इल्म मानी, इल्म कलाम, इल्म मन्तक। (*जाता हुआ*) इल्म तबीबी, इल्म हिसाब, इल्म हिन्दसा, इल्म तबाबत, (*लौटता हुआ*) इल्म तहरीर, इल्म उकलैदिस, इल्म मेमारी, इल्म ख्याल, इल्म इबारत, इल्म नजूम, इल्म रमल, इल्म क्याफा, इल्म दस्तशनावी। (*जाताहुआ*) इल्म खुशनवीसी, इल्म जुगरा-फिया, इल्म तबकात, इल्म मुनाजिरा वगैरह! वगैरह!

वगैरह ।

(चला गया)

मुसीबत०—अरे आसमान फट पड़े-ऐसे बेवकूफ आलिमोंपर, जो कम्बख्त सुनता तक नहीं। दिमागकी चूल-चूल बिगाड़ दी। उफ! नाकमे दम हो गया। ऐसे बक्कियोंसे ईश्वर ही समझे। अच्छा,अब तत्वज्ञानीजीके पास चलना चाहिये, शायद वह कुछ राय बताये ।

(जाता है)

दूसरा दृश्य

रास्ता

(सङ्कोचानन्द तत्वज्ञानी और मुसीबतमलका बातें करते हुए आना)

संकोच०—अच्छा, अपने आगमनका अभिप्राय प्रकट कीजिये।

मुसीबत०—एक मामलेमे आपसे कुछ सलाह लेने आया हूँ। (*अलग*) शुक्र है, यह बात सुन तो लेते हैं।

संकोच०—बाबू मुसीबतमल! आप अपनी वार्ताके ढङ्गको बदलिये। हमारे तत्वका आदेश यह है कि कदापि कोई वार्ता निश्चय और दृढतापूर्वक वर्णन नहीं करनी चाहिये। मनुष्यको बात-बातपर संकोच और सन्देह करना तथा सदैव अपने विचारको अन्ततक रोके रखना चाहिये। इस न्यायके अनुसार आपको इस प्रकारसे कहना उचित नहीं था कि मैं आया हूं, वरन् आपको कहना चाहिये था कि मैं सोचता हूँ कि मैं आया हूं।

मुसीबत०—मैं सोचता हूँ?

सकोच०—हां।

मुसीबत०--मुझे तो ऐसा सोचता नहीं पड़ेगा जब कि असलमें मैं यहाँ मौजूद हूं।

संकोच०- वार्ता अशुद्ध। यतः बिना वस्तुके उपस्थित हुए भी आप ऐसा विचार कर सकते हैं।

मुसीबत०---क्या? क्या यह सच नहीं कि मैं आपके पास आया हूँ।

संकोच०—इसमे सन्देह है। हमको हरएक विषयमें शङ्का करनी चाहिये।

मुसीबत०—क्या? क्या इस जगह मैं खड़ा नहीं हूँ? क्या मैं आपसे बातें नहीं कर रहा हूँ।

संकोच०—हमको जान पड़ता है कि आप उस स्थानपर उपस्थित हैं और हम विचार करते हैं कि आप हमसे वार्ता कर रहे हैं। परन्तु यह निश्चय नहीं है कि ऐसा ही हो।

मुसीबत०—क्या-क्या? आप दिल्लगी तो हमसे नहीं कर रहे हैं? मैं यहाँपर हूँ और आप वहांपर हैं। यह साफ ज़ाहिर है। फिर इसमे 'मैं विचारता हूँ' की क्या जरूरत? ईश्वरके लिये इस वक्त अपनी फिलासफी छोड़िये और ज़रा मेरी बात सुन लीजिये। मैं आपसे कहने आया हूं कि मैं शादी करना चाहता हूं।

संकोच०—हमको यह विषय ज्ञात नहीं है।

मुसीबत०—मैं तो बता रहा हूँ।

सङ्कोच०—हाँ, ऐसा हो सकता है।

मुसीबत०—जिस लड़कीसे मैं ब्याह करना चाहता हूँ, वह बड़ी ही खूबसूरत और नवजवान है।

सङ्कोच०—यह असम्भव नहीं है।

मुसीबत०—शादी करनेमे मेरी भलाई होगी या बुराई?

सङ्कोच०—अथवा यह वा वह।

मुसीबत०—(*अलग*) इनकी तुक उनसे भी निराली है। (*प्रकट*) मैं आपसे पूछता हूं कि उस लड़कीके साथ शादी करनेसे, जिसकी मैंने अभी तारीफ की है, कोई खराबी तो नहीं होगी?

सङ्कोच०—वही होगा जो होनेवाला होगा।

मुसीबत०—इसमें मेरी भलाई होगी?

सकोच०—कदाचित्।

मुसीबत०—बुराई होगी?

संकोच०—सम्भव है।

मुसीबत०—मैं आपको हाथ जोडता हूँ, ठीक-ठीक जवाब दीजिये।

संकोच०—मैं सोचता हूँ कि मैं ऐसा ही कर रहा हूँ।

मुसीबत०—मैं उस लड़कीको बहुत चाहता हूँ।

संकोच०—हो सकता है।

मुसीबत०—उसके घरवाले भी उसकी शादी मेरे साथ करनेके लिये राजी हैं।

संकोच०—असम्भव नहीं है।

मुसीबत०—मगर उसके साथ व्याह करनेसे डरता हूं कि कहीं वह मुझे बादको उल्लू न बनाये।

सङ्कोच०—सम्भव है।

मुसीबत०—आखिर आप क्या ख्याल करते हैं ?

सङ्कोच०—हमको कोई बात असम्भव नहीं जान पड़ती।

मुसीबत०—अगर ;आप मेरी जगहपर होते तो क्या करते ?

सङ्कोच०—हम नहीं जानते।

मुसीबत०—आप मुझे क्या करनेकी सलाह देते हैं ?

संकोच०—जो आपके मनमे आये।

मुसीबत०—(*घबड़ाकर*) इस बेवकूफने तो और भी नाकमें दम कर दिया।

संकोच०—मैं इस विषयसे हाथ धोता हूं।

मुसीबत०—चूल्हेमें जा।

संकोच०—ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

मुसीबत०—(अलग) धत् तेरी लिफासोफरकी ऐसी तैसी। रह, अब मैं तेरा सुर बदले देता हूँ। (ठोंकता है)

संकोच०—हाय ! हाय ! यह अनर्थ !

मुसीबत०—यह तुम्हारी बदमाशीका इनाम है। अब जाके जी खुश हुआ।

संकोच०—अयं ! यह क्या ? यह कैसी दुष्टता। हम-पर इस प्रकार आक्रमण कर हमारा मान नष्ट करना। क्यों रे मूर्ख ! हम ऐसे योग्य तत्वज्ञानीको तुझे ताडन करनेका साहस हो गया ?

मुसीबत०—जनाब अपने वार्ता करनेके ढङ्गको बद-लिये। हरएक विषयमें सन्देह करना चाहिये। आपको यह नहीं कहना चाहिये कि तुमने मारा है, बल्कि हम सोचते हैं कि तुमने मारा है।

सकोच०—अच्छा, मैं तुरन्त जाकर उन चपेटाघातों-के लिये जो कि मेरे पश्चात् भागपर धमाधम पड़े हैं नालिश करता हूँ।

मुसीबत०—मैं इस मामलेसे हाथ धोता हूँ।

संकोच—उनके चिह्न मेरे शरीरपर स्पष्ट रूपसे प्रकट हैं।

मुसीबत०—हो सकता है।

संकोच०—तुम्हीं, तुम्हींने मेरे साथ इस प्रकार व्यव-हार किया है।

मुसीबत०—असम्भव नहीं है।

संकोच०—तुम्हारे नाम अब मैं सम्मन प्रेषित कराता हूं।

मुसीबत०—मैं इस बारेमें कुछ नहीं जानता।

संकोच०—तुम्हें इसका दण्ड अवश्य मिलेगा।

मुसीबत०—ऐसा होनेवाला होगा तो होगा।

संकोच०—याद रखना! हम समझ लेंगे।

(*जाता है*)

मुसीबत०—(*अकेला*) उफ ओ! नाकमें दम कर दिया कम्बख्तोंने। इन अव्वल नम्बरके बेवकूफोंसे कोई एक लफ्ज़ भी तो नहीं पूछ सकता। इनके मिलनेके बाद आदमी उतना ही अक्लमन्द रहता है कि जितना पहले; बल्कि पागल हो जावे तो कोई ताज्जुब नहीं। मगर इस शादीके मामलेने मुझे इतना परेशान कर दिया है कि समझमें नहीं आता कि क्या करूं? 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।'

—

पहला दृश्य

दरियाका किनारा

(चार सन्यासियोंका मिलकर गाते हुए आना)

कोरस

"नमस्तेऽस्तु गंगे त्वदंगप्रसंगाद्
भुजंगास्तुरगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगारिरंगाः ससंगाः शिवागा
भुजगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति ॥ १ ॥

नमो जह्नुकन्ये न मन्ये त्वदन्यै
निसर्गेंदुचिह्नादिभिर्लोकभर्तुः ।
अतोऽहं नतोहं सतो गौरतोये
वसिष्ठादिभिर्गीयमानाभिधेये ॥ २ ॥

त्वदामज्जनात्सज्जनो दुर्जनो वा
विमानैः समानैः समानौर्हिमानः ।
समायाति तस्मिन् पुरारातिलोके
पुरद्वारसंरुद्धदिक्पाललोके ॥ ३ ॥

स्वरावास दंभोलिदंभोऽपिरंभा
परीरंभसंभावनाधीरचेतः ।
समाकांक्षते त्वत्तटे वृक्षवाटी
कुटीरे वसन्नेतुमायुर्दिनानि ॥ ४ ॥

त्रिलोकस्य भर्तुर्जटाजूटबँधा
त्स्व सीमांतभागे मनाक् पस्खलंतः ।
भवान्या रुषा प्रौढ़ सापत्नभावात्
करेणाहतास्त्वत्तरंगा जयन्ति ॥ ५ ॥

जलोन्मज्जदैरावतोद्धानकुंभस्फुरत्
प्रस्खलत्सांद्रसिंदूररागे ।
क्वचित्पद्मिनीरेणुभंगे प्रसंगे
मनः खेलतां जह्नुकन्या तरंगे ॥ ६ ॥

भवत्तीरवानीरवातोत्थधूलील
सत्स्पर्शतस्तत्क्षणंक्षीणपापः ।
जनोऽयं जगत्पावने त्वत्प्रसादात्
पदेपौरुहूतेऽपिधत्तेऽवहेलाम् ॥ ७ ॥

त्रिसंध्यानमल्लेखकोटीरननाविधाने
करत्नांशुबिंबप्रभाभिः ।
स्फुरत्पादपीठे हठेनाष्टमूर्ते
जटाजूटवासे नताः स्मः पदं ते ॥ ८ ॥
कालिदास

पहला संन्यासी—
सारं भागीरथीतोयं सारं जाप्यं च वैदिकं ।
ब्रह्मचर्यं तपः सारं माधवसेवनम् ।"

दूसरा०—हे प्रभो ! आपने यथार्थ कहा । परन्तु अब तो सन्यासी लोग गंगाजलके स्थानमें भङ्ग सङ्गका सेवन करते हैं । जप-तपके बदले गांजे और चरसकी धूनी रमाते हैं ।

तीसरा०—और ब्रह्मचारी होनेकी भली कही । ये जटा-धारी तो बड़े भारी व्यभिचारी भी हो रहे हैं ।

चौथा०—और लङ्गोटा चढ़ा, डण्ड पेल, अङ्ग-अङ्ग राख मल साड़की नाईं संसारमें घूम-घूम गृहस्थोंको ठगते फिरते हैं ।

पहला०—सत्य है मित्रो ! सत्य है । यही कारण है कि पृथ्वी पापके भारसे प्रतिदिन अधिकाधिक पीड़ित होती जाती है । भारतवर्षमें लाखों साधु-संन्यासी लोग जिनके

निर्वाहमें देशके करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष व्यय होते है उसके बदलेमें वे देशको क्या देते हैं? क्या बताते हैं? क्या सिखलाते हैं? कुछ नहीं। हम लोग फोकटमें हलुआ, पूड़ी और मोहनभोग उड़ायें और हमारे होते हुए गृहस्थोंको ज्ञानोपदेश देनेके लिये धर्म-कर्मका पथ बतलानेके लिये स्वार्थी ज्ञानहीन किरायेके टट्टू बुलाये जायं। हमपर धिक्कार है। देशमें अनगिनत पाप होते जायं। चोर, डाकू, लुटेरे, कामी, जालियोंकी संख्या दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती जाय और हम टुकुर-टुकुर देखा करें। हमपर धिक्कार है। हमे साधू और ज्ञानी होनेपर धिक्कार है। हमारा ज्ञान फिर किस दिनके लिये है?

दूसरा०—प्रभो! जिनको संन्यास लेना चाहिये वे तो संसारमें लिप्त हो रहे हैं और जिनकी संसारमे आवश्यकता है वे वैरागी और संन्यासियोंके रूप धारणकर ठग विद्याद्वारा बिना परिश्रम किये हुए अपने पेट भर रहे है और सन्त-साधुओंको बदनाम कर रहे हैं।

तीसरा०—ऐसा न होता तो बुढ़ापेमे लोग ईश्वरका स्मरणकर अपना परलोक बनाते कि अपना पुनर्विवाहकर किशोर अवस्थाकी विधवाओंकी संख्या बढ़ाकर समाजका मुंह काला करते और अपने भी मुखपर इस लोक और

उस लोकमें कालिख पोतते ?

चौथा०—भला देखो तो विधवाओंकी संख्या बढ़ानेको क्या बाल-विवाह अकेले असमर्थ था। जो ये मनचले बूढे इसकी सहायता करनेके लिये कमर कसके तय्यार हुए हैं ?

पहला०—हे मित्रगण ! आओ, चलें। अपना कर्तव्य पालन करें और देशमें धर्म और कर्मका ज्ञान फैलाकर पापको यथाशक्ति निर्मूल करें। हम गृहस्थोंको धर्म ज्ञान न सिखलायेंगे तो हमसे बढ़कर ज्ञानी उन्हें शिक्षा देने कौन आयगा ? पृथ्वी अन्नके एक दानेके बदले सहस्रों दाने देती है तो हम क्यों न देशके साथ वैसा ही व्यवहार करें जो हमको प्रतिदिन उदरभर भोजन देता है।

(*सबका प्रस्थान*)

[*मुसीबतमलका आना*]

मुसीबत०—या ईश्वर ! अब क्या करूं ? अजीब उलझनमें जान है। दिल कुछ कहता है। समझ कुछ कहती है। आखिर उसके साथ कोई-न-कोई तो शादी करेगा ही। तो मैं क्यों चूकूं ? मैं ही क्यों न कर लूँ ? क्या ही भभूका रंगरूप है। कैसी प्यारी सजधज है। कैसी ग़ज़बकी खूबसूरती है। सच पूछो तो ईश्वरने मेरे ही लिये उसे अपने हाथसे गढ़ा है। ऐसी फिर हमको कहां मिल सकती

है ? बेशक, मैं जरूर शादी करूंगा। मगर नहीं, न जाने क्यों दिल खटक गया है। रह-रहकर आपसे आप मेरा इरादा रुक रहा है। क्या कोई मुझे इस मुशकिलसे न उबारेगा ? कोई ठीक राय न बतायगा ? हे ईश्वर ! आगे होनेवाली बातोंको तू ही बता दे।

(उच्चकानदका आना)

उच्चका०—जै,जैकार शरकार। जै जैकार। कुछ ग्रह-दशा विचरवाइये।

मुसीबत०—आप कौन है ?

उच्चका०—मैं शरकार ज्योतिषी उच्चकानन्द हूँ।

मुसीबत०—अहा ! ज्योतिषी हैं आप ? बस बस, आपहीकी मुझे इस वक्त जरूरत भी थी। क्यों जनाब, आइन्दा होनेवाली बात आप बता सकते हैं ?

उच्चका०—हाँ, शरकार तीनों लीजिये। भूत, भविष्य, वर्तमान। तनिक हाथ तो देखलवाइये। अह ! अह ! अह ! शरकार आप बड़े भाग्यवान हैं।

मुसीबत०—हाँ ? अच्छा जरा इधर बैठ जाइये। अब इतमीनानसे बताइये। मगर पहले मेरी बात सुन लीजिये—

उच्चका०—चतुरदशी दिनम्। दगशूल मूरत। गर्दभ-मुखं। आह ! हा ! हा ! शरकार ढेर दिन जीयेंगे। नाती-पनाती

शवको खाय-खूयके मरेंगे।

मुसीबत०—हां हा, ठीक है। अभी मेरी उमर ही क्या है? मगर यह बताइये कि एक नौजवान और खूबसूरत लडकी जिसकी—"बरस पन्द्रह या सोलह कासिन।"

उचका०—हा हां ठीक फरमावते हैं 'शप्राप्ते शोरशे वर्शे गर्दभी चापशरायते।' शोलह बरिशमें गदही भी परी कहलावती है।

मुसीबत०—तो उसके साथ शादी करे?

उचका०—अपने बेटौनाके शरकार? जरूर करके। वडाशुन्दर होई। (*हाथ देखता है*)

मुसीबत०—नहीं जी अपनी।

उचका०—(*हाथ देखता हुआ*) शरकारका वडा नाव चलेगा।

मुसीबत—बडी नाव क्या जहाज? हमारे यहा जहाज चलेगा? यह कैसे मुमकिन है?

उच्चका०—जहाज नहीं शरकार। नाव होइहे। बड़ाई बड़ाई!—देखिये—रेखा।

मुसीबत०—ओ मेरा बडा नाम होगा। क्या इस जोरूकी बदौलत?

उचका०—ई देखो धनके रेखा होए शरकार। वडा

धन होई। शरकारके आमदनी दिनोदिन बढ़ते जाई।

मुसीबत०—क्या इस जोरूकी बदौलत? वाह! वाह! मगर बात यह है—

उचका०—अरे शरकार बड़ा नीक है। बड़ा नीक है। यह तो पहले देखबे नाहीं कीन। चटपट हाथपर शुबरण शोना रखिये। अशर्फी होए चाहे ई मुन्दरी धरिये... अच्छा, इशपर शवाशेर चांदी रखिये। नाहीं तो पांच रुपया रखिये।

मुसीबत०—रुपया तो नहीं दुअन्नी है।

उच्चका०—राम! राम! का हांशी करावते हैं। शाइत बड़ा नीक है। रुपया निकालिये चटपट......अच्छा अब अपना हाथके मुट्ठी बांध लीजिये!

मुसीबत०—बडी खुशीमे।

उचका०—अगड़म बगड़म। उल्लूफासम। अब मोरे हाथपर अपाना मुट्ठी खोल दीजिये। हश्ते चांदी शोना शब शमरपयामि।

मुसीबत०—(*अलग*) यह तो बुरा हुआ। (*प्रकट*) देखिये, लौटाल दीजियेगा। हमारा नहीं है।

उचका०—आंख बन्दकर धर्तीपर माथा नवाकर तनिक देर राम राम कीजिये। जबलों हम न कहें उठिये,

मुसीबतमल सर झुकाये बैठा है। उच्चकानन्द इनकी सब चीजें जूता, पगडी, छाता वगैरह लेकर भाग जाता है।

[पृष्ठ ५३

तबलों मूँड न उठाइयेगा। (*मुसीबतमल सर झुकाता है। उच्चकानन्द इनकी सब चीजें जूता, पगड़ी, छाता वगैरह लेकर भाग जाता है*)

मुसीबत०—गला टूटा। अब सर उठावे। बोलो भाई, हम तो उठाते हैं।

(*वैसेही कुलच्छनी और घरबिगाड़का आना*)

मुसीबत०—(*सर उठाकर*) अररररर! यह क्या देखता हूँ? (*छिप जाता है*)

गाना

घरबिगाड—*प्यारी चलो सैर करें आली निराली है।*
देखो बहार।
दरिया किनारा है, क्या प्यारा प्यारा है,
सारा नजारा है क्या गुलेज़ार॥
बेकरार, हूँ दिल्दार, अब तो यार, देदे प्यार॥

कुलच्छनी—*सच्ची कहो कसम तुमको है मेरे सरकी।*
तन औ बदनकी, जोवन फबनकी, कसम है तुमको मेरे सरकी॥

घरबिगाड़—*हूं निसार, हूं निसार तुझ पे यार, बार बार।*

घरबिगाड़+कुलच्छनी—*फिर आओ गले लग जाय,*
उमंग बुझायँ, मगन, मगन, मगन, सनमके संग॥

मुसीबत०—(*अलग*) अररररर! यहाँ तो इन्दरसभा

होने लगी।

घरबिगाड़—प्यारी मेरी मुहब्बतका ज़रा ध्यान रखना, ऐसा न हो कि शादीके बाद तुम मुझे बिल्कुल ही भूल जाओ।

मुसीबत०—(अलग) यह लीजिये। यह कम्बख्त शादीके बाद भी इन्दरसभा जारी रखनेवाला है।

कुलच्छनी—नहीं मिस्टर घरबिगाड, तुम मत घबडाओ। कहीं हम ऐसी नौजवान और चुलबुली लड़कियां बूढ़े मर्दको थोडे ही प्यार कर सकती हैं?

मुसीबत०—(अलग) तो फिर बूढ़े बेचारे काहेको शादी करते हैं, क्या जूते खानेके लिये? देखो तो इसकी बातें।

घरबिगाड—तब फिर तुम इस बुड्ढे खूसटके साथ शादी करनेके लिये क्यों राजी हुई?

कुलच्छनी—इसलिये कि इससे बढकर अक्लका अंधा और गांठका पूरा दूसरा नहीं मिला।

मुसीबत—(अलग) अब और बना। एक न शुद दो शुद। अब जो कम्बख्त तू फिर उल्टी-सुल्टी बकेगी तो शादी गई चूल्हे भाड़में। ऐसा तानके ढेला मारके चल दूंगा कि तू भी याद करेगी।

घरबिगाड—तो यों कहो कि यह शादी क्या आडमें

शिकार खेलनेके लिये टट्टी खड़ी की जाती है। मगर वहाँ इतनी आजादी तुम्हें कहाँ मिल सकेगी कि तुमसे मैं बराबर मिलता रहूँ ?

कुलच्छनी—अजी यहाँ आजादी कहाँ है। चोरी छिपे तो मिलना पड़ता है। वहाँ बडी आजादी रहेगी। वहाँ तो तुम मुझसे बेखटके और खुले खजाने मिल सकते हो। वह चूं नहीं करने पायेगा। इसका जिम्मा मैं लेती हूं। क्योंकि उल्लूको उल्लू बनाते कितनी देर लगती है ?

मुसीबत०—(*अलग*) अफसोस यही है कि अकेला हूँ। नहीं तो तुम दोनोंको बिना मारे छोड़ता नहीं और जो ज्यादा गुस्सा आ गया तो दरियामें ही कूद पड़ूंगा।

घरबिगाड़—तो भी आख़िर इस तरहसे कबतक चलेगा? कभी-न-कभी तो वह ताड़ जायगा।

कुलच्छनी—जब जिन्दा रहने पायेगा तब तो। शादीके बाद छही महीनेके भीतर उसको मरना पडेगा।

मुसीबत०—(*अलग*) ओ बापरे !

घरबिगाड—यह क्योंकर ? क्या कोई मार डालेगा उसको ?

कुलच्छनी—नहीं जी मारे कोफतके वह खुदही मर जायगा।

घरबिगाड़—हा, अगर हयादार हो।

मुसीबत०—(*अलग*) अरे दादारे !

कुलच्छनी—प्यारे ! ईश्वरसे तुम रोज दोआ करना कि मुझे विधवा होनेकी खुशकिस्मती जल्दी नसीब हो। फिर तो चैन ही चैन है। लाखों रुपये हाथ आयंगे और बेखटके मजे उड़ायंगे।

घरबिगाड़—जरूर दोआ करूँगा। मेरी दोआ कभी खाली नहीं जाती।

(*बातें करते हुए दोनों जाते हैं*)

मुसीबत०—नहीं, ईश्वर नहीं। तुम्हें कसम है। इन लोगोंकी बात मत सुनना। मैं भी अब तुम्हें बहुत याद करूँगा। बड़ी खैरियत हुई कि इन कम्बख्तोंने मुझको देखा नहीं। नहीं तो यहीं गला घोटकर मेरा फैसला कर देते। बापरे ! बाप ! बहुत बचा—शादीकी ऐसी-तैसी। न बाबा। जान है तो जहान है।

दूसरा दृश्य

झटपटरायका मकान

[*झटपटराय अकेला*]

झटपट०—ईश्वर न करे कि दुनियामें किसीके औलाद हो और औलाद हो भी तो लड़की न हो और अगर लड़की ही हो तो मेरी भतीजीकी तरह न हो। पैदा होते ही खान्दानका नाम डुबोया। नार कटते ही मा-बापकी भी नाक कटवाई। उसपर मजा यह कि मेरे भाई साहब—ईश्वर उनकी आत्माको वैकुण्ठमें चैन दे। उनकी अक्लपर पाला ही पड़ा हुआ था कि उन्होंने हिन्दुस्तानी पौधेको विदेशी ढङ्गपर लगाया। फिर विदेशके ही जनतरीसे उसके फूलने और फलनेका वक्त निकालकर इतमीनानसे बेफिकर बैठ रहे और तुर्रा यह कि न पौधेको घेरा न घारा। जानवरोंको चरनेके लिये बिल्कुल आजाद छोड़ दिया। इधर हिन्दुस्तानी आबो हवाने बीचमें ही गुल खिलाना शुरू कर दिया और जनतरीके वक्ततक पौधेकी नस-नस ढीली कर दी। यहां वक्तके इन्तजारमें ही रहे और वहां मौसिम बहार खतम भी हो चला। फल-फूल

गिर-गिरकर सड़ने और गलने लगे। फिर तो ऐसी दुर्गन्ध मची है कि क्या कहूं ? ऐसी बदनामी और जग हंसाई हुई है कि हमी लोगोंका दिल जानता है। सर पटकके मर गये। कोशिशे करते-करते नाकमे दम हो गया। मगर कुलच्छनी के साथ शादी करनेके लिये कोई नहीं राजी हुआ। हजार-हजार शुक्र है ईश्वरका जिसने मेरे सरसे कम्बख्ती और परेशानीका बोझा उठाकर मुन्शी मुसीबतमलके सरपर यह आफत ढकेली और मेरे गलेसे बदनामीकी फंसरी छुड़ाकर उसके गलेमें डाली। जहांतक जल्दी हो सके, जैसे बने वैसे मैं भी इस बलाको मुसीबतमलके गले मढ़ दू और चटपट कुलच्छनीकी शादी उसके साथ कर दूं, फिर बाबा वह जाने और वह। वह लीजिये, दूल्हे साहब भी आ रहे हैं।

(मुसीबतमलका आना)

झटपट०—आइये दूल्हे साहब ! बिना बारातके दूल्हे-का इस तरह आना निहायत ही अच्छा है। कम खर्च और बालानशीन। मैं भी इसको पसन्द करता हूँ।

मुसीबत०—माफ कीजिये, साहब।

झटपट०—आपकी तेजीको समझता हूँ। घबड़ाइये नहीं, मैं भी जल्दी कर रहा हूँ।

मुसीबत०—अजी बाबू झटपटराय, मैं दूसरी बातके लिये आया हूँ।

झटपट०—हाँ हाँ, बिना आपके कहे हुए मैंने उसका भी इन्तजाम कर लिया है। खातिर जमा रखिये किसी बातमें कमी न होगी।

मुसीबत०—अजी यह बात नहीं है।

झटपट०—आप तो झूठ-मूठ तकल्लुफ करते हैं। यहाँ सब सामान ठीक है। आपकी ही देर थी। कहाँ गये बाजेवाले? कोई कह दो बाजा बजाये।

मुसीबत०—अरे! बाबू झटपटराय, मैं इसके लिये नहीं आया हूँ।

झटपट०—मैं समझ गया। आप दरवाजा चारके लिये अडे हुए हैं। लीजिये, दो रुपये लीजिये। अब तो चलिये भीतर चटपट गठबन्धन हो जाय।

मुसीबत०—या ईश्वर! हर जगह नाकमे दम! मैं किसी और मतलबके लिये आया हूँ।

झटपट०—भीतर तो चलिये। जहाँतक मुझ ग़रीबसे हो सकेगा, वह भी पूरा करूँगा।

मुसीबत०—लेकिन मुझे आपसे कुछ कहना है।

झटपट०—फजूल देर कर रहे है। आइये, आइये।

साथ चले आइये।

मुसीबत०—मैं नहीं आऊंगा। पहले मेरी बात सुन लीजिये।

झटपट०—शादीके बाद इतमिनानसे सुन लूँगा। अभी उसकी क्या जल्दी है?

मुसीबत०—नहीं मैं इसी वक्त कहूँगा।

झटपट०—अच्छा, कहिये।

मुसीबत०—बाबू झटपटराय, मैं मानता हूँ कि मैंने आपकी भतीजीसे शादी करनेका वादा किया और आप भी उसकी शादी मेरे साथ कर देनेके लिये तैयार हो गये। मगर अब मै समझता हूँ कि मेरी उमर बहुत ज्यादा है और आपकी भतीजीके जोड़के लायक मैं नहीं हूं।

झटपट०—आप गल्तीपर हैं। मेरी भतीजी इस शादी-से खुश है। मुझे यकीन है कि आप दोनोंकी जिन्दगी खुशी-खुशी कटेगी।

मुसीबत०—नहीं साहब! मैं जरा झक्की आदमी हूँ। इसलिये मेरी बदमिजाजीकी वजहसे आपकी भतीजीको बड़ी तकलीफ होगी।

झटपट०—खातिर जमा रखिये। वह बड़ी सीधी है। उससे आप कभी गुस्सा नहीं हो सकते।

मुसीबत०—एक बात और भी तो है कि मैं हमेशा बीमार ही रहता हूँ और वैद्य लोगोंने बताया है कि मुझमे शारीरिक रोग बहुत है, जिससे वह मुझसे नफरत करेगी।

झटपट०—तब तो वह आपकी बहुत अच्छी तरहसे खिदमत करेगी। क्योंकि वह दाई (*Nurse*) का काम भी जानती है।

मुसीबत०—साहब, मुख्तसर यह है कि मैं आपको सलाह देता हूँ कि उसकी शादी मेरे साथ मत कीजिये।

झटपट०—अजी जबान देकर मुकरनेवाले कोई और होंगे। जान जाय तो जाय मगर मैं अपना वादा नहीं तोड सकता।

मुसीबत०—इसके लिये आप घबड़ाइये नहीं। आप बेकसूर रहेंगे। मैं ही—

झटपट०—नहीं साहब, आप मेरे बापके दोस्त हैं। आपके रहते किसी दूसरे आदमीके साथ थोड़े ही शादी कर सकता हूँ?

मुसीबत०—(*अलग*) आग लगे इस दोस्तीपर।

झटपट०—अगर मुझे कोई कुलच्छनीसे शादी करनेके लिये राजा भी मिल जाय तो भी मैं आपका ही ख्याल करूँगा, क्योंकि आप बुजुर्ग हैं। आपकी मैं बड़ी इज्जत करता हूं।

मुसीबत०—अजी जनाब! मैं इसके लिये शुक्रिया अदा करता हूं। लेकिन मैं साफ-साफ कहता हूँ कि मैं शादी नहीं करूँगा।

झटपट०—कौन? आप?

मुसीबत०—हाँ, मैं।

झटपट०—इसकी वजह?

मुसीबत०—यही कि मैं शादी करनेके काबिल नहीं हूँ।

झटपट०—शादी करना या न करना आपका अख्तियार है। मैं किसीपर जबरदस्ती नही करता। आपने शादी करनेके लिये पहले वादा किया। जब इसके लिये सब इन्तजाम कर चुका, तब आप कहते हैं कि नहीं करूँगा। अच्छा ठहरिये। मैं इस मामलेमें सोचकर अभी आपके पास जवाब भेजता हूँ।

(*जाता है*)

मुसीबत०—(*अकेला*) जान बची लाखों पाये। मैं तो समझता था कि बड़ा झमट पड़ेगा। मगर आदमी समझदार है। कैसी सहूलियतसे छुट्टी मिल गई। बड़ी अक्लमन्दी की कि शादीसे भाग निकला। नहीं तो आगे ईश्वर ही जाने कबतक सरपर हाथ धरके रोता। वह भी जब जान बचती तब तो। यह लो, बाबू झटपटरायका लड़का

बिगड़ेदिल चला आ रहा है। देखूं, मेरे लिये जवाब क्या लाता है।

(*बिगडेदिलका आना*)

बिगडे०—(*बहुत झुक-झुकके सलाम करता और बड़ी नर्मीसे बातें करता है*) अय—

मुसीबत०—सलाम भाई सलाम।

बिगड़े०—मेरे लालाजीने मुझसे कहा है कि आप आये हैं।

मुसीबत०—हॉ, भाई इसके लिये मुझे खुद अफसोस है लेकिन—

बिगड़े०—आह! जाने दीजिये कोई हर्ज नहीं।

मुसीबत०—मैं आपसे सच कहता हूँ कि मजबूरी थी, मुझे ऐसा ही करना पड़ा।

बिगड़े०—हुजूर इन बातोंको छोड़िये भी (*बड़ी आजिज़ी और तकल्लुफसे दो पिस्तौल निकालकर सामने लाता है*) मेहरबानी करके इन दोमेंसे एक आप ले लीजिये।

मुसीबत०—मैं एक पिस्तौल ले लूं?

बिगड़े०—जी हां, बड़ी मेहरबानी होगी।

मुसीबत०—काहेके लिये?

बिगड़े०—हुजूर, आपने मेरी चचेरी बहिनसे शादी

करनेका वादा किया और बादको शादी करनेसे मुकर गये। इसलिये मैं आपकी ज़रा खातिरदारी करने आया हूँ। उम्मीद है, आप इसको बुरा न मानेंगे।

मुसीबत०--अयं ! यह क्या ?

बिगड़े०—हमलोग और आदमियोंकी तरह इस मामलेमें ज्यादा शोरगुल मचाना नहीं चाहते; बल्कि चुपचाप नर्मी और भलमनसाहतसे इस मामलेको तय करना चाहते हैं। इसलिये हजूरसे मैं यह कहनेके लिये आया हूँ कि अगर हुकुम हो तो हम आप एक दूसरेकी खोपड़ीमें गोली मार दें।

मुसीबत०—(*अलग*) अरररररर ! यह तो बड़ी खूनी खातिरदारी है।

बिगड़े०—लीजिये, हुजूर पसन्द कीजिये।

मुसीबत०—अजी जनाब भाई साहब, ग़रीब परवर फैजगञ्जूर दाम अकबालहू। मेरे पास कोई फालतू खोपडी नहीं है जिसमें गोली चलाई जाय। निशानाबाजी सीखनी है तो चाँदमारी जाइये। (*अलग*) कम्बख्त कैसी भींगी बिल्लीकी तरह ज़हर भरी बातें उगल रहा है।

बिगड़े०—नहीं हुजूर, आपके हुकुमसे मुझे ऐसाही करना होगा।

मुसीबत०—मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ। अपनी खातिरदारी अपने घर रखिये।

बिगडे०—जनाब जल्दी कीजिये। मुझे और भी तो काम करना है।

मुसीबत०—मैं यह सब वाहियात बातें नहीं पसन्द करता।

बिगड़े०—तो क्या आप नहीं लड़ियेगा ?

मुसीबत०—नहीं, कभी नहीं।

बिगडे०—सचमुच ?

बिगडे०—(*मुसीबतमलको अपनी छड़ीसे खूब ठोकनेके बाद*) देखिये, आपको बुरा माननेकी कोई वजह नहीं है। मैं सब बातें शरीफोंकी तरह कर रहा हूँ। आपने अपना वादा तोड़ा। मैं आपसे लडने आया। आप लड़नेमे इन्कार करते हें। इसलिये आपको मारता-फिरता हूँ। है न सब क़ायदेके मोताबिक ? आप शरीफ आदमी है। इसलिये मेरे बरतावको आप ज़रूर पसन्द करते होंगे।

मुसीबत०—(*अलग*) वेहूदा, बदमाश, गदहा, पाजी, सूअर कहींका।

बिगड़े०—(*पिस्तौल सामने लाकर*) आइये हुजूर, भले-मानसोंकी तरह काम कीजिये। काहेको मुझे आप अपने कान पकड़वानेको मजबूर करते हैं।

मुसीबत०—क्या फिर ?

बिगड़े०—मैं किसीको मजबूर नहीं करता। लेकिन या तो वह शादी आपको करनी पड़ेगी या आपको गोली चलानी होगी।

मुसीबत०—मैं आपसे सच कहती हूँ कि न मैं यह करूंगा और न मैं वह करूंगा।

बिगड़े०—यही बात ?

मुसीबत०—यही बात।

बिगड़े०—तो फिर हुकुम है न ?

(छड़ीसे ठोंकता है)

मुसीबत०—अरे! हाय! हाय!

बिगड़े०—हुजूर मैं क्या करूं ? आपके साथ इस तरह-का बरताव करते मुझे खुद बुरा मालूम होता है। लेकिन जबतक हुजूर शादी करने या लड़नेके लिये तैयार न हो जायेंगे, तबतक मैं हुजूरको ठोंकता ही रहूँगा।

(छड़ी उठाता है)

मुसीबत०—अच्छा बाबा, मैं शादी करूंगा! शादी करूंगा।

बिगड़े०—बड़ी खुशीकी बात है कि हुजूरका दिमाग दुरुस्त हो गया और सब बातें बन गयीं। जितनी

हुजूरकी मैं इज्जत करता हूँ, उतनी किसीकी भी नहीं करता। फिर हुजूर समझ सकते हैं कि हुजूरके मारनेमें मुझे कितना दिली सदमा हुआ होगा। खैर, यह सब झगड़ा-बखेड़ा बडी सहूलियतसे तय हो गया। अच्छा, अब चलिये, सीधे इस तरफ (*डण्डा उठाता है और उसे धमकाता हुआ भीतर ले जाता है*)

तीसरा दृश्य

झटपटरायके मकानका दूसरा हिस्सा।

(*झटपटराय कुलच्छनी वग़ैरह*)

(*बिगडेदिल और मुसीबतका आना*)

बिगड़े०—लीजिये, दूल्हे साहब आ गये और अब शादी करनेके लिये अच्छी तरहसे तैयार हैं।

झटपट०—तो फिर क्या कहना है। वाह! वाह! आइये, आइये और अपने हाथमे लीजिये इसका हाथ। आप दोनों फले-फूलें, हमेशा आबाद रहे (*अलग*) या चूल्हे भाड़मे जायें। शुक्र है जान छूटी और मेरे सरसे बला टली।

मुसीबत०—लो अब नाकमे दम पूरा हो गया।

(*गानेवाले लड़कोंका झुण्ड लिये हुए सलाहबख़्शका आना*)

सलाह०—मुबारक हो! शादी मुबारक हो! देखिये दूल्हा साहिब, मैं अपने वादेका कितना सच्चा हूँ। कैसे मौकेसे आया हूं, मुबारकबादी देने, न कहियेगा? और बडे सामानसे आया हूँ। अरे लड़कों! इस शादीकी खुशीमे ज़रा वही मुबारकबादी तो गाना। वही! वही!

तृतीय अङ्क

(लडकोंका मिलकर गाना)

हुस्न वो खूबी की है भडार मुबारकबाशद ।
अब तो घर बैठे हो व्यापार मुबारकबाशद ॥
बीबी सोलहकी तो दूल्हा मिया सोलह पंचे ।
ऐसी नौचीका यह मुरदार मुबारकबाशद ॥
इस तरफ जुल्फ़ सियहफाम उधर बाल सफेद ।
सुबहदम रातके आसार मुबारकबाशद ॥
यांतो है जोशे जवानी वहा पीरीका खुमार ।
बाबा पोतीको करे प्यार मुबारकबाशद ॥
गुलशने हुस्नमें दुलहिनकी जवानीके समर ।
इन दिनों खूब है तय्यार मुबारकबाशद ।
दस्त गुस्ताख बढाया तो यह दुलहिन बोली ।
लाज लीन्हिस मोरी दहिजार मुबारकबाशद ॥
लिये चलते हैं मुहल्लेमें नयी चोज जनाब ।
गर्म हा यारोंका बाजार मुबारकबाशद ॥
माल हो जर खूब उडे और हो मिहमादारी ।
रोज़ फैशन पे हो तकरार मुबारकबाशद ॥
आपकी शादी मगर लोगोंके घर ईद हुई ।
सबको माशूक तरहदार मुबारकबाशद ॥
गुफतगू आपसे भी होगी जो फुरसत पाई ।

दोस्तोंकी रहे भरमार मुबारकबाशद ॥
दिनमें जो चाहे करें आप मगर 'शब' के जनाब।
दोस्त और यार हों मुख्तार मुबारकबाशद ॥
चैनसे कटती थी जञ्जालमें बेकार फँसे।
रात वो दिनें झोंकिये अब भार मुबारकबाशद ॥
'शाद' क्या खूब कहा तुमने यह मिसरा वल्लाह।
रात वो दिन जोरूकी फिटकार मुबारकबाशद ॥

(यह मुबारकबादी हमारे मित्र बाबू दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव "शाद" बी० ए० एल० एल० बी० ने हमारे अनुरोधपर कही है। अतएव उनको हमारा हार्दिक धन्यवाद है।)

—जी० पी० श्री वास्तव

[ड्रापसीनका गिरना और तमाशेका खतम होना]

॥ समाप्त ॥

जवानी बनाम बुढ़ापा

या

मियांकी जूती मियांके सर

जवानी बनाम बुढ़ापा

—या—

मियांकी जूती मियांके सर

Moliere { (5) *George Dandin. Ou Le Mari Confondu*
(6) *La Jalousie Du Barbouille* }

ऊपर लिखे हुए मोलियरके दोनों नाटकोंको मिलाकर मैंने इस नाटकको तैयार किया है। क्योंकि दोनोंका विषय एक ही था। पहले मोलियरने इस विषयका ढांचा *Lajalousie Du Barbouille* नामक प्रहसनमे खडा किया था। बादको उन्होंने इसके फिलासफर—*Doctor* के चरित्रको जरा दुरुस्त करके "नाकमे दम" मे मौलाना खप्तुलहवासका चरित्र खींचा और बकीया मसालेसे *George Dandin* नामक नाटक तैयार किया। मैंने इस नाटकमे प्रहसनवाले *Doctor* को भकभकानन्दके रूपमे लाकर प्रहसन और नाटक दोनोंको मिला दिया है। गो खप्तुलहवास और भकभकानन्द अपनी पूर्व अवस्थामे एक ही कहे जा सकते हैं। मगर मैंने एकको मौलाना और दूसरेको पण्डित बनाकर और उनसे भिन्न बोली बुलवा

कर इन दोनोंके चरित्रोंमें कुछ भेद कर दिया है। जिससे एक नये मज़ाक़की यहां गुञ्जाइश हो गई है। यही एक ऐसा नाटक है, जिसमें मोलियरने एक व्याही औरतको अपने कर्त्तव्योंको भूलती हुई और कुमार्गपर फिसलती हुई दिखलाया है। इसलिये इस नाटकको हिन्दुस्तानी बनाने-में हिन्दुस्तानी समाज और आदर्शने मेरी राहमें बड़ी रुकावटें डालीं। तब मुझे अन्तमे बुढापेकी शादीकी तरफ झुकना पड़ा। इस तरहसे जवानी और बुढापेमे ऐचातानी दिखाकर मनचले बूढोंके शौकको दबानेके लिये सामान जुटाकर इसको भी थोड़ा बहुत शिक्षाप्रद बनानेकी कोशिश की है। पात्रोंके नाम भी इस तरहके रखे गये हैं, जिससे किसीको बुरा न मालूम हो। इन बातोंपर भी मुमकिन है, हिन्दीवाले इस नाटकपर कुछ नाक-भौं सिकोड़ें। मगर अगर वे आंख खोलकर देखे, तो उन्हे मालूम होगा कि आजकल हिन्दीमें इस तरहके नाटककी भी सख्त जरूरत है।

मोलियरने अपने इस नाटकमे उन भोलेभाले देहाती *Bourgeois*-अक्लमन्दोंका खाका उड़ाया था, जो उन दिनों शहराती शरीफ़जादी और फैशनेबल औरतोंसे शादी करके शरीफ़ और जेन्टिलमैन बननेकी कोशिश करते थे और यों अपने रुपये पैसे गवांकर अन्तमें खासे उल्लू बन

जाते थे। यह पहले-पहल *Versailles* मे १८ जुलाई १६६८ को खेला गया था। मोलियरने मु० बरबाद और मोलियरकी स्त्रीने दिलारामका पार्ट किया था। मैंने यह हिन्दी नाटक १९१४ मे लिखा था, जो मालवेके "हिन्दी-सर्वस्व" में क्रमशः कुछ प्रकाशित हुआ था। उसके बाद १६१८ में मैंने इसको दुबारा लिखकर नाटक और प्रहसन दोनोंको एक साथ मिलाया। यह नाटक हिन्दुस्तानी सांचे-में कुछ ऐसा उतरा है कि मालूम होता है कि यह "नाकमें दम" का दूसरा खण्ड है, जिसमे उसका परिणाम दिखलाया गया है। इसलिये मुनासिब यही मालूम हुआ कि इसको 'नाकमे दम' के अन्तमे प्रकाशित कराऊँ।

पात्र

१—मु० बरबाद—दिलारामका बूढा शौहर।

२—घरबिगाड़-दिलारामका चाहनेवाला।

३—भण्डाफोड—घरबिगाडका नौकर।

४—डीवट— मु० बरबादका नौकर।

५—मिस्टर धरपकड—दिलारामका बाप।

पात्री

१—मिसेज धरपकड—दिलारामकी मा।

२—दिलाराम—मु० बरबादकी औरत।

३—उलझन—दिलारामकी नौकरानी।

जवानी बनाम बुढ़ापा

—या—

मियांकी जूती मियांके सर

पहला दृश्य

मुन्शी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(*मुन्शी बरबादका बाहरसे आना*)

मुन्शी बर०—(*अकेला*) लो और बुढ़ापेमें शादी करो! अरे ओ! भोले-भाले बुजुरगो! अरे वो बाहरी चटक-मटक-पर रीझनेवालो मुझ जैसे बेवकूफो! आओ और मुझ कम्बख्तकी हालतपर चार आँसू बहाकर कसम खाओ कि जीते जी कभी भूलकर भी जमानेकी हवा खाई हुई फैशने-बल औरतोंके फेरमें नहीं पडूंगा और खासकर बुढ़ापेमें। भोलीसे भोली लड़की क्यों न हो, मगर बुढ़ापा वह चीज है

कि जहाँ इसके साथमें चली कि फिर तो वह चल निकली।'
पचास बरसकी उम्रमें शादी करना और एक नयी नवेलीके संग? और फिर यह उम्मीद करना कि पातिव्रत धर्मका वह नमूना होगी। खाली उम्मीद ही नहीं करना, बल्कि उसे ऐसा बनानेके लिये हजारों कोशिशे करना, अफसोस सारी बेकार है। ऐ मनचले बूढो! अपनी तबियतको सम्भालो। इन खूबसूरत नागिनोंसे बचो। वह तुम्हारे वशकी नहीं है। तुम्हारी इतनी अक्ल नहीं है कि तुम इनकी चालोंको, इनके झांसोंको समझ सको। अगर मौत न आती हो तो शादी करो। अन्धा होनेका पक्का इरादा हो, तो शादी करो। छाती पर कोदो दलवानेकी ख्वाहिश हो तो शादी करो। इज्जत खाकमें मिलानी हो तो शादी करो। ये कम्बख्त फैशनकी पुतलिया तुम्हारे ही रुपयोंसे अपना रंग जमाती हैं और तुम्हींको उलटा नाच नचाती है। मैंने अपने दोनों पैरोंमें कुल्हाडी मारी। मुझसे बडी बेवकूफी हुई। बडी गल्ती हुई। बहुत खोकर मेरी आंखे खुलीं। मगर मेरे पुराने भाइयो, मेरी क़िस्मतको जरा गौरसे देखकर तुम बहुत कुछ सीख सकते हो। मैं डूबा तो डूबा, मगर तुम तो धोखेसे बचो। मकानके भीतर पैर रखते ही कलेजा जल-भुनके खाक हो जाता है। न इस करवट चैन और न उस करवट चैन। न

हाथोंमें इतनी ताकत है कि इसका बदला ले सकूँ और न खोपड़ी इतनी मज़बूत है कि रोज-रोज कुछ सहता जाऊँ। आखे खोलूँ तो बेवकूफ, नजर बचाऊँ तो बेवकूफ। अक्लका अन्धा तो था ही, अब ईश्वरसे दुआ है कि जल्दी आँखोंका भी अन्धा कर दे। हाय! किस्मत!

(*भण्डाफोड़ मुन्शी बरबादके मकानसे निकलता है*)

मुन्शी बर०—(*भंडाफोड़को अपने घरसे निकलते हुए देखकर*) यह कम्बख्त मेरे मकानमें क्यों गया था ?

भण्डा—(*मुन्शी बरबादको देखकर*) यह बुड्ढा मुझे बुरी तरह घूर रहा है।

मुन्शी बर०—(अ०) इसको नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ?

भण्डा० –(*अलग*) यह कुछ शक करने लगा।

मुन्शी वर०—(*अलग*) यह मुझसे कुछ कहना चाहता है। मगर इसकी हिम्मत नहीं पडती।

भण्डा०—(*अलग*) ऐसा न हो कि कहीं इसने मुझे इस मकानसे निकलते हुए देख लिया हो।

मुन्शी बर०—अरे! ए भाई ए! जरा इधर आना।

भण्डा०—मुन्शीजी, सलाम।

मुन्शी वर०—सलाम! तुम्हारा मकान तो इस मोहल्लेमे है नहीं ?

भण्डा०—नहीं मुन्शीजी, मैं तो कलही यहा आया हूँ।

मुंशी बर०—मगर यह तो बताओ कि तुम उस मकानमे क्या करने गये थे ?

भण्डा०—अरे। चु-चु-चु-चुप। ऐसा कहियेगा भी नहीं।

मुन्शी बर०—क्यों ?

भण्डा०—बस।

मुन्शी बर०—इसके पूछनेमें कोई खराबी है ?

भण्डा०—ख़बरदार, यह किसीको नहीं मालूम होना चाहिये कि मैं उस मकानमें गया था।

मुन्शी बर०—आखिर क्यों ?

भण्डा०—वैसे ही।

मुन्शी बर०—तौभी कुछ भी तो कहो।

भण्डा०—जरा आहिस्तेसे। कोई सुन न ले।

मुन्शी बर०—नहीं नहीं, यहां कोई नहीं है।

भण्डा०—बात यह है कि उस घरकी घरवालीसे और एक बाबूसाहबसे आंखे लड़ गयी हैं। उन्होंने मुझको यहा भेजा था। मगर देखिये इसको कोई जानने न पावे। इसलिये मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि भूलकर भी किसीसे न कहियेगा कि मैंने इसको उस मकानमे जाते हुए देखा था।

मुशी बर०—बहुत अच्छा।

भण्डा०—छिपे चोरीका मामला है। इसलिये।

मुन्शी बर०—हां हा, समझ गया।

भण्डा०—हां, तो फिर आप जानते ही हैं। उसका मर्द सुनते हैं कि बुड्ढा है और बड़ा शक्की है। वह कम्बख्त दिर-रात अपनी जोरूकी रखवाली किया करता है। इसलिये यह बात उसके कानोंमें न पड़ने पावे। नहीं तो आफत मचा देगा।

मुन्शी बर०—अच्छा!

भण्डा०—हां भाई, उसको मालूम न होने पावे। नहीं तो सारा मजा किरकिरा हो जावेगा।

मुन्शी बर०—ठीक है।

भण्डा०—वह कम्बख्त जितनी चौकसी करता है, उतना ही उल्लू बनता है। कहां वह बुड्ढा खूसट और कहा वह सोलह बरसकी नयी नवेली। वह चाल चलती है कि उसका बाप भी सर पटकके मर जाये तो भी कुछ पता न पाये और मुन्शीजी! सच्ची बात तो यह है कि बुढापेमें शादी करनेका यही नतीजा है।

मुन्शी बर०—हां, बुढापेमें शादी करनेका यही नतीजा है।

भण्डा०—और ऐसे आदमीको बेवकूफ बनानेमें कुछ भी नुकसान नहीं है।

मुन्शी बर०--हाँ हाँ, बल्कि ऐन सवाब है। अच्छा तो बाबूसाहबका नाम क्या है ?

भण्डा०—भला-सा नाम है। हाँ याद आया 'बाबू घरबिगाड़'।

मुन्शी बर०—अरे ! वही नये हज़रत जो इस मोहल्लेमें आये हैं ?

भण्डा०—हाँ हाँ ! वही, सामने जिनका मकान है।

मुन्शी बर०—(अलग) अब समझा। इसीलिये उस हरामजादेने मेरे मकानके सामने मकान लिया है। मुझे शक तो पहले ही हुआ था। मगर करता क्या ? बुढ़ापेमे शादीका यही नतीजा है।

भण्डा०—आदमी बडा भला है। ज़रासी बातके लिये उसने मुझे तीन रुपये दिये और दो उस बुड्ढेकी बीबीसे मिले हैं। पाचों अंगुलियां घीमें है। पांचो घीमे।

मुन्शी बर०--(अलग) हाय ! मेरा सर तो कढ़ाईमें है (प्रकट) हा भाई ! आजकल दलालों हीकी तो चांदी है। अच्छा, अब यह तो बताओ कि उस औरतसे तुमसे मुलाकात कैसे हुई ?

भंडा०—यह न पूछिये। दरवाजे ही पर उसकी नौकरानी मिली। अय! है! ग़ज़बकी है वह तो। क्या प्यारा-सा नाम है उसका "उलझन"। अरे मेरी प्यारी उलझन! वह देखते ही ताड़ गई और फौरन ही मुझे अन्दर ले गई।

मुन्शी वर०—(*अलग*) अरे! हरामजादी उलझन!

भण्डा०—अरी मेरी प्यारी उलझन! मुन्शीजी अपनी उलझनकी तारीफ क्या करूँ? उसने तो मेरा दिल ही उलझा लिया, अब भला बिना उससे शादी किये चैन कहाँ? अब तो उससे जरूर शादी करूँगा।

मुन्शी वर०—म-म-मगर बुढापेमें?

भण्डा०—अजी रहने दीजिये। सभी औरतें एक-सी थोड़ी ही होती हैं?

मुन्शी वर०—(*अलग*) यह लीजिये। पहले सभी यही कहते हैं।

भण्डा०—गो उम्र मेरी ढल चली है और जरा बुड्ढा भी हो गया हूँ। मगर इससे क्या? दिल तो बुड्ढा नहीं है और शादी होते ही मारे खुशीके फूलके फिर जवान होजाऊँगा।

मुन्शी वर०—(*अलग*) पहले सभी यही समझते हैं।

भण्डा०—औरतको खुश रखनेकी सहल तरकीब। गहने दे-देकर खुश रखूँगा। और क्या?

मुन्शी बर०—पहले सभी यही तरकीबे सोचते हैं। (प्रकट) मगर यह तो बताओ, उस औरतने तुमको क्या जवाब दिया ?

भण्डा०—उसने कहा कि··· ··· ···ज़रा ठहर जाइये। मैं ठीक तरहसे याद कर लूँ। हाँ! कहा कि "बाबू साहबसे मेरा सलाम कहना और कहना कि इस कम्बख्त बुड्ढे-से सख्त परेशान हूँ। यह मेरी राहमे काटा है। मगर इसको उल्लू बनाकर आपसे मिलनेकी कोई-न-कोई तरकीब जरूर निकालूंगी।"

मुन्शी बर०–(*अलग*) वाहरी नेकचलन बीबी! वाह!

भण्डा०—अरे मुन्शीजी! वह मजा आयेगा कि क्या कहूँ? उस उल्लूको कुछ खबर होगी ही नहीं कि यहा क्या गुल खिल रहे हैं। अच्छा! सलाम। अब देर होती है। मगर खबरदार! कहियेगा नहीं किसीसे।

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा!

भण्डा०—नहीं तो मेरी उलझन मुझसे खफा हो जायगी।

[*जाता है*]

मुन्शी बर०—(*अकेला*) देखा मुन्शी बरबाद? देखा? तुम्हारी औरत तुम्हारी कैसी कदर करती है। क्या करोगे?

चुप होके बैठ रहो। बुढ़ापेमें शादी करनेका यही नतीजा है। या ईश्वर! ऐसी औरतोंसे बचा, जो अपने मर्दकी मौतके लिये हर वक्त दोआ करे। जो उसकी जान लेनेकी सैकड़ों फिकिर करे। हाय! अफसोस! जबान हिलाता हूँ, तो अपनी ही नाक कटती है और सख्ती करता हूँ, तो अपनी ही जान जाती है। क्योंकि ऐसी औरतोंपर सख्ती करना गोया अपनी मौत बुलानेमें जल्दी करना है। क्या ही अच्छा होता कि कोई मुझको उस वक्त खूब मारता। मैंने क्यों ऐसी बेवकूफी की? क्यों इस उम्रमें शादी की? कुएँमें कूद पड़ना अच्छा, फांसी लगा कर मर जाना अच्छा, मगर बुढ़ापेमें भूल कर भी शादी करना नहीं अच्छा। यह हरामजादी और कलकी बच्ची मुझको इस तरहसे उल्लू बनाये? मुझसे कभी सीधे मुंह बात न करे? हाय! किस्मत! मगर मैं भी वह आदमी हूँ कि इसका मजा खूब ही चखाऊँगा। मैं अभी जाकर अपने सास-ससुरसे सारा हाल कहता हूँ।

(जाता है)

दूसरा दृश्य

धरपकडका मकान

[*मिस्टर और मिसेज धरपकड़के पास मुन्शी बरबादका घबड़ाये हुए आना*]

मिसेज धर०—अय कौन है ? मुन्शो बरबाद ? मैं तो डर गयी थी।

मिस्टर धर०—क्यों-क्यों, दामाद साहब खरियत तो है ? आप आखिर क्यों इतने जामेसे बाहर हो रहे हैं ?

मुन्शी बर०—दिलमें आग लगे और—

मिसेज धर०—अरे ! न सलाम न बन्दगी। यह बद-तमीजो मैं नहीं सह सकती।

मुन्शी बर०—सास साहबा ! माफ कीजिये, मैं और ही धुनमे था।

मिसेज धर०—फिर वही बात ? क्यों जी, तुम्हे क्या हो गया है ? तुम्हें जरा भी एटिकेट (*Etiquette*) का ख्याल नहीं ? तुम नहीं जानते कि तुम किससे बातें कर रहे हो ?

मुन्शी बर०—क्या हुआ क्या ?

मिसेज धर०—क्या यह कम्बख्त 'सास' का लफ्ज़ तुम्हारी जबानसे अलग नहीं होगा ?

मुन्शी बर०—अय ! आप मेरी सास नहीं तो क्या आप मेरी...... ।

मिसेज धर०—फिर वही लफ्ज़ ? खबरदार ! 'मैडम' के सिवाय मुझे और किसी नामसे पुकारा तो अच्छी बात नहीं होगी ।

मुन्शी बर०—(अलग) बुढ़ापेमे शादीका यही नतीजा है । बुड्ढे दामादकी इज्जत ऐसी ही होती है । (प्रकट) मगर इसके कहनेमें मुझसे बुराई क्या हुई ?

मिसेज धर०—अफसोस ! तुम नहीं समझते कि मामूली आदमियोंमे और जेन्टिलमैनोंमें कितना फर्क है । मै तुम्हे जो कुछ चाहूं, कह सकती हूँ, मगर तुमको हमेशा अपनी हैसियतका ख्याल करके एटिकेट (*Etiquette*) के मोताबिक तमीजसे हमलोगोंके साथ बातें करना चाहिये ।

मिस्टर धर०—हाँ हाँ, ठीक है और दूसरी बात यह है कि हम औरोंपर यह जाहिर होने नहीं देना चाहते कि हमारे दामादकी उमर हमारे बावरचीके नानासे भी ज्यादा है ।

मुन्शी बर०—(अलग) बुजुर्ग दामादकी यह इज्जत !

मिस्टर धर०—अच्छा तो मुन्शी बरबाद ! तुम्हारी परेशानीकी क्या वजह है ?

मुन्शीबर०—(अलग) दूसरी परेशानी *Etiquette* की हो गयी। अपने दिलकी जलनको सम्हालू या एटिकेट फेटिकेटकी पाबन्दी करूं ? (प्रकट) अगर आप ऐसे जेन्टिलमैनोंके साथ (*Etiquette*) की पाबन्दी निहायत जरूरी है तो मैं एटिकेटकी पूरी पाबन्दी करता हुआ मिस्टर धरपकड़से यह कहता हूं कि ·····।

मिस्टर धर०—ठहरो जरा ! तुम्हें यह ख्याल नहीं कि जब कोई आदमी किसी जेंटिलमैनसे बाते करता है तो उसको उसका नाम नहीं लेना चाहिये। बल्कि खाली जनाब यह या हुजूर कहना चाहिये।

मुन्शी धर०—अच्छा तो जनाब सही हुजूर सही या जनाब और हुजूर दोनों सही और मिस्टर धरपकड नहीं। मुझको आपसे यह कहना है कि मेरी औरतने·········।

मिस्टर धर०—ठहरो ! जब तुमको हमलोगोंसे हमारी लड़कीका जिकिर करना है तो उस वक्त तुमको उसे अपनी औरत कहके नहीं पुकारना चाहिये।

मुन्शी बर०—आग लगे ऐसी एटिकेटपर। क्यों जनाब, क्या मेरी औरत, मेरी औरत नहीं है ?

मिस्टर धर०— बेशक ! तुम्हारी औरत है। मगर यह भी तो ख्याल रखना चाहिये कि बुढ़ापेकी शादीमें और जवानीकी शादीमे कितना फर्क है।

मुन्शी बर०—(*अलग*) बुढापेकी शादीका यही नतीजा है। (*प्रकट*) ईश्वरके लिये थोड़ी देरतक अपनी जेन्टिल-मैनी अलग रखिये और मुझे थोड़ी-सी बातें जिस तरहसे मुझे कहनी आती है,कहने दीजिये। (*अलग*) भाड़मे गयी ऐसी 'एटिकेट' जिसकी वजहसे बाततक करना मुश्किल है। (*धरपकड़से*) साफ बात यह है कि जनाब, मैं आपकी लड़कीसे सख्त परेशान हूँ।

मिस्टर धर०—वजह, वजह इसकी वजह ?

मिसेज धर०—क्या ? क्या ऐसी खूबसूरत लडकी। खूब पढी-लिखी। सब बातोंमें होशियार। तमीजदार। सारी खूबियोंसे भरी और ऐसी लड़कीको कहते हो कि उससे परेशान हूं ? वह शादी जिसकी वजहसे तुम्हे इतने फायदे हुए·········।

मुंशी बर०—मेरी भी सुन लीजिये 'मैडम'। क्योंकि 'मैडम' कहना बहुत ज़रूरी है। इस शादीसे तो असल फायदा आपका हुआ। आपके ऊपर नालिश हुई। आप कौड़ियोंकी मोहताज हो रही थीं। अगर उस वक्त मैं थैली

न खोल देता तो आप लोगोंकी सारी जेंटिलमैनीपर पानी फिर जाता।

मिसेज०—क्या तुम इसको कुछ गिनते ही नहीं कि तुमको बुढ़ापेमें ऐसी कमसिन खूबसूरत पढ़ी-लिखी होशियार फैशनेबल लडकी मिली? ऐसी लड़की तो सपनेमे भी किसी जवानको नहीं मिलती।

मुंशी बर०—मगर इसीके साथ-साथ मेरी दौलत गयी। चैन और आराम गये और अब किसी दिन जान भी जानेवाली है।

मिस्टर धर०—क्यों? क्यों? क्यों?

मुंशी वर०—क्योंकि आपकी लडकी इस तरहसे नहीं रहती जिस तरह व्याही औरतोंको रहना चाहिये बल्कि वह ऐसे काम करती है कि जिससे इज्जतमें बट्टा लगनेका बहुत डर है।

मिसेज धर०—जरा सोच-समझके बाते करो। मेरी लड़की उस खानदानकी है कि जिससे इज्जत भी इतराती है। तीन सौ बरस हुए कि इस खानदानमें किसीने ऐसा काम नहीं किया कि कोई उंगली उठावे।

मुंशी वर०—हा! मेरे बापने भी घी खाया था और मेरे हाथसे अबतक उसकी खुशबू आती है।

मिस्टर धर०—बहादुरीके लिये तो मैं नहीं कह सकता। मगर हमारे यहांकी औरतें खानदानी नेकचलन होती हैं।

मिसेज धर०—क्यों? क्यों? बहादुरीके लिये क्यों नहीं कह सकते हो? क्या तुम्हारी मा तुम्हारे बापकी और मेरी मां मेरे बापकी डंडोंसे नहीं खबर लिया करती थीं।

मिस्टर धर०—हा हां ठीक है, हमारे यहांकी औरतें बहादुर भी होती हैं।

मुशी बर०—वह जमाना और था और यह जमाना और है। आपकी लड़कीने भी जमानेके साथ-साथ रङ्ग बदल दिया है। ये नासमझ औरतें जराही सी पढ़कर फैशनके फेरमें पड़कर अपने फर्जको भूल जाती हैं। इन चलते पुरजे मर्दों की चालोंको नहीं समझतीं। दूसरे मर्दों के साथ उठने-बैठनेसे हर घड़ी चहल पहल रहनेसे यह कमजोर और अन्धी औरतें ....।

मिस्टर धर०—जरा साफ-साफ कहो। मेरी समझमें तुम्हारी बातें ठीक नहीं आतीं।

मिसेज धर०—तुम्हारा क्या मतलब है कि औरतोंको आजादी न दी जावे? इन बेचारियोंको बेवकूफ हिन्दुस्तानियोंकी तरह परदेकी सख्त कैदमें रख.........।

मुंशी बर०—बेशक दी जावे। मगर यह भी तो देखना

चाहिये कि औरतें आजादीके क़ाबिल हैं या नहीं। हमारे यहाँके मर्द इतमिनानके काबिल हैं या नहीं।

मिसेज धर०--कुछ नहीं, यह सब बुढ़ापेकी शादीका नतीजा है। क्योंकि बूढ़े हद दर्जेके शक्की होते हैं और वह शादीके पहले ही फर्ज़ कर लिया करते हैं कि मेरी औरत जरूर बदचलन हो जायेगी।

मिस्टर धर०--तो क्या हमारी लड़की इस आजादीकी वजहसे किसी बुरी राहपर आ पडी है?

मुन्शी बर०--हाँ! खुल्लमखुल्ला। गैरोंसे खत-किताबत मेरी आंखोंके सामने जारी है।

मिस्टर धर०--मगर यह भी जाना कि किस नीयतसे?

मुन्शी बर०--बुरी नीयतसे! बुरी नीयतसे!!

मिस्टर धर०--हैं! हैं! यह क्या कहते हो? अगर यह सच है तो अभी हम उसका गला जाकर घोंट देंगे।

मिसेज धर०--यह बुढ़ापेकी शादीका नतीजा है। यह सारा झगडा खाली शकहीका बोया हुआ है।

मिस्टर धर०--वह कौन आदमी है कि जिसकी कम्बख्ती आई?

मुन्शी बर०--उसका नाम घरबिगाड़ है। मेरे मकानके सामने रहता है।

मिस्टर धर०—मैं अभी जाकर उन दोनोंका काम तमाम करता हूँ। मगर यह बात सच है न ?

मुन्शी बर०--बिल्कुल !

मिस्टर धर०---(*मिसेज धरपकड़से*) *Dear wife* ! जरा मैं मुन्शी बरबादके साथ उस घरबिगाड़के पास जाता हूँ। मगर यह बात समझमें नहीं आती कि लड़कियोंको इतना पढ़ानेका नतीजा यह होता है।

(*मिस्टर धरपकड़ और मुन्शी बरबादका जाना*)

मिसेज धर०—मगर बुढापेकी शादीका नतीजा तो यह होता है। कोई बूढ़ोंके दिलसे शक कैसे दूर करे जो अपनी जवान औरतोंकी कार्रवाइयोंको हर वक्त शकके चश्मेसे देखा करते हैं ? खैर, मैं भी अभी अपनी लड़कीके पास जाती हूँ और इस बातको एकदम झूठ साबित कर देनेमें उसकी मदद करती हूँ।

तीसरा दृश्य

सड़क

(मिस्टर धरपकड़ और मुन्शी बरबाद)

मिस्टर धर०—अभी भेद खुल जायगा और सारा झगडा खतम हो जायगा।

मुन्शी बर०—देखिये, वह हरामजादा, वह चला आ रहा है।

(घरबिगाडका आना)

मिस्टर धर०—क्यों जनाब, आप मुझको जानते है?

घर०—बदकिस्मतीसे यह इज्जत मुझको अभी नहीं हासिल है।

मिस्टर धर०—मेरा नाम मिस्टर धरपकड़ है।

घर०—आपकी मुलाकातसे मुझे बेहद खुशी हुई।

मिस्टर धर०—मैं एक बड़ा मशहूर जेन्टिलमैन हूँ। इङ्गलैण्ड, फ्रांस, अमेरिका सब जगह मै हो आया हूँ।

मुन्शी बर०—(*अलग*) सरकारके खर्चेपर जब इन्हे कालापानी हुआ था।

मिस्टर धर०—मेरे बाप जिनका नाम मिस्टर लड-

झगड़ था, उन्होंने कई एक शेरोंका शिकार किया था और गीदड़ तो सैकड़ों ही मारे थे।

मुन्शी बर०—(अलग) न जाने सपनेमे या पिनकमें!

मिस्टर धर०—मेरे दादा भी पक्के जेंटिलमैन थे। क्योंकि उनके मरनेके बाद न जाने कितने पतलून और कोट उनके बक्ससे निकले।

मुन्शी बर०—(अलग) अयं! क्या धोबी थे या दरजी?

धर०—इसमें क्या शक!

मिस्टर धर०—मतलब यह है कि मैं खानदानी जेण्टिलमैन हूँ।

मुन्शी बर०—(अलग) यह तो सूरतसे जाहिर है।

मिस्टर धर०—मैंने सुना है कि आप एक नौजवान लड़कीसे मुहब्बत करते हैं जो कि मेरी बेटी है और जिसके यह शौहर हैं।

धर०—कौन? मैं?

मिस्टर धर०—हां जनाब! आप! अब इसका क्या जवाब देते हैं? और किस तरह आप अपनी सफाई साबित करते हैं?

धर०—मगर यह किस कम्बख्तने आपसे ऐसा कहा है?

मिस्टर धर०—जो कि इसको सच समझता है।

घर०—उस हरामजादेने आपसे बिलकुल झूठ कहा है मैं इज्जतवाला आदमी हूँ। मेरे पास कई *Good conduct* के सर्टिफिकेट हैं। क्या मुझसे ऐसा कमीनापन हो सकता है? भला मैं उस खूबसूरत लड़कीको, जिसको आपकी बेटी होनेका इज्जत हासिल है, प्यार कर सकता हूँ। मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं। जिस बेवकूफने आपसे कहा है वह सरसे पैरतक ख़ालिस उल्लूका पट्ठा है।

मिस्टर घर०—मुन्शी बरबाद!

मुन्शी बर०—जनाब!

घर०—वह कमीना है। वह दोग़ला है।

मिस्टर घर०—इनके सामने आकर जवाब दो।

मुन्शी बर०—अब आप ही जवाब दीजिये।

घर०—अगर मुझे मालूम हो जाय कि वह कहा है तो अभी-अभी मैं उसकी जबान काट लूं और मुंहपर थूक दूं।

मिस्टर घर०—(*मुन्शी बरबादसे*) अब तुम अपनी बातका सबूत दो।

मुन्शी बर०—सबूत दे चुका मेरी बात बिलकुल सच है।

घर०—क्यों जनाब,यही आपके दामाद हैं जिन्होंने…?

मिस्टर घर०—हा इन्होंनेही मुझसे यह बात कही है।

घर०—अफसोस ! अगर आपके दामाद न होते तो अभी-अभी बताता कि हम ऐसे शरीफोंको बदनाम करना कुछ खेल नहीं है।

(*मिसेज धरपकड़, दिलाराम और उलझनका आना*)

मिसेज धर०—अपनी औरतोंको पिंजडेमें बन्द करके रखनेवाले, अक्लके दुश्मनों, शक्की मर्दो, तुम्हें कौन समझावे ? यह लडकी मेरी दिलाराम मौजूद है।। सबके सामने अपनी सफाई देनेको तैयार है।

घर०—(*दिलारामसे मुन्शी बरबादकी तरफ इशारा करके*) क्या आपने इनसे कहा है कि मैं आपको प्यार करता हूँ ?

दिला०—कौन ? मैं ? भला मैं ऐसा कह सकती हूँ ? क्या यह बात है ? अच्छा अगर ऐसा ही है तो मैं चाहती हूँ कि तुम मुझको प्यार करके देख लो। हां हां, सिर्फ आजमानेके लिये मैं तुमको सलाह देती हूँ। तुम ऐसा करो तो तुम्हें खुद ही सारी असलियत मालूम हो जायगी। जरा तुम अपने दिलका हाल कहला भेजो। प्रेमकी चिट्ठियां लिखो। (*मुन्शी बरबादकी तरफ इशारा करके*) जब यह घर-पर न हो, मुझसे मिलनेकी कोशिश करो। जितनी तरकीबें छिपे चोरीकी मुहब्बतमें की जाती हैं वह तुम सब करके देख लो तभी जानोगे कि इसका नतीजा क्या होता है।

-और तुम्हारे साथ कैसा बरताव कया जाता है। समझे जनाब !

उलझन—(अलग) समझनेवालेकी मौत है ।

घर०—बस, बस, बस, माफ कीजिये । इतने बड़े लेक्चर की कोई जरूरत नहीं । मगर यह झूठ-मूठकी खबर किसने उड़ा दी कि मैं आपको प्यार करता हूँ ?

दिलाराम०—मैं खुद चक्करमें हूँ कि मैं यहाँकी बातोंका क्या मतलब निकालूँ ?

घर०—बदनाम करनेवालेकी जबान को कौन रोके ? भला कभी मैंने कोई आपसे प्यारकी बातें की हैं ?

दिलाराम—अगर की होतीं तो तुम्हारी पूरी तरहसे खातिर भी की जाती ।

उलझन—हा बीबी ! इनके साथ ऐसी खातिरदारी की जाती कि बरसों याद करते कि हाँ किसीसे पाला पड़ा था ।

घर०—मुझसे आप खातिर जमा रखिये । मैं वह आदमी नहीं हूँ कि किसी औरतका दिल दुखाऊँ । मैं आपकी और आपके मां-बापकी इतनी इज्जत करता हूँ कि आपको प्यार करनेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ सकती ।

मिसेज धर०—(मुन्शी बरबादसे) अब तो दिलमें चैन आया तुम्हारे ?

मिस्टर०—क्या मुन्शी बरबाद, अब तुम क्या कहते हो ?

मुन्शी बर०—यह सब कहनेकी बाते हैं। क्या करूँ, मुझको अब साफ-साफ कहना पड़ता है? आज दोपहरको इस घरबिगाड़ने मेरी औरत नहीं, आपकी लड़कीके पास अपना आदमी भेजा था।

दिला०—मेरे-मेरे पास आदमी आया था?

घर०—मैंने आदमी भेजा?

दिला०—क्यों? उलझन?

घर०—(उलझनसे) भला तुम कभी इसको मान सकती हो?

उलझन—बेपैरकी बात कौन मान सकता है? ऐसी झूठी बात तो मैंने न कभी देखी न सुनी।

मुन्शी बर०—चुप हरामजादी कहींकी! तू ही तो उस आदमीको भीतर ले गई थी।

उलझन—कौन? मैं?

मुन्शी०—हां हां तू! देखो तो सूअरकी बच्चीको कैसी अनजान बनती है।

उलझन—हे गुदड़िया पीर! इसमें अगर जरा भी सच्चाई हो तो सामनेवालेकी आंख फूटे।

मुन्शी बर०—मैं तुझे खूब जानता हूँ। दगाबाज़ झूठी कहींकी।

उलझन—बीबी दिलाराम !

मुन्शी बर०—चुप ! चुप ! चुप ! नहीं तो सारा गुस्सा तुम्हींपर बेखटके उतारूंगा। क्योंकि तेरा बाप कोई जेन्टिल-मैन नहीं है।

दिला०—झूठ ! झूठ ! एकदम झूठ ! मैं इसको नहीं सह सकती। मुझमें इतना दम नही कि मैं इसका जवाब दे सकूं। या ईश्वर ! बेकसूरको सतानेकी सजा तू ही दे। अगर मुझसे कोई कसर हुआ है तो बस यही कि मैं इनकी (*मुन्शी बरबादकी तरफ इशारा करके*) बातोंको हमेशा चुपचाप सहती आयी हूँ।

उलझन—यही तो बात है। बीबी दिलाराम ऐसी हैं कि इन बातोंपर भी हमेशा इनकी खिदमत ही किया करती हैं।

दिला०—यह सारी मेरी बदकिस्मती और मेरी खिद-मत करनेका नतीजा है। अगर मैं जरा तेज मिजाजकी होती तो आज मेरी झूठमूठकी बेइज्जती इस तरहसे न होती। मैं यह अब ज्यादा नहीं सुन सकती।

(*जाती है*)

मिसेज घर०—(*मुन्शी बरबादसे*) तुम ऐसी नेकचलन औरतके लायक नहीं हो। (*जाती है*)

मागो। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो॥

उलझन—बेशक! ऐसी सीधी औरतका ऐसा मर्द! अगर मैं इनका बीबी होती तो बता देती अच्छी तरहसे। (*घरबिगाड़से*) हां बाबू साहब! मुन्शी बरबादको कम-से-कम जलानेके लिये आप जरूर बीबी दिलारामको प्यार कीजिये! मैं अब आपकी बड़ी मदद करूंगी। क्योंकि मुझको इन्होंने झूठमूठ इतनी गालियां दी हैं। भला मैं इसका बिना बदला लिये माननेकी……। (*जाती है*)

मिस्टर धर०—मुन्शी बरबाद! तुम ऐसी ही सजाके काबिल हो। जाओ और जाकर यह सीखो कि शरीफ औरतोंके साथ किस तरह रहना चाहिये। खबरदार जो तुमने फिर ऐसी गल्ती की।

मुन्शी बर०—मैं जो असलियतमें सच्चा था, झूठा साबित हो गया और वह झूठी सच्ची हो गई। हाय! बुढापेकी शादीका यही नतीजा है।

घर०—(*मिस्टर घरपकड़से*) मगर सुनिये तो। अब आपको मालूम ही हो गया कि मुझपर झूठमूठ कसूर लगाया गया। मेरी इतनी बेइज्जती हुई, इसका अब कौन जवाब-देह होगा।

मिस्टर धर०—बहुत ठीक। शरीफोंकी इज्जतमें बट्टा

मुन्शी बर०—मैं ऐसा नहीं......।

लगाना कोई खेल नहीं है। [मुन्शी बरबाद, अब क्या जवाब देते हो ?

मुन्शी बर०—कैसा सवाल-जवाब ?

मिस्टर धर०—तुमपर यह हतकइज्जतीका दावा कर सकते हैं। क्योंकि तुमने इनको झूठमूठ बदनाम किया।

मुन्शी बर०—नहीं ! झूठमूठ नहीं। मेरा ईश्वर गवाह है कि मैं सच्चा हूँ और जो इनपर कसूर लगाया, वह बिल्कुल सच्चा है।

मिस्टर धर०—हुआ करे। मगर साबित तो नहीं हुआ। इन्होंने तुम्हारी बातोंको साफ इनकार करके सफ़ाई दे दी। तुम कभी भी उस आदमीपर कोई कसूर लगा ही नहीं सकते हो, जो अपने कसूरोंको मानता न हो।

मुन्शी बर०—यह तो खूब रहा। कलेजेमें छुरी भोक दे और इनकार करके साफ बेगुनाह बन जाय। फर्ज़ कीजिये—

मिस्टर धर०—हुश ! बहस करनेकी कोई जरूरत नहीं। तुम इनसे माफी मांगो, जैसा मैं कहता हूँ।

मुन्शी बर०—मैं ? मैं ? और इससे माफी मागूं ?

मिस्टर धर०—हां ! हां ! सीधी तरहसे जल्दी माफी

मिस्टर धर०—मुन्शी बरबाद ! देखो फजूल गुस्सा मत दिलाओ। नही तो मैं इनकी तरफदारी करने लगूंगा और तुमपर नालिश कराके तुम्हे जेलखाने भिजवा दूंगा।

मुन्शी बर०—(*अलग*) बूढे दामादकी यही इज्जत होती है।

मिस्टर धर०—पहले झुककर सलाम करो, क्योंकि यह जेंटिलमैन है और तुम जेंटिलमैन नहीं हो।

मुन्शी बर०—(*सलाम करता हुआ—अलग*) या ईश्वर ! मेरा हाथ कट जाये।

मिस्टर धर०—जो मै कहता जाऊ, वही तुम कहते जाओ। अच्छा कहो।

"हुजूर"......

मुन्शी बर०—"हुजूर"—

मिस्टर धर०—मै आपसे माफी मागता हूँ......(*मुन्शी बरवादको हिचकिचाते हुए देखकर*) आह !

मुन्शी बर०—मैं आपसे माफी मांगता हूँ।

मिस्टर धर०—आपको झूठमूठ वदनाम करनेके लिये...।

मुन्शी बर०—आपको झूठमूठ बदनाम करनेके लिये।

मिस्टर धर०—मैं अपने कसूरको मानता हूँ और बहुत पछताता हूँ।

मुन्शी बर०—तुम्हारे कसूरको मैं मानता हूँ और बहुत पछताता हूँ।

मिस्टर धर०—और हाथ जोड़कर मैं यह कहता हूँ—हाथ जोड़ो।

मुन्शी बर०—न, यह तो न होगा।

मिस्टर धर०—क्या?

मुन्शी बर०—हाथ जोड़कर मैं यह कहता हूँ।

मिस्टर धर०—कि मैं आपका गुलाम हूँ?

मुन्शी बर०—कौन! मैं इस हरामजादेका गुलाम हूँगा?

मिस्टर धर०—(धमकाता हुआ) कहो!

घर०—बस! बस! हो गया। अब ज्यादा कहनेकी कोई ज़रूरत नहीं।

मिस्टर धर०—नहीं नहीं। मैं *Etiquette* की पूरी पाबन्दी कराऊँगा। कहो कि मैं आपका गुलाम हूँ।

मुन्शी बर०—मैं आपका गुलाम हूँ—

घर०—(*मुन्शी बरबादसे*) मैंने आपको माफ कर दिया और उम्मीद करता हूं कि आप भी मेरी तरफसे अपने बुरे ख्यालात हटा देंगे। (*मि० धरपकड़से*) मिस्टर धरपकड़! मैं आपको सलाम करता हूँ। आपको बड़ी तकलीफ हुई। इसके लिये मुझे बहुत अफ़सोस है।

मिस्टर धर०—इसके लिये मैं आपका बहुत शुक्रिया अदा करता हूं और आप मुझसे जब चाहे, तब मिल सकते हैं।

धर०—मैं इस मिहरबानीका जरूर फायदा उठाऊँगा।

(जाता है)

मिस्टर धर०—देखो मुन्शी बरबाद, इस तरहसे मामलात रफा-दफा किये जाते है। समझे? अब कभी भी ऐसी ग़ल्ती न करना।

(जाता है)

मुन्शी बर०—मियाकी जूती मियाके सर। मुन्शी बरबाद, तुम इसी सज़ाके क़ाबिल हो। सच है, बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। अफसोस! एक जरा-सी छोकड़ी इतने बडे साठ बरसके बुजुर्गको उंगलियोंपर नचावे। हाय!

गाना

बर०—*फूटी किस्मत फूटी किस्मत जबसे की है शादी।*
जोरू क्या कम्बख्ती आई, सरपर अपने आफत ढाई।
रहती हरदम है लड़ाई, जीना अब है मुशकिल भाई।
बुढापेकी शादीमें यही खराबी है अपनी तबाही है—
—घरकी हो जाती पूरी बरबादी। फूटी किस्मत०

मुन्शी बर०—आखिर करूं तो क्या? किस तरहसे उससे पार पाऊं? मेरी अक्ल काम नहीं देती। अहाहा! पण्डित भकभकानन्द आ रहे हैं। इनसे राय लूं। यह जरूर कुछ राह बतायंगे।

(*भकभकानन्दका आना*)

भक०—"कविः करोति काव्यानि रसं जानन्ति पण्डिताः।
कन्या सुरत चातुर्य जामाता वेत्ति नो पिता॥"
अतएव मैं कवियोंका दामाद हूं।

मुन्शी बर०—अहाहा! बड़े मौकेसे मिले आप। मैं आपहीके पास जानेके लिये सोच रहा था।

भक०—हे मित्र! तुम बडे मूर्ख हो, बडे असभ्य हो, बड़े दुष्ट हो, बड़े मूढ़ हो, बडे शठ हो, बडे मन्दबुद्धि हो, मार्गमें मेरे जैसे परम विद्वान पण्डितको टोकते हो।

"अनाहूतोपसृष्टानामनाहूतोपजल्पिताम्।"

क्यों? ऐसी धृष्टता! तुम मुझे बिना अर्घ्यादिसे सत्कार किये हुए, बिना अष्टाध्यायी स्तुति पढे हुए सम्बोधन करनेका साहस रखते हो? क्या तुम नहीं जानते हो कि मैं महावैयाकरण हूँ। मेरे शुभनामके पूर्व बयालीस दर्जन श्री तत्पश्चात् महामहोपाध्याय 'तत्पश्चात् वेदरत्न विद्या-

भूषण इत्यादि-इत्यादि कहकर-आदरपूर्वक मेरा नाम भक्त-भक्तानन्द शास्त्री इति ग्रहणकर तत्पश्चात्......।

मुन्शी बर०—माफ़ कीजिये। बड़ी गल्ती हुई। मेरी खुद अक्ल ठिकाने नहीं है।

भक०—नाम समाप्त भी नहीं हुआ और बीचहीमें तुम फिर विघ्न डाल बैठे। बड़े दुष्ट हो।

मुन्शी बर०—पण्डितजी, मुझे आपका नाम मालूम है। उसके कहनेकी कोई जरूरत नहीं है।

भक०—अच्छा बताओ, पंडित शब्दकी कैसे उत्पत्ति हुई? या पंडित शब्द बनता क्योंकर है?

मुन्शी बर०—अजी भड़भूजेके यहाँ बनता हो या लोहारके यहां बनता हो, इससे मुझसे क्या बहस?

भक०—तुम कुछ नहीं जानते हो। अहाहा—

"माता गदही पिता उल्लू येन बालो न पाठिता।
न शोभते सभामध्ये हँसमध्ये बको यथा॥"

देखो पवर्गका प्रथम अक्षर प तत्पश्चात् ण और ड संयुक्त ह्रस्व ईकार तत्पश्चात् त। अब समझे पंडित कैसे बनता है? अतएव मित्र, बिना समझे किसी शब्दका प्रयोग न किया करो। अन्यथा—

"यावत् शोभते मूर्ख स्तावत् किञ्चिन्न भापते।"

अच्छा, तो क्या कह रहे थे मैं अभी......। हां, तुम मुझको क्या समझते हो ?

मुन्शी वर०—आप एक बडे भारी लायक-फायक पडित हैं और मैं एक नालायक कम पढ़ा बेवकूफ हूं और मुसीबतके चंगुलमें फँसा हूं। इसलिये मैं ऊम्मीद करता हूं कि आप मेरी मुसीबतोंको सुनकर मुझे उनसे छुटकारा पानेकी कोई तद्‌बीर बतायगे।

भक०—मित्र, मैं केवल पंडित ही नहीं हूं, वरन् महा-वैयाकरण भी हूं। अतएव एक, दो, तीन, चार, पाच, छे, सात, आठ, नव, दस मैं दसगुना पडित हूँ। प्रथम एक शब्द अहाहा!—

"एकोल्पार्थे प्रथाने च प्रथमे केवले तथा।
साधारणे समानेपि सख्यायां च प्रयुज्यते॥"

जिस प्रकार सकल सख्यावाचक शब्दोंमें शब्द एक प्रथम गिना जाता है उसी प्रकार मैं आकाश, पाताल, भूमि तीनों लोकमें, भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालके पडितोंमें प्रथम गिना जाता हूं। अतएव मैं एकगुना पंडित हूं और दूसरे—

मुन्शी वर०—बहुत अच्छा पडितजी महाराज। मगर—

भक०—अक्षरके दो विभाग हैं, स्वर और व्यञ्जन।

और इन दोनोंका मुझे पूरा ज्ञान है। अतएव मैं दो गुना पंडित महावइयाकरणोऽस्मि । तीसरे कलियुगमे तम्बाकू-तीन प्रकारसे सेवन करनेके लिये बतलाया गया है।

"तमालं त्रिविध प्राक्त कलौ भागीरथी यथा।
क्वचित् हुंका क्वचित् थुका क्वचित् नासाग्रगामिनी ॥"

और मैं इन तीनों प्रकारसे इसका भलीभांति सेवन करता हूँ। इसलिये मैं तीन गुना पंडित हूं।

मुन्शी बर०—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा महाराज। मगर बात यह है।

भक०—चौथे अन्धे चार प्रकारके होते हैं।

"न च पश्यति जन्मान्धाः कामांधो नैव पश्यति।
न पश्यति मदोन्मत्तो ह्यर्थी दोपान्न पश्यति ॥"

और यहा चारों गुण एकत्रित हैं। इसलिये मैं चार गुना पंडित हूँ और पांचवे पिता पांच प्रकारके होते हैं।

"जनिता चोपनेता यश्च विद्यां प्रयच्छति।

यानी हम लोग

अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृता ॥"

अतएव मैं पांच गुना पंडित हूं और इस तरहसे पांचों प्रकारसे तुम्हारा पिता यानी बाप हुआ।

मुन्शी बर०—क्या? क्या? क्या?

भक०—छठे नकारनेकी छे विधिया है—

"मौनं कालविलम्बश्च प्रयाणं भूमिदर्शनं ।

भृकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः षडविधः स्मृतः ॥"

और मैं सब जानता हूँ । इसलिये मैं छेगुना पण्डित हूँ ।

मुन्शी बर०—अच्छा बके जाइये । खूब पेट भरके बक लीजिये ।

भक०—सातवे गानविद्याके सात मुह हैं जिनको स्वर कहते हैं ।

"षड्ज ऋषभ गधार स्वर मध्यम पंचम मान ।

धैवत और निसादको, स, ऋ, ग, म, प, ध, नी, जान ॥"

परन्तु ये स्वर व्याकरणके स्वरोंसे भिन्न होते हैं जिनको भलीभांति जाननेके लिये इनका भी जानना अति आवश्यक है और मुझे इनका पूरा ज्ञान है । अतएव मैं सात गुना पंडित हूँ । आठवें—

"मूर्खस्य चाष्टचिह्नानि शीका टीका च मालिका ।

प्रतिष्ठा लम्बधोत्रीणि हाजी होजी च योग्यता ॥"

और मैं इन आठों भूषणोंसे भूषित हूँ और नवे हे मूर्ख मित्र—

मुन्शी बर०—अजी सुनिये तो ? बात तो सुनिये—

भक०—और नव--

"इक्षुदण्डास्तिलाः क्षुद्राः कांत हेम च मेदनी।
चन्दनं दधि ताम्बूलं मर्दनं गुणवर्धनम्॥"

और मैं सबको जानता हूँ। इसलिये नव गुना पंडित हूँ। दसवें व्याकरणकी जड क्रियाएं है और समस्त क्रियाएँ दस गुणों और दस ही लकारोंमें समाप्त हो जाती हैं। समझे? और मुझे यह सब ज्ञात है अतएव मैं सर्वज्ञाता दसगुना पण्डित महामहोवैयाकरण हूं। इसलिये जो साक्षात् व्याकरणकी जड़ ग्रहण करना चाहते हैं वह मुझको अवश्य धारण करें। क्योंकि हे मूर्ख मित्र! तुम भलीभाति अब समझ गये होगे कि मैं एक, दो,तीन,चार, पाच, छे, सात,आठ, नौ, दस-दस गुना पण्डित हूँ। साराश यह कि मैं ससारभरके पण्डितोंका सार हूँ।

मुन्शी०—अयं! इस वेतुकी बकवादसे क्या मतलब। मैंने तो समझा था कि एक बड़े भारी पण्डितसे मुलाकात हुई, जो मेरी मुसीबतोंको दूर करनेकी राह बतायेंगे। मगर यह तो अच्छे खासे पागल जुआडी निकले जो ज्ञान बतानेके बदले सोरहीकी चाल चलने लगे। एक, दो, तीन, चार, पांच अहा हा हा! अजी पण्डितजी महाराज, आप अपनी एकाई दहाईका पहाड़ा अलग रखिये और मुझे बातोंमें न बहलाइये। न मैं आपका वक्त फजूल खराब करना चाहता

हूँ और न मुफ्त। आपसे राय लेना चाहता हूँ। रुपया अधेलीसे मैं आपकी खातिरदारी करनेको भी तैयार हूँ—

भक०—रुपया! रुपया! रुपया लेकर मैं शिक्षादान कहीं कर सकता हूं? हे मूर्ख मित्र! तुम भलीभाति समझ लो कि मैं शिक्षाका व्यापार नहीं करता। यदि तुम मुद्राओंसे भरा हुआ थैला दो और वह थैला चादीके बक्स में हो और वह बक्स रत्नोंकी वेदीपर धरा हो और वह वेदी मोतियोंके मन्दिरमें हो और वह मन्दिर मणिके पर्वत-पर हो और वह पर्वत साक्षात् लक्ष्मीकी राजधानीमें हो और वह राजधानी हीरेके द्वीपमे हो और वह द्वीप क्षीर के समुद्रमें हो और वह समुद्र तीनों लोकमे हो। हा, यदि तुम यह तीनों लोक मुझको दो जिसमे वह क्षीरका समुद्र हो जिसमें वह हीरेका द्वीप हो जिसमें लक्ष्मीकी राजधानी हो जिसमें वह मणिका पर्वत हो जिसपर वह मोतियोंका मन्दिर हो जिसमे वह रत्नोंकी वेदी हो जिसपर वह चादी का सन्दूक हो जिसमे वह मुद्राओंका थैला हो, तब भी मैं उसकी (*अपने सरसे एक बाल तोड़कर*) इसके बराबर भी नहीं परवाह करता।

[*जाता है*]

मुन्शी०—ओहो ! यह तो बिल्कुल सतयुगी है । लालच जरा नहीं, तब यह ज़रूर असली पण्डित है । इनकी राय बड़ी पक्की होगी । जरूर लेनी चाहिये ।

[जाता है]

पहला दृश्य

मुन्शी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(उलझन और भण्डाफोड़)

उल०—बस मैं उसी वक्त समझ गयी थी कि यह सारा झगड़ा तेरा ही खड़ा किया हुआ है। तूने ही इस बातको किसीसे कहा होगा और उसने जाकर मुन्शी बरबादसे आग लगा दी।

भंडा०—मैं क्या करूँ? मुझे इस मकानसे निकलते हुए एक आदमीने देख लिया था। उसीसे मैंने कहा था कि खबरदार! यह किसीसे कहना मत। मैं क्या जानता था ··

उलझन—बस बस, रहने भी दे।

भंडा०—हांजी, हटाओ भी इस झगडेको। मगर उलझन, ए जरा एक बात तो सुन लो।

उलझन—खैर तो है?

भंडा०—जरा इधर देखो।

उलझन—अय ! बोल ना ! कहता क्यों नहीं ?

भण्डा०—उलझन ।

उलझन—अरे क्या है ?

भण्डा०—बस समझ जाओ ।

उलझन—क्या समझूँ ? कुछ कहेगा भी ?

भण्डा०—तो कह दूं ? कह दूं ? अयं ? बुरा तो न मानोगी ?

उलझन—बोल ।

भण्डा०—अच्छा, जरा और नजदीक आओ ।

उलझन—क्यों ?

भण्डा०—बस यह न पूछो । हां ।……उलझन ! ए ! ए ! उलझन·ए !

उलझन—हट ! हट ! दूर हट ! तेरे कपड़ोंसे बू आती है ।

भण्डा०—अरे, यह तो मुहब्बतकी बू है ।

उलझन—मुहब्बतकी बू !! बुढ़ापेमें ?

भण्डा०—तभी तो जरा सड़ाइन्ध आ गयी है । बिल्कुल सिरकेका मजा है । शादीके बाद इसकी तेजी देखना ।

उलझन—क्या अपना अचार बनवानेका सामान कर रहा है ? क्यों बे, भला तू करेगा मुझसे शादी ?

भंडा०—मैं न कर सकू तो तुम्हीं कर लो मुझसे तुम्हारी ही जीत रहे भाई।

उलझन—मगर मुन्शी बरबादकी तरह फिर तू भी शक्की हो जायेगा, क्योंकि बूढ़े मर्द बड़े शक्की होते हैं।

भंडा०—अरे सिर्फ वही जोरूके लिये अपना रुपया खर्च करते हैं, सब नहीं और यहा तो तुम कमाओगी और बन्दा चैन करेगा। मैं समझूंगा कि शादी क्या हुई, इस बुढ़ौतीमें घर बैठे गोया पेनशन मिली और उसपर जोरू मिली वातेमे। समझी? बस इसी बातपर जरा एक प्यार तो दे दो उलझन, फिर देखो कैसा जवान अभी हुआ जाता हूँ। तुम्हारी कसम!

उलझन—अय! चल हट! तुझे देखते ही न जाने क्यों डर लगता है।

भडा०—ऐ है!

गाना

भण्डा०—*ज़रा फिर तो वही नखरे दिखाना। हा जी ज़रा०*
सैना चलाना, नैना लड़ाना।
रह रहके चितवनका करना निशान। हां जी०

उलझन—*दूर निगोड़े, लुच्चे कमीने, चल दूर कहीं हाथ*
न लगाना।

भंडा०—प्यारी मत कर तकरार, मुझे दे दे एक प्यार।

उलझन—ज़री रुक तो मुरदार, अभी देती हूँ प्यार।

भंडा०—बाप रे बाप !

उलझन—ले मुरदार !

भंडा०—बाप रे बाप !

भण्डा०—बस बस ! नखरा बन्द कर। नहीं जान गयी। कुछ शादीके बादके लिये भी रख छोड़। ले ले बर-बिगाडका खत ले। बाप रे बाप !

उलझन—चुप फिर गुल मचायेगा तो हां ! जा यहांसे भाग, कह देना कि खत दे दिया।

भण्डा०—जाता हूँ। अरे ओ पहाड़की बच्ची, सलाम। बिजलीकी अम्मां पालागन। लोहेकी तोप बन्दगी ! बन्दगी ! बन्दगी ! बन्दगी !

[*जाता है*]

उलझन—अब जाकर यह खत बीबी दिलारामको दे दूं। अरे ! वह तो खुदही इधर आ रही है। मगर उनके साथ मुन्शी बरबाद भी हैं। तो अच्छा अभी नहीं। इनको चले जाने दो, तब।

[*जाता है*]

(मुन्शी बरबाद और दिलारामका मकानसे निकलना)

मुन्शी बर०—नहीं नहीं, मैं तुम्हारे चकमेमें नहीं आ सकता। जो कुछ मुझसे कहा गया था वह बिलकुल सच है। तुम हजार कसमें खाओ तो क्या मगर तुम मेरी आखोंमे इस तरह धूल नहीं झोंक सकती।

(घरबिगाडका बाहरसे आना और छिपकर अलग खडा होना)

घर०—(दूरसे अलग) आह! वही तो है। मगर वह बुड्ढा भी साथ है।

मुन्शी बर०—(*घरबिगाड को न देखकर*) मुझको खूब मालूम है कि तुम जरा भी उस पाक रिश्तेके बन्धनकी इज्जत नहीं करती जिसमे हम तुमदोनों बंधे हैं। (*दिलाराम और घर-बिगाड दोनों एक दूसरेको सलाम करते हैं*) अजी, यह सलाम-बन्दगी रहने दो। मैं इस किस्मकी इज्जत करनेको नहीं कहता। यह हँसी-दिल्लगी अब मुझे एक आख नहीं भाती।

दिलाराम—मैं तुमसे हंसी करती हूं? भला मैं क्यों ऐसा करने लगी?

मुन्शी बर०—जो तुम्हारे दिलमे है उसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। (*दिलाराम और घरबिगाड दोनों फिर एक दूसरेको सलाम करते है*) आह! फिर वही बात। मैं इस इज्जत का भूखा नही हूँ और न मैं चाहता हू कि तुम मेरी ऐसी

इज्जत करो। बल्कि तुमको चाहिये कि तुम उस रिश्तेकी इज्जत करो जिसके पाक बन्धनमे शादीके वक्त हम तुम दोनों बांधे गये हैं। (*दिलाराम घरबिगाड़को कुछ इशारे में कहता है*) अय ! है ! तुम हाथ-पैर क्यों चमकाती हो ? मैं कोई बुरी बात नही कहता !

दिलाराम--कौन हाथ-पैर चमकाती है ?

मुन्शी बर०--मैं खूब समझता हूँ। तुम मुझे बूढ़ा समझती हो, इसीलिये मेरी जरा भी परवाह नही करती और अफसोस ! तुम यह ख्याल नहीं करती कि मैं तुम्हारी कितनी खातिर करता हूँ (*दिलाराम घरबिगाड़की तरफ सर हिलाती है*) अरे, तुम सर क्या हिलाती हो ? क्या मैं कुछ झूठ कहता हूँ ?

दिलाराम—कौन मैं ? मैं काहेको सर हिलाऊँगी ?

मुन्शी बर०—और उल्टे मुझीसे पूछती हो। अच्छा उल्लू बनाती हो। कुछ नहीं, बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। क्या……

घरबिगाड़—(*चुपचाप दिलारामके पीछे आकर*) जरा एक बात सुन लो।

मुन्शी बर०—(*दिलारामसे*) अयं क्या कहा तुमने ?

दिलाराम—सपना देखते हो क्या ? (*मुन्शी बरबाद घूम*

कर दिलारामकी दूसरी तरफ जाता है। वहां घरबिगाड़को देखता है। वैसे ही घरबिगाड़ मुन्शी बरबादको बहुत झुककर सलाम करके पीछे हटता है और चल देता है)

मुन्शी बर०—अब कहो।

दिलाराम—क्या कहूं?

मुन्शी बर०—देखो वह तुम्हारे पीछे घूम रहा है।

दिलाराम—तो मैं क्या करूं? यह मेरा कसूर है?

मुन्शी बर०—बेशक, यह तुम्हारा ही कसूर है। मर्दों की भला क्या मजाल कि वे किसी औरतका पीछा बिना उसकी रजामन्दीके करे?

दिलाराम—तो क्या मैं उससे कहने गई थी कि तुम मेरे पीछे-पीछे आओ।

मुन्शी बर०—गो जबानसे तुमने नहीं कहा मगर तुमने अपनी चालढालसे रंगढगसे तो उसे हिम्मत दिलाई। अगर औरत खुद न बिगड़े तो उसे कोई बिगाड़ नहीं सकता।

दिलाराम—चालढालसे हिम्मत दिलाना मैंने आज ही सुना।

मुन्शी बर०—क्या तूने उससे आंखे नहीं मिलाईं? क्या तूने उसे मीठी चितवनसे नहीं देखा? क्या तू उसको

देख-देखकर नहीं मुस्कुराई? क्या तूने गर्दन घुमा-घुमाकर अपनी तिर्छी नजरें बार-बार उसपर नहीं डालीं?

दिलाराम—जो मुझे देखेगा उसको मै क्यों न देखूं? आखिर आँखे हैं किसलिये? क्या मैं चालढाल फिर नये सिरेसे सीखूं? क्या पैरके बल चलनेके बदले सरके बल चलूं?

मुन्शी बर०—अगर तुम सच्ची और नेकचलन औरतों की तरह रहना चाहती हो तो तुम्हें यह बातें छोडनी पड़ेगी। यह ताकझांक छेड़छाड, यह सब वाहियात खुराफात मुझे जरा भी पसन्द नहीं।

दिलाराम—मेरी बलासे। वाह! वाह! क्या मेरी इसीलिये शादी हुई है कि मैं जीते जी कब्रमें अपनेको डाल दूं? दुनियासे कुछ सरोकार न रखूं?

मुन्शी बर०—क्या क्या क्या, जो इकरार तुमने शादीके वक्त किया था उसकी पाबन्द तुम नहीं हो?

दिलाराम—मैं क्यों उसकी पाबन्द होने लगी? जिनसे तुमने शादी तै की थी वह उसके पाबन्द हों तो हों। मैं थोडे ही किसीसे कहने गई थी कि मुझसे शादी करो।

मुन्शी बर०—(*अलग*) जी जाहता है कि दो तमाचे लगाऊँ और इसके गुलाबी गालोंको लाल कर दूं। कुछ नहीं, मुन्शी बरबाद, अपनी ही किस्मत ठोको। बुढ़ापे-

की शादीका यही नतीजा है। नहीं तो इसकी हिम्मत होती कि मुझसे यों जबान लड़ाती! चलो अपना काम देखो। इससे बहसमें तुम नहीं जीत सकते।

(जाता है)

गाना

दिला०—जबसे हुआ है बुढ़ापेका संग।
जवानीका रंग, ढंग है कुढंग।
निगोड़ी जवानी, है कैसी दिवानी,
करती है हरदम मुझे तो यह तंग। जबसे०।
मैं कैसे समझाऊं, जियाको मनाऊं, कैसे मैं रोकूं दबाऊं उमंग।
हाय! चितवन यह चोखी, वो शोखी अनोखी,
सबका है रंग हुआ आखिर बदरंग। जबसे०।
रंग मेरा भंग हुआ, जीवन भी तंग हुआ,
यौवन बेढंग हुआ,
बूढ़ेके संग। जबसे०।

(उलझनका आना)

उलझन—बीबी दिलाराम! मैं बड़ी देरसे आपकी ताकमें थी, मगर मुन्शीजी टलनेका नाम ही नहीं लेते थे।

दिलाराम—क्यों?

उलझन—भला यह खत किसका होगा ?

दिलाराम—ला ला मुझे दे। छिपाती क्यों है ?

(*खत छीन लेती है*)

उलझन—(*अलग*) मैं तो डरती थी कि कहीं बिगड़ न जायें। मगर नहीं इधर भी मामला गर्मागर्म है।

दिलाराम—देखो उलझन ! कितना प्यारा खत है। जी चाहता है कि इसको वार-बार पढ़ूं। (*पढ़ती है और फिर हँसती है*) अभी-अभी जाकर जवाब लिखती हूं।

(*घरके भीतर जाती है*)

(*घरबिगाड और भंडाफोडका आना*)

उलझन—वाह ! बाबू साहब वाह ! इस मुएडीकाटे-को आपने काहेको भेजा था ?

भण्डाफोड़—(*घरबिगाड़से*) जरा इस पत्थरकी ममानी-से अलग खड़े होइये।

घरबिगाड—क्या करूं ? हिम्मत न पडी कि कोई अपना आदमी भेजूं। मगर उलझन, मैं तुम्हारा किस तरहसे शुक्रिया अदा करूं ? लो, तो भी यह तुम्हारे नजर हैं।

(*पाकेटमें हाथ डालता है*)

उलझन—सरकार राजा बाबू हैं। आपके ऐसा तो बांका जवान देखा ही नहीं। सच पूछिये तो बीबी दिला-राम आपहीके लायक है।

भण्डाफोड़—और मेरे लायक तू।

घरबिगाड़—यह सब तुम्हारी मिहरबानी है।

(रुपये देता है)

भण्डाफोड़—लाओ लाओ, इधर लाओ उलझन, उन्हें हम रखें। अब क्या ? हमारी तुम्हारी शादी तो होनेवाली ही है। फिर क्या ? हम-तुम एक तो हैंई हैं। जबतक तुम हमको अपना सन्दूक समझो।

उलझन—देखूं तो सही कि यह सन्दूक कितना मज-बूत है।

घरबिगाड़—उलझन, वह खत तुमने बीबी दिलाराम-को दे दिया था ?

उलझन—हाँ हाँ, उसीका जवाब तो लिखने गई है वह !

घरबिगाड़—क्यों उलझन, भला मुझसे दो-दो बातें हो सकती है ?

उलझन—अच्छा तो आइये मेरे साथ।

घरबिगाड़—मगर—मगर कहीं वह नाराज न हों, और कोई डर तो नहीं है।

उलझन—नहीं कुछ भी नहीं। मुन्शीजी गये हैं अपने कामपर और वह उनकी परवाह भला कब करती है? बस वह डरती हैं अगर तो सिर्फ अपने मां-बापसे। वह जानने न पावे।

घरबिगाड़—या ईश्वर, मदद कर।

(*घरबिगाड़ और उलझन दोनों घरके भीतर जाते हैं*)

भण्डाफोड़—कैसे नेक काममें ईश्वरको याद किया है; मगर वाह! उलझन एक ही औरत है। अक्लमें तो मेरी नानीसे भी तेज है। चालिस मर्दोंको एक साथ चरा सकती है। बड़ी काबिल जोरू होगी।

(*मुन्शी बरबादका आना*)

मुन्शी बर०—(*अलग*) फिर यह आदमी यहा आया। या ईश्वर, कहीं यह सास और ससुरजीके सामने मेरी तरफसे गवाही देनेपर राजी हो जाये तो मैं बाजी जीत जाऊं। और—

भण्डाफोड़ अखखाह! तुम भी यहीं मौजूद हो मगर अजीब बगलोल हो यार। इसीलिये तुमसे मैंने वह बाते कही थीं कि जाकर सीधे आग ही लगा दो।

मुन्शी बर०—कौन? मैंने आग लगा दी?

भण्डाफोड़—नहीं तो भला उस हरामजादेको मालूम

कैसे होता ?

मुन्शी बर०—किस हरामजादेको ?

भण्डाफोड—अरे, उसी कम्बख्त मुन्शी बरबादको। उस उल्लूके पट्ठेने तो ऐसी आफत मचाई कि एकदम जाके उस बेचारीके मां-बापसे उसने कह दिया। बस मालूम हो गया कि तुमसे कोई बात कहने लायक़ नहीं है।

मुन्शी बर०—अच्छा, सुनो दोस्त।

भण्डाफोड—बस बस, अपनी दोस्ती अपने पास रखो। अगर तुम सबसे कहते न फिरते तो ऐसे मजेकी खबर सुनाता" मगर "नहीं नहीं, तुम इस काबिल नहीं हो कि तुमसे कोई बात कही जाय।

मुन्शी बर०—ए भाई ए, बता दो, क्या कोई नयी बात और हुई है ?

भण्डाफोड—कुछ नहीं। कुछ नही। और जा-जाकर लोगोंसे कहो।

मुन्शी बर०—सुनो तो।

भण्डाफोड़—माफ करो।

मुन्शी बर०—बस एक बात।

भण्डाफोड़—मैं जानता हूँ कि तुम वही बात पूछोगे।

मुन्शी बर०—नहीं, ठहरो ठहरो। वह बात नहीं।

भण्डाफोड़—अजी चलो भी। तुम यही पूछना चाह होगे कि इस वक्त क्या हो रहा है। मगर मैं ऐसा उल्ल नहीं हूँ जो तुम्हे बताऊँ कि घरबिगाड़ने उलझनको रुपए दिये हैं और वह उन्हें इस वक्त उस बुड्ढेके घरके भीतर ले गयी है। मैं यह हर्गिज नहीं बतानेका।

मुन्शी बर०—ए—ए—सुनो…

भण्डाफोड़—अजी जाओ। किसी औरतको चकमा दो……   (*चल देता है*)

मुन्शी बर०—(*अकेला*) कम्बख्त भाग गया। मैं चाहता था कि उसको किसी सूरतसे अपने ससुरजीके पास फुसला ले चलूं। मगर खैर, चलते-चलाते उसकी जबानसे यह निकल ही पड़ा कि 'घरबिगाड़' इस वक्त मेरे मकानमें मौजूद है। अब तो ससुरजी मेरी सचाई और अपनी बेटीका कमीनापन अच्छी तरहसे जानेंगे। मगर सारी खराबी यही है कि मैं करूं तो क्या करूं? अगर घरके भीतर जाता हूँ तो वह हरामजादा भाग जायगा और जो कुछ अपनी आंखोंसे देखूंगा भी वह सब फजूल है। क्योंकि मैं लाख कसमें भी खाऊँ तो भी मेरी बात नहीं मानी जायगी और अगर उसको बिना अपने घरमें देखे हुए अपने सास-ससुरको बुला लाऊँ तो फिर वही सुबहवाली मुसीबत मेरे सर

आयगी और मैं ही बेवकूफ साबित हो जाऊ गा। कैसे यह पता लगाऊँ कि वह कम्बख्त इस वक्त मेरे घरमें है? *(दरवाजेकी सूराखसे देखता है)* अरे है ! है ! वह है हराम जादा ! और वाह री किस्मत ! मेरे सास-ससुर भी कैसे मौकेसे आ पहुंचे। अब क्या? मार लिया है।

(मिस्टर और मिसेज धरपड़कका आना)

मुन्शी बर०—लीजिये जनाब, अब तो मेरी बातको आप मानेंगे?

मिस्टर धर०—क्यों, खैरियत तो है?

मुन्शी बर०—हाँ, खैरियत तो सब है मगर मेरी इज्जतकी खैरियत नहीं है।

मिसेज धर०—क्या क्या, अभीतक तुम वही सुर अलाप रहे हो?

मुन्शी बर०—जी हा। छातीपर कोदो दला जाय। और—

मिसेज धर०—क्या एटिकेट(*Etiquette*)

मुन्शी बर०—एटिकेट गई भाड़मे। दिलमे आग धधक रही है और आप तमीज सिखा रही हैं और उधर आप-लडकी ऽलग नाकों चना चबवा रही है।

मिसेज धर०—क्या तुम अपनी औरतकी जरा भी इज्जत

नहीं करते ? क्यों, और उसके लिये ऐसे लफ्ज इस्तमाल करते हो ? शर्म !

मुन्शी बर०—और वह तो मेरी बड़ी इज्जत करती है न ?

मिस्टर धर०—मेरी समझमें नहीं आता कि जब आज ही सुबहको तुम्हारी नेकचलन औरतने अपनी सचाईका इतना पक्का सबूत दिया तब भी तुम्हारे दिलमें इतमिनान नहीं आता ।

मुन्शी बर०—लेकिन अगर उस आदमीको इस वक्त मैं उसके साथ दिखा दूं तब तो आप मानेंगे ?

मिस्टर धर०—क्या उसके साथ ? कहां ?

मुन्शी बर०—अपने मकानमें ।

मिस्टर धर०—तुम्हारे मकानमें ।

मुन्शी बर०—हां ।

मिस्टर धर०—अगर यह सच है तो अलबत्ता तुम्हारी औरतसे हमलोग कोई सरोकार नहीं रखेंगे और उसको एकदम तुम्हारे ऊपर छोड़ देंगे ।

मिसेज धर०—मगर कभी यह बात सच हो ही नहीं सकती ।

(मुन्शी बरबादके मकानके दरवाजेका खुलना और दरवाजे-पर घरबिगाड़ दिलाराम और उलझनका नजर आना)

मुन्शी बर०—लीजिये, अब तो सच हो गई। वह देखिये वह !

घरबिगाड़०—(*मिस्टर घरपकड़ वगैरहको बिना देखे हुए*) अच्छा तो आज रातको आपसे मुलाकात होगी न ? जरूर ? (*मिस्टर घपकड़ वगैरहको देखकर*) अररररर ? गजब हो गया ! आपके माँ बाप और मर्द ! तीनों यहाँ मौजूद हैं।

दिलाराम०—या ईश्वर ! (*घरबिगाड़से—अलग*) खैर ! देखो घबडाहट मत जाहिर करो। मैं सब सम्भाले लेती हूं। (*प्रकट घरबिगाडसे*) क्या तुम्हारी हिम्मत इतनी हो गई कि तुम चुपचाप मेरे मकानमें घुस आये ? निकलो यहाँसे (*धक्का देकर बाहर निकालती है और उसके पीछे दिलाराम और उलझन भी बाहर आजाती हैं*) तुम्हारी दगाबाजी मुझे खूब मालूम हो गयी। आज सुबहको जब तुमपर यह कसूर लगाया गया था कि तुम्हारी नीयत खराब है, उस वक्त तुमने ऐसी सफाई दिखलाई कि क्या कहना है। उसी वक्त मैंने भी सबके सामने अपने दिलका हाल साफ-साफ बता दिया था। फिर भी तुमको शर्म नहीं आती कि यह सब हो जानेपर भी तुम मेरे पीछे यों पड़े हो। मुझको तुमने क्या समझ रखा है कि तुम मेरे मकानमें यों बेधडक चले आये ? मेरा मर्द यहाँ नहीं है तो क्या, मैं तुम्हारे

फन्दोंमे आ सकती हूँ ? मैं वह औरत नहीं हूँ कि तुम्हारी लच्छेदार बातों और धमकियोंमे आकर अपनी सचाईको भूल जाऊं। गो मैं औरत हूं तो क्या मगर तुम्हारे लिये काफी हूँ। उलझन, जरा एक डंडा तो देना। तुम्हारी बिना कुछ खातिर किये यो थोड़े ही जाने दूंगी, ताकि फिर कभी तुम मुझ जैसी शरीफ और नेकचलन औरतपर भूलकर भी नजर न डालो। (*उलझन दिलारामको डण्डा देती है और दिलाराम उससे घरबिगाडको मारनेका बहाना करती है। मगर घरबिगाड़ हट जाता है और मुन्शी बरबाद जो पीछे खड़े रहते हैं, उन्हीं पर सब डण्डे पड़ते हैं*)

घरबिगाड़—(*इस तरहसे चिल्लाता है गोया वहीं मारा जाता है*) हाय ! हाय ! अरे बाप रे ! जरा धीरे धीरे !

(*घरबिगाड़ जाता है*)

उलझन—और जोरसे बीबी दिलाराम !

दिलाराम—(*उसी धुनमें*) यह तुम्हारी बदमाशीका नतीजा है। तुम्हारी बातोंका जवाब इसी डंडेसे हमेशा दिया करूंगी।

मिस्टर घर०—शाबाश बेटी ! शाबाश !

दिलाराम—कौन मेरे बाप ? और मेरी मां ? आप लोग कब आये ?

मिसेज धर०—आ आ मेरी प्यारी बेटी, पहले मेरी छातीसे लग जा। बेशक तूने आज वह काम किया है कि तेरी यह बात नेकचलन औरतोंके इतिहासमे सोनेके क़लमसे लिखने लायक है।

मुन्शी बर०— (*अलग*) मियाकी जूती मियांके सर! अब क्या करू ? यह हरामजादी फिर बाजी मार ले गई।

मिस्टर धर०—मुन्शी बरबाद! देखते क्या हो? ऐसी नेकचलन और तपानेके लिये अपनी खुशक़िस्मतीकी तारीफ करो तारीफ!

मुन्शी बर०—अभी तो मैं अपनी पीठकी मजबूतीकी तारीफ कर रहा हूँ।

उलझन—मेरी मालकिन ही ऐसी सीधी हैं तभी तो यह मुसीबत घेरे है। मैं जो इनकी जगहपर होती तो एक मिनट भी इस घरमें न ठहरती। ऐसे मर्दका मुंह न देखती।

मुन्शी बर०—चुप हरामजादीकी बच्ची। जलेपर नमक छिड़कने चली है।

दिलाराम—(*रो-रोकर*) उलझन, तुम न बोलो। मेरी किस्मतहीमें यह बदा है। जब अपना ही आदमी बदनाम करे तो दूसरे तो फिर दूसरे ही हैं।

मिसेज धर०—बदनाम करनेवालेका मुंह काला।

बेटी, तुम औरत नहीं औरतोंकी खूबसूरती हो, जेवर हो, घमण्ड हो। मुन्शी बरबाद, तुम अपनी औरतके पैरकी धूलको सर चढाओ।

उलझन—बेशक।

मुन्शी बर०—चुप सुअरकी बच्ची। बेशक कहती है। मारूंगा वह तमाचा कि मुंह टूट जायगा।

दिलाराम--(*रोती हुई*) देखो मां, तुम्हीं सुन लो इनकी बाते।

(*भकभकानन्दका आना*)

भक०—अय? यह क्या गडबड हो रहा है? यह लड़ाई! यह झगड़ा! यह कलह! यह उपद्रव! यह अनर्थ! यह हल्ला! यह चपेताघात! यह कुटम्बस! बोलो बोलो। बात क्या है? बात क्या है? क्या तुम लोगोंमें सन्धि नहीं हो सकती? आओ आओ, इधर आओ। हमको अपना पच बनाओ। हम तुम लोगोंमे मेल करा देगे।

मिस्टर धर०—कुछ नहीं, मुन्शी बरबादकी अकल मारी गई है।

भक०—अकल मारी गई है? अयं इतनीसी बातके कहनेके लिये आपने इतने शब्दोंका प्रयोग किया। यह तो आप एक शब्दमे कह सकते थे। जैसे, मुन्शी बरबाद मूर्ख

है या मूढ़ है या जड है या इनमे भी सरल शब्द कहना चाहते हों तो कहिये मुन्शी बरबाद गदहा है। व्याकरणका-

मुन्शी बर०—अजी, पहले मेरी भी बात सुन लीजिये, तब आप अपने व्याकरणका कायदा सिखाइयेगा।

भक०—च ! च ! च ! इस स्थानपर "अजी" शब्दका प्रयोग महा अशुद्ध है। शीघ्र इस शब्दको काटकर श्रीमान् बनाओ।

मुन्शी बर०—अच्छा श्रीमान् ही सही। मगर—

भक०—आहाहा ! श्रीमान् शब्द कैसा आनन्दकारी है। हे अज्ञानी मित्र, इसको फिर कहो और फिर कहो।

मुन्शी बर०—महाराज, पहले झगडा फैसला करनेके लिये कुछ मेरी भी सुनियेगा या खाली श्रीमान् शब्द रटाइयेगा।

भक०—ठहरो ! ठहरो ! आहाहा ! महाराज शब्द भी बडा श्रवणसुखकारी है। तनिक इसका रसस्वाद ग्रहण करने दो। आहाहा !

मुन्शी बर०—अब मेरा गुस्सा उबल रहा है।

भक०—उबल रहा है ? च ! च ! च ! कहो भडक रहा है। बस तुम मत बोलो। तुम बहुत अशुद्ध बोलते हो। आप कहिये। इस झगडेका कारण बताइये। शीघ्र कहिये शीघ्र। परन्तु अशुद्ध न बोलियेगा।

मिस्टर धर०—महाराज ! असली बात यह है कि मेरा दामाद अपनी स्त्रीके साथ ठीक बर्ताओ नहीं करता।

मुन्शी बर०—क्योंकि यह (*दिनारामकी तरफ*) पतिव्रत धर्म ठीक तरहसे पालन नहीं करती।

मिसेज धर०—झूठ ! झूठ ! बिल्कुल गलत।

भक्त०—यथार्थ है। हे मूर्ख मित्र ! तुम अज्ञानी हो, तुम जड हो, तुम महामूढ हो। पतिव्रत ऐसे कठिन धर्मका पालन तुम इससे भला अभीसे कराना चाहते हो ? कहीं यह युवावस्था और यह कोमल आयु पतिव्रत धर्म पालन करनेके लिये है ? निस्सन्देह ! तुम महा महा महामूर्ख हो। सुनो--

"अशक्तस्तु भवेत्साधुर्ब्रह्मचारी च निर्धनः।
व्याधितो देवभक्तश्च,वृद्धा नारी पतिव्रता॥
आर्ता देवान्नमस्यन्ति तपः कुर्वन्ति रोगिणः॥
निर्धना दानमिच्छन्ति वृद्धा नारी पतिव्रता॥

और सुनो--

आदौ वेश्या पुनर्दासी पश्चाद्भवति कुट्टिनी।
सर्वोपायपरिक्षीणा वृद्धा नारी पतिव्रता॥"

परन्तु हे मूर्ख मित्र ! यह तुम्हारा भी अपराध नहीं है। यह तुम्हारी दामाद-जातिकी बलिहारी है, क्योंकि—

(मुन्शी बरबाद गुस्सेसे बेक़ाबू हो जाता है और उसे गिराकर उसकी पगड़ीसे उसकी टांगे बांधकर घसीटता हुआ बाहर ले जाता है और भकभकानन्द उसी धुनमें श्लोक पढते चलेजाते हैं और उंगलियोंपर गिनते हैं)

भक०—क्योंकि—

"सदा वक्रः सदा रुष्ट. सदा पूजामपेक्षते ।
कन्याराशिस्थितो नित्य जामाता दशमो ग्रह. ॥
आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे यथा तुष्यन्ति दानतः ।
सर्वस्वेपि न तुष्येत जामाता दशमो ग्रहः ॥

(पर्दा गिरता है)

पहला दृश्य

मुन्शी बरबादके मकानका बाहरी हिस्सा

(घरबिगाड़ और भण्डाफोड़)

घरबिगाड़—ओफ ओ ! रात इतनी अन्धेरी है कि अपना ही हाथ नहीं दिखाई देता। अरे भण्डाफोड़ ! अब बता किधर चलें ?

भण्डाफोड—जरा आप मेरा हाथ पकड़े रहियेगा नहीं तो मैं इस अंधियालीमें जरूर खो जाऊँगा।

घरबिगाड़—मगर इस वक्त दिलाराम मिलेगी ?

भण्डाफोड़—यही मैं आपसे पूछनेवाला था कि इस वक्त उलझन मिलेगी ?

घरबिगाड़—दिलारामके मकानके पास पहुंच तो गये मगर अब क्या करें ?

भण्डाफोड़—बस चुपचाप घर लौट चलिये। मगर रास्तेमें जो कहीं गिरियेगा तो बताके गिरियेगा ताकि मैं न आपके ऊपर भहरा पड़ूं।

घरबिगाड़—*(सीटी बजाता है)* अगर बुड्ढा सो गया होगा, तो दिलाराम जरूर आयेगी।

भण्डाफोड़—ईश्वर करे मर गया हो।

घरबिगाड़—चुप! पैरकी आहट मालूम होती है।

(दिलाराम और उलझनका दरवाजा खोलकर बाहर आना)

दिलाराम—उलझन!

उलझन—जी।

दिलाराम—दरवाजा आधा खुला रखना।

उलझन—आधा खुला है।

(अंधियालीमें सब एक दूसरेकी तरफ देखते है)

घरबिगाड़—देख, भण्डाफोड़ आ गई।

भण्डाफोड़—अन्धेरेमे वहीं उलझन मुझको मार न बैठे।

घरबिगाड़—चुप, धीरेसे बोल।

दिलाराम—चुप!

घरबिगाड़—*(उलझनको दिलाराम समझकर)* प्यारी!

दिलाराम—*(भण्डाफोडको घरबिगाड़ समझकर)* आपने बड़ी तकलीफ़ की।

उलझन—*(घरबिगाडको भण्डाफोड़ समझकर)* मूए, घूसा क्यों पड़ता है?

भण्डाफोड़—(*दिलारामको उलझन समझकर*) अरी मेरी उलझन ! बस इसी बातपर शादी कर ले।

घरबिगाड़—कौन उलझन ?

दिलाराम—कौन भण्डाफोड़ ?

घरबिगाड़—दिखाई तो कुछ देता नहीं। दिलाराम, तुम कहाँ हो ?

दिलाराम—यह हूँ मैं।

भण्डाफोड—अररर ! मेरी उलझन किधर गई ?

(*सरकके दूर निकल जाता है*)

घरबिगाड़—आओ एक तरफ चलके बैठें। (*तीनों एक किनारे जाके बैठते हैं*)

(*मुन्शी बरबादका मकानसे निकलना*)

मुन्शी बरबाद—उस हरामजादी औरतने तो नाकोंमें दम कर दिया। किसीकी रात किसीकी बग़लमें कटती है और किसीकी रात पहरा देते हुए कटती है। बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है। मगर इतनी जल्दी ग़ायब किधर हो गयी ?

भण्डाफोड़—(*उलझनको ढूंढ़ता ढूंढ़ता मुन्शी बरबादके पास पहुंचता है और उन्हींको उलझन समझकर कहता है*) अरी उल झन ! तुम कहाँ गायब हो गयी थी। यह तो ज़रा

बता दो कि वह कम्बख्त बुड्ढा मुन्शी बरबाद—ईश्वर उसका सत्यानाश करे—खूब बेखबर सो रहा है न? उस उल्लूको तो नहीं मालूम कि उसकी बीबी इस वक्त घरबिगाड़के साथ बैठी हुई प्यारकी बातें और लगावटकी घातें कर रही है। वह बुड्ढा इसी काबिल है। सोने दो खूब कम्बख्तको खर्राटे भर-भरके। मगर एक रोज उसकी मनहूस सूरत मुझको भी दिखा दो उलझन। मैं भी उसको जरा पहचान लूं। उलझन बोलती क्यों नहीं? अरे! एक प्यार जरा दे दो। (*मुन्शी बरबादसे लिपटता है और चूमता है, दाढ़ी छूकर*) धत तेरी की। घण्टे भरसे मैं बातें कर रहा हूँ और यह मुँह उल्टा किये खड़ी है। (*दूसरी तरफ जाकर उसकी पीठसे लिपटता है। मुन्शी बरबाद ढकेल देता है*) अरे! बापरे। तेरा सत्यानाश हो।

मुन्शी बरबाद—तू कौन है?

भंडाफोड—कोई नहीं।

(*भाग जाता है*)

मुन्शी बर०—वह कम्बख्त भाग तो गया, मगर यह बता गया कि वह मेरी हरामजादी औरत इस वक्त फिर नया रंग लाये हुए है। मैं अभी-अभी इसी दम उसके मां बापको बुला भेजता हूँ और इस दफे जरूर जरूर उससे

भरपूर बदला लेता हूँ और उसका कमीनापन उसके माँ-बापको दिखाता हूं।……डीवट, ओ डीवट !

(डीवट खिड़कीपर दिखाई देता है)

डीवट—(*खिड़की पर*) कौन सरकार ?

मुन्शी बर०—जल्दी आ नीचे।

डीवट—(*खिड़कीसे कूदकर*) अब इससे जल्दी क्या हो सकती है ?

मुन्शी बर०—कहां है तू ?

डीवट—यहां हुजूर। (*जिस तरफसे डीवटकी आवाज़ आयी थी, उसी तरफ मुन्शी बरबाद जाता है। मगर डीवट दूसरी तरफ जाकर सो जाता है।*)

मुन्शी बर०—(*जिधरसे डीवटकी आवाज आयी थी*) धीरेसे बोल कम्बख्त। सुन। तू अभी मेरे सास-ससुरके पास जा और उनसे मेरी तरफसे हाथ जोड़के कहना कि अभी इसी दम चले आवें। समझा ? अबे सुनता है कि नहीं ? डीवट !

डीवट—(*दूसरी तरफसे जगकर*) हुजूर !

मुन्शी बर०—अबे किधर है तू ?

डीवट—यहाँ।

मुन्शी बर०—उल्लू कहींका। मुझसे भागना क्यों है

इस तरहसे ? (*मुंशी बरबाद उधर जाता है जिधरसे डीवट-की आवाज आई थी और डीवट ऊंघता हुआ फिर दूसरी तरफ जाकर सो जाता है*) तू फौरन मिस्टर धरपकडके पास दौड़ जा और अभी उनको साथ लेता आ। समझा ? डीवट बोलता क्यों नहीं ?

डीवट—(*दूसरी तरफसे जगकर*) हुजूर।

मुन्शी बर०—मर कम्बख्त इधर आ। (*दोनों आपसमें टकराके गिरते हैं*) अरे ! बापरे ! रह हरामजादे ! ऐसी मार मारता हूँ कि तू भी याद करेगा। इधर आ।

डीबट—नहीं हुजूर।

मुन्शी बर०—अबे आता है कि नहीं ?

डीवट—आप मारेंगे।

मुन्शी बर०—नहीं मारूंगा। आ।

डीवट—अपनी कसम ?

मुन्शी बर०—और नजदीक आ। (*डीवटको पकड़कर*) दौड़ता हुआ मेरे सास-ससुरके पास जा और उनसे कहना कि एक बड़ी जरूरत आ पड़ी है। फौरन चले आवें। साथ लेते आना। समझा ?

डीवट—हां।

मुन्शी बर०—अच्छा दौड़ जा। (*अपनेको अकेला समझकर*)

अब मैं मकानके भीतर जाता हूं। जबतक—मगर यहां कोई बातें कर रहा है। यह तो मेरी बीबीकी आवाज है। हां वही हरामजादी है। छिपकर सुनूं क्या कहती है।

(मुन्शी बरबाद अपने मकानके दरवाजेके पास खड़ा होके सुनता है)

दिलाराम—अच्छा, अब जाती हूँ। वह अब जागने-ही वाला होगा।

घरबिगाड़—क्यों अभीसे ?

दिलाराम—बहुत देर हो गयी।

घरबिगाड—हाय ! मैं कैसे अभी आपको जाने दू ? अभी तो कुछ अपने दिलका हाल कहा ही नहीं।

दिलाराम—ईश्वरने चाहा तो फिर मुलाक़ात होगी।

घरबिगाड़—मगर इस वक्त मेरे दिलकी क्या हालत होगी ?

मुन्शी बर०—(*अलग*) और इस वक्त मेरे दिलकी क्या हालत हो रही है ?

घरबिगाड़—मुझे तो यह ख्याल मारे डालता है कि आप फिर उस बुड्ढे क़म्बख्तके पास जा रही हैं।

मुन्शी बर०—(*अलग*) रह हरामजादे।

दिलाराम—इसमें मेरा क्या क़सूर ? मां-बापने जबर-दस्ती शादी कर दी और तुम्हें डाह करनेकी कोई वजह
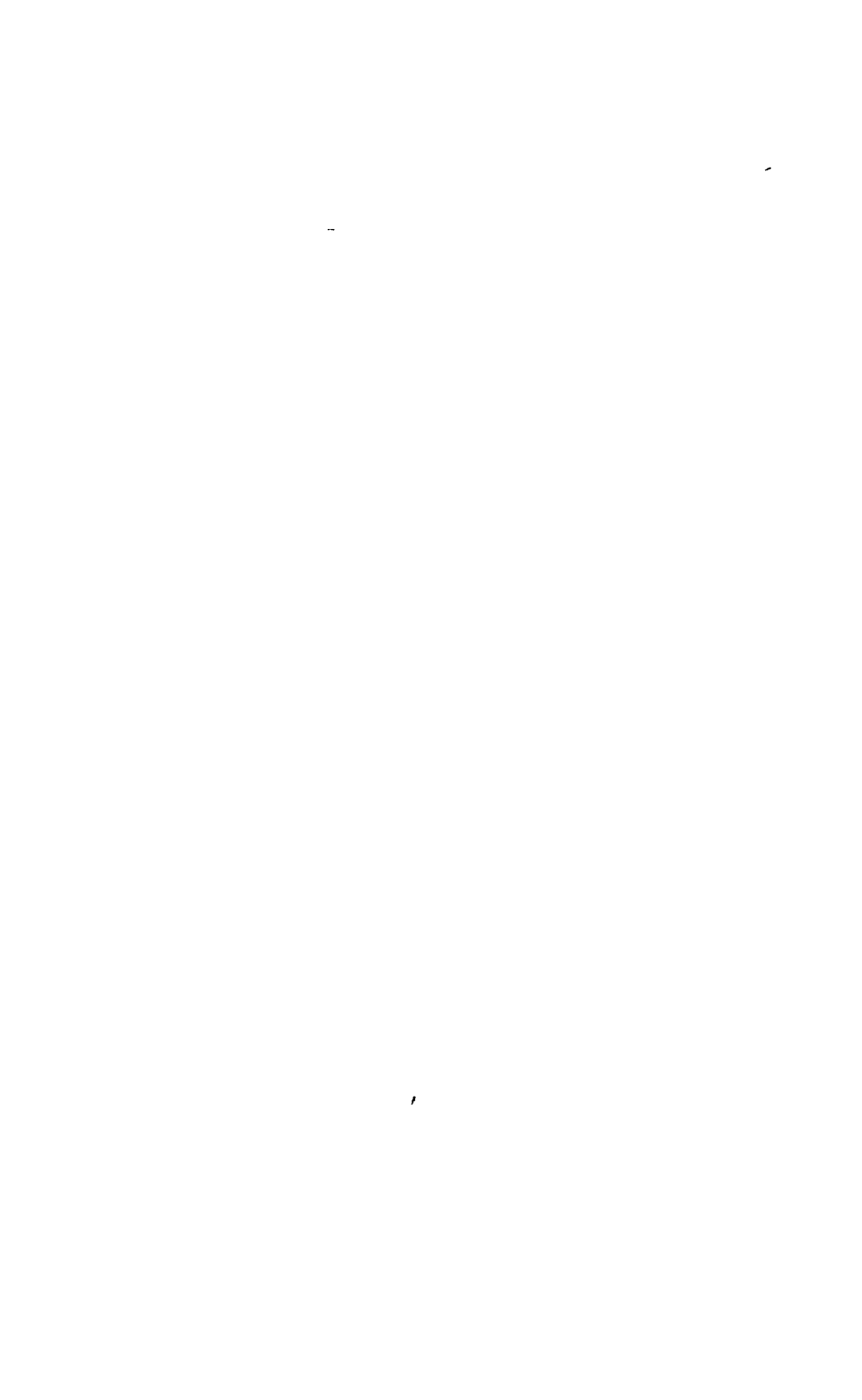
जवानी बनाम बुढ़ापा

जिस तरहसे बुड्ढे हम लोगोंके साथ ब्याह करके हमारी जिन्दगी खराब करते है। उसी तरहसे हमलोग भी इनकी आँखोमे धूल झोंककर इनको खूब उल्लू बनाती है।

[पृष्ठ १४६
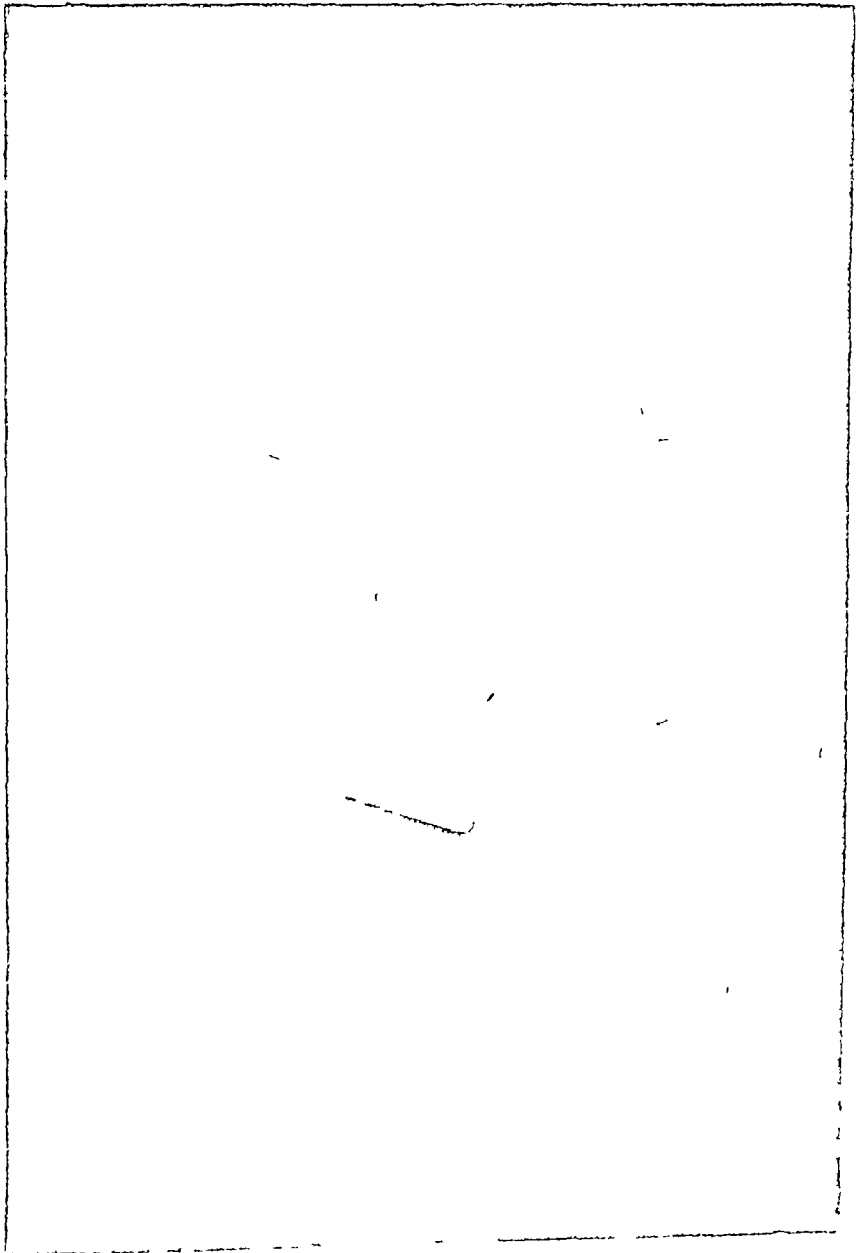
भी नहीं है। मुझे वह एक आंख नहीं भाता । भला कौन नई नवेली बुड्ढे मर्दको प्यार कर सकती है ? जिस तरहसे बुड्ढे हमलोगोंके साथ व्याह करके हमारी जिन्दगी खराब करते हैं, उसी तरहसे हम भी इनकी आंखोंमें धूल झोंक-कर इनको खूब उल्लू बनाती हूँ।

मुन्शी बर०—(*अलग*) शाबाश! लो और सुनो। बुढापे की शादीका यही नतीजा है।

घरबिगाड—मगर मेरी तो यह देखके छाती फटती है कि कहां आप और कहाँ वह बुड्ढा! आप कभी भी उसके लायक न थीं।

मुन्शी बर०—(*अलग*) कहीं यह तेरी जोरू होती तब तुझे मालूम होता कम्बक्त। अच्छा, घबड़ाओ नहीं। अभी तुम दोनोंको इसका मजा चखाता हूँ। जाकर भीतरसे दरवाजा बन्द किये लेता हूँ। बीवी साहबा, अब रहो रात-भर बाहर ताकि तुम्हारी नेकचलनी जरा तुम्हारे बाप भी आकर देख लें।

(*मुन्शी बरबाद भीतरसे दरवाजा बन्द कर देता है*)

उलझन—देखो बीवी, कितनी देर हो गयी। मेरा कलेजा कांप रहा है। कहीं वह जग न गये हों।

घरबिगाड—अरे! उलझन! यह क्या जुल्म करती है तू?

दिलाराम—अच्छा अब जाने दो।

घरबिगाड़—क्या जाने दूं ? दिल तो लिये जाती हो।

दिलाराम—सलाम ।

घरबिगाड़—प्यारी सलाम ।

(घरबिगाड़का जाना)

दिलाराम—आओ चुपचाप भीतर हो रहें ।

उलझन—दरवाजा बन्द है ।

दिलाराम—मेरे पास चाभी है ।

उलझन—आवाज न होने पावे ।

दिलाराम—भीतरसे बन्द है। या ईश्वर अब क्या करूं ?

उलझन—आहिस्तेसे डीवटको पुकारो।

दिलाराम—डीवट ! डीवट ! डीवट !

(खिडकीपर मुन्शी बरबादका दिखाई पड़ना)

मुन्शी बर०—*(मुंह चिढाता हुआ)* डीवट ! डीवट ! यह कौन पुकारता है इस वक्त ? अखखा ! आप हैं ? आदाबर्ज है मेरी नेकचलन बीबी साहबा ! अब जरा बताइये तो मिजाज कैसा है आपका ? हर दफे आप मुझे बेवकूफ बनाकर बाजी मार ले जाती थीं। अब आज कहिये कौनसी चाल चलियेगा ?

दिलाराम—अररर ! यह क्या ? जरा इस वक्तकी ठंढी हवा खाने बाहर निकल आई तो उसमें हुई क्या बुराई ?

मुन्शी बर०—जी हाँ ! आपके हवा खानेका यही तो वक्त है। हवा खाने गई थीं कि यार लोगोंसे गुलछर्रे उड़ाने। मैं सब देख चुका हूँ। मेरी तारीफमें जो-जो बातें आप लोगोंने की हैं वह भी सुन चुका हूँ। आज ही तो पकड़ मिली हैं आप। घबड़ायें नहीं। जरा आने दीजिये अपने मां-बापको। दोनोंको मैंने बुलावा भेजा है। आते ही होंगे अभी।

दिलाराम—या ईश्वर !

उलझन—अरे बापरे बाप !

मुन्शी बर०—अब जिगर थामके बैठो मेरी बारी आई। बीबी साहबा ! आप बहुत मुझे उल्लू बनाती थीं। हर दफे आप अपनी चालाकीसे मुझे झूठा साबित करती थीं। अपने मां-बापकी आंखोंमें खूब ही धूल झोंकती थीं। मेरी सचाई हर बार आपकी चालाकीके नीचे दब जाती थी। मगर आज सारी कलई खुलेगी। आज ही तो आपको मालूम होगा कि सौ सुनारकी और एक लोहारकी दोनों बराबर है।

दिलाराम—हाथ जोड़ती हूँ। मुझे भीतर आने दो।

मुन्शी बर०—नहीं नहीं। जरा और ठढी-ठंढी हवा खा लीजिये ताकि आपके मां-बाप भी तो आकर आपकी यह अनोखी हवाखोरीका तमाशा देख ले। जबतक आप उनको धोखा देने और अपनी नेकचलनी साबित करनेके लिये कोई चाल चलिये। कोई बहाना निकालिये कि रात्रि-पूजा करने गयी थीं या किसी लंगोटिया पीरको बताशे चढ़ाने गयी थीं।

दिलाराम—नहीं, अब बहाना करनेसे क्या होगा? अब मैं कोई बहाना न करूँगी। क्योंकि अब तो तुमसे कुछ छिपा नहीं है।

मुन्शी बर०—हा हां, अब क्यों न आप ऐसा कहेंगे क्योंकि कोई बचतकी राह अब दिखायी नहीं पडती।

दिलाराम—मैं मानती हूँ। अब तो मुझसे कसूर हो ही गया। मगर तुमसे मैं मिन्नत करती हूं कि मेरे मा-बाप से यह बात मत कहो, जल्दी दरवाजा खोल दो।

मुन्शी बर०—अभी खोलता हूँ। बस जरा और सब्र करो। वे आ ही रहे होंगे।

दिलाराम—नहीं मेरे प्यारे, मुझे बचा लो। हाथ जोडती हूँ।

मुन्शी बर०—"मेरे प्यारे" अय है । आजतक तो तुमने कभी मेरे लिये इन रसीले शब्दोंको सपनेमे भी नहीं इस्त· माल किया था ।

दिलाराम—मैं कसम खाती हूँ कि मैं भूलकर भी तुम्हे कभी अब नाखुश होनेका मौका न दूंगी ।

मुन्शी बर०--माफ कीजिये । मैं इन लच्छेदार वातोंमे नहीं आनेका । मैं आपकी इस नेकचलनीका तमाशा आपके मां बापको विना दिखाये हुए मानूगा नहीं ।

दिलाराम—मगर ईश्वरके लिये मेरी एकवात तो सुन लो । वस, एकही वात ।

मुन्शी बर०—अच्छा कहिये कहिये ।

दिलाराम—वेशक, मैंने गल्ती की । मैं अपने कसूरको मानती हूँ और इकवाल करती हू कि मैंने वडा भारी कसूर किया। मैं क्या करू ? जवानीकी उमगने मेरी समझकी आंखोंपर थोड़ी देरके लिये पर्दा डाल दिया और मैं तुम्हे सोया हुआ छोड़कर उस आदमीसे मिलनेके लिये निकल खड़ी हुई ।......

मुन्शी बर०—जी हा, बुढापेकी शादीका यही नतीजा है कि बूढ़े मिया घरकी रखवाली करे और बीवी हवा खाने जाये ।

दिलाराम—मगर अब मेरी आंखे खुल गयीं। मैं अपने क़सूरोंकी माफी चाहती हूॅ। मेरे पापी मनको माफ कर दो और मुझे बुराईसे बचा लो, क्योंकि अभीतक केवल मन ही मेरा पापी है, जीव नहीं, आत्मा नहीं, शरीर नहीं। ऐसीलिये तुमसे बारबार प्रार्थना करती हूं कि मेरे अपराधों को क्षमा करके मुझे बुराईसे बचाओ। भलाईका रास्ता दिखाओ। मुझे अपने भूले हुए कर्त्तव्योंका फिरसे पालन करने दो। मैं तुमसे कुछ नही चाहती। बस यही कि मुझे मां-बापके कोपसे बचा लो। द्वार खोलो। शरण दो। मैं तुम्हारी तन-मन-धनसे सेवा करूंगी। सम्पूर्ण हृदयसे तुम्हे अब प्यार करूंगी। द्वार खोलो।

मुन्शी बर०—धन्य हो मेरी पतिव्रता स्त्री, धन्य हो।

दिलाराम—बस बस, अब ज्यादा संस्कृत न छांटो।

मुन्शी बर०—तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातोंमें मेरा ईमान फिसला जाता है।

दिलाराम—मुझपर दया करो।

गाना

दिलाराम—*सइया सइयां अपराध करो मेरा क्षमा।*

कर जोड़े खडी हूॅ मैं पिया,

हे नाथ करो अब तो दया।

दासी तुम्हारी हूँ नारी अपराधी हू रह-रह पछताती हूँ—
कर दो क्षमा। सइयां सइया—
तुम हो मेरे नाथ गुसइया, तुमपर मैं जाऊंगी बारियां।
बलिहारियां। सइयां गुसइया पे जाउं।
वारी बारियां,

मुन्शी बर०—(*उंगलियोंसे अपने दोनों कान बन्द कर लेता है*) बस! चुप! चुप! यहां *Heart fail* हुआ जाता है।

दिलाराम—यह अभागिनी तुम्हारी ही स्त्री है, मत दुतकारो।

मुन्शी बर०—उफ! चुप।

दिलाराम—हाथ जोड़ती हूँ।

मुन्शी बर०—नहीं नहीं, मैं कुछ न सुनूंगा।

दिलाराम—पाव पड़ती हूँ। शरण दो।

मुन्शी बर०—कभी नहीं।

दिलाराम—नहीं नहीं, इस तरह मुझे हताश मत करो। नहीं, मैं बताये देती हूं, कि स्त्री मेरी ऐसी दशामें जो न कर बैठे वही थोडा है। मैं भी जो अपनी हठपर आऊँगी तो ऐसी कोई बात कर बैठूँगी कि तुम बहुत पछताओगे।

मुन्शी बर०—(*कानोंसे उंगली हटाकर*) कौन-सी

बात कह बैठोगी, जरा मैं भी तो सुनूँ ?

दिलाराम—मैं अपनी जानपर खेल जाऊँगी और इसी जगह इस छुरीको अपने कलेजेमें भोंककर जान दे दूंगी।

मुन्शी बर०—आहाहा ! बहुत अच्छा।

दिलाराम—नहीं,यह हँसनेकी बात नहीं है। हमलोगों-के लड़ाई-झगडेका और तुम्हारी निर्दयता और कठोर व्यवहारका हाल किसीसे छिपा नहीं है और जब ये लोग मुझे यहाँ मुर्दा देखेंगे तो सब यही समझेंगे और कहेंगे कि इसीने अपनी औरतको मार डाला है और मेरे बाप ऐसे आदमी नहीं है कि मेरी मौतका बदला न ले। वे तुम्हे जरूर-जरूर फासी दिलवा देगे और इस तरहसे तुम्हारी इस कठोरता और निर्दयताका बदला मरकर लूँगी। बलासे मेरी जान जायगी। मगर समझ रखो, इसीके साथ तुम्हारी भी जान जायेगी।

मुन्शी बर०—बीबी साहबा, खुदकशी करनेका अब फैशन नहीं रहा। वह जमाना गया। आजकल जान बड़ी प्यारी होती है।

दिलाराम—अब भी दरवाजा खोल दो। नहीं तो मैं सच कहती हूँ, कसम खाकर कहती हूँ कि अभी मैं छातीमे छुरी भोंके लेती हूँ।

मुन्शी बर०—वाह ! वाह ! यह धमकी बेकार और बेअसर है।

दिलाराम—अच्छा तो यही सही। तुम्हारी यही खुशी है तो बस,यह लो। *(खुदकशी करनेका बहाना करती है)* हाय बाप रे ! मर गई। या ईश्वर मेरी मौतका बदला भरपूर लेना। जिस निर्दयीकी कठोरताके कारण मेरे प्राण गये, वह ईश्वर करे छे महीनेमें फांसी पावे।

मुन्शी बर०—आयं ! आयं ! क्या मुझे फांसी दिलाने के लिये इस पाजीने सचमुच जान दे दी ? अच्छा, बत्ती लेकर अभी जाकर देखता हूँ।

(मुन्शी बरबादका खिड़कीपरसे गायब होना)

दिलाराम—(उलझनसे) बस अब आओ, जल्दीसे चुपचाप दरवाजेके दोनों तरफ खड़े हो जायें।

(दरवाजा खोलकर मुन्शी बरवाद हाथमें मोमबत्ती लिये हुए बाहर निकलता है वैसे ही दिलाराम और उलझन चुपकेसे मकानके भीतर घुस जाती हैं और भीतरसे दरवाजा बन्द कर लेती हैं)

मुन्शी बर०—भला उस हरामजादीने क्या सचमुच जान दे दी होगी? (इधर-उधर देखकर) अयं ! कोई भी नहीं,

आहा ! मैं पहले ही समझ गया था। जब उस पाजीने देखा कि न खुशामदसे काम चलता है और न धमकीसे, तो भाग गई। चलो खूब हुआ। झगड़ा पाक हुआ,मगर उसके हकमे बुरा हुआ। उसके मा-बापको अब उसकी बदमाशी और पाजीपनका अच्छी तरहसे यकीन हो जायेगा। *(घर जानेके लिये लौटता है)* अयं ! दरवाजा बन्द है। अरे ! यह किसने दरवाजा बन्द कर दिया।

(दिलाराम और उलझनका खिडकीपर दिखाई देना)

दिलाराम—क्यों जनाब, यह रातभर आप कहा रहे ? सारी रात बिताके अब घर आ रहे है आप ?

उलझन—रहे कहा ? वहीं जहा रोज रहते हैं। रण्डी के घरमें या शराबखानेमें। आज कोई यह नई बात थोड़ी ही है।

मुन्शी बर०—आयं ! यह क्या ? ....

दिलाराम—बस बस, चुप रहो। चले जाओ वहीं जहां अबतक रहे। रोज-रोज मै कहांतक सहूँ। आने दो मेरे मा-बापको। तुम्हें शराबखोरी और रण्डीबाजीका मजा चखाती हूँ।

मुन्शी बर०—आयं ! उल्टा चोर कोतवालको डाटे। तुम्हारी हिम्मत—

(डीवटका मिस्टर और मिसेज धरपकड़के साथ लालटेन लिये हुए आना)

दिलाराम—(*मिस्टर और मिसेज धरपकड़से*) आइये आइये, जरा इनके कमीनापन और पाजीपनका तमाशा देखिये और मेरी फूटी क़िस्मतपर दो-दो आसू बहाइये। सारी रात रण्डीके घर और शराबखानेमें बिताकर अब घर आ रहे हैं। कहातक सहूं और कबतक सहू? एक दिन दो दिनतक हो तो सहूं। नित यही हाल है। आप खुद अपनी आखोंसे देख लीजिये। इसीके लिये जब मना करती हूँ तो उल्टे मेरी झूठी शिकायत आपसे करते हैं। इस वक्त भी यही धमकी दिखाते थे कि चुपचाप दरवाजा खोल दो नहीं तो अभी तुम्हारे मां-बापको बुलाता हूँ और कहता हूँ कि जब मैं सो गया था तब यह दोनों न जाने रातको घरके बाहर कहां गयी थीं। अब आप ही इन बातोंको देखिये और फैसला कीजिये।

मुन्शी बर०—(*अलग*) अरे हरामजादी!

उलझन—खुद रात-रातभर जूआ खेलें, शराब पीये और ईश्वर जाने बाहर कौन-कौनसा कुकर्म करें और मेरी बेचारी भोलीभाली मलकिन घरमें अकेली सारी रात रो-रोकर काटें और ऊपरसे उल्टे यह धमकी दिखायें कि तुम

घरके बाहर थी और मैं घरके भीतर था। इस झूठकी भला कोई हद भी है?

मिस्टर धर०—क्यों हजरत, यह आपका क्या हाल है?

मिसेज धर०—यह बदमाशी और उसपर यह हिम्मत कि हमलोगोंको बुला भेजा।

मुन्शी बर०—नहीं, यह बात नहीं।

दिलाराम—नहीं, अब मैं इनके साथ नहीं रह सकती। जान दे दूंगी मगर अब इनके साथ एक घड़ी भी नहीं रहूँगी। सहते-सहते मेरा कलेजा अब पक गया।

मिस्टर धर०—थुड़ी है तुमपर। अफसोस!

उलझन—बुढ़ापेमें यह करनी! छि! छि! एक तो बुढ़ापेके कारण सठिया गये दूसरे गांजा, भंग, चरस और शराबने बिल्कुल अक्ल मार दी है।

मुन्शी बर०—क्या यह लोग—

मिस्टर धर०—बस, बको मत। डूब मरो जाकर चुल्लू-भर पानीमें। मुँह दिखाते शर्म नहीं मालूम होती?

मुन्शी बर०—बस, एक बात मेरी सुन लीजिये।

दिलाराम—देख लीजिये, वही बात कहेंगे।

मुन्शी बर०—(*अलग*) हाय! अब मैं क्या करूं?

उलझन—उफ! बाप रे बाप! कितनी शराब पी है

इन्होंने आज। इसकी बदबू यहां तक आ रही है। जरा आप लोग इनसे हटके खड़े होइये।

मुन्शी बर०—जनाब ससुरजी, मैं मिन्नत करता हूँ।

मिस्टर धर०—सचमुच बडी बदबू आ रही है। दूर हटके खड़े हो।

मुन्शी बर०—सास साहबा, मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ।

मिसेज धर०—ख़बरदार! मेरे पास आओगे तो मैं मुँह नोच लूँगी। झूठे दग़ाबाज़ बेईमान कहींके। बहुत सताया उस वेचारीको तुमने और ऊपरसे हमलोगोंको बराबर धोखा देते रहे। आजसे तुम्हारी कोई बात नहीं सुनी जायगी।

मुन्शी बर०—(*मिस्टर धरपकड़से*) आप मेरी—

मिस्टर धर०—अलग अलग। बेशक, तुम बड़े झूठे हो।

मुन्शी बर०—(*मिसेज धरपकड़से*) ईश्वरके लिये एक बात—

मिसेज धर०—बस, दूर रहो।

मुन्शी बर०—मैं दूरहीसे कहता हूं। सुनिये! ईश्वरकी कसम खाकर कहता हूँ, मैं घर छोडकर कहीं भी नहीं गया—यही घरके बाहर गयी थी। मैं तो सोता था।

दिलाराम—देख लीजिये, मैंने पहले ही कहा था।

उलझन—अब आप ही इनसाफ कीजिये, कौन सच है और कौन झूठ।

मिस्टर धर०—बड़े बेशर्म हो। बडे दग़ाबाज हो। अब हमलोग तुम्हारे चकमेमे आ नहीं सकते। आ बेटी, तू यहाँ आ।

(*खिड़कीपरसे दिलाराम और उलझनका गायब होना*)

मुन्शी बर०—ईश्वरकी कसम मैं घरमे था।

मिस्टर धर०—बस चुप रहो। गुस्सा मत दिखाओ।

मुन्शी बर०—अगर झूठ कहता होऊँ तो मुझपर आस्मान फट पड़े।

मिस्टर धर०— बस, बको मत। भलाई इसीमे है कि तुम अपनी स्त्रीसे माफी मांगो।

मुन्शी बर—मैं माफी मांगूँ।

मिस्टर धर०—हां तुम और अभी माफी मांगो।

मुन्शी बर०—क्या मैं—

मिस्टर धर०—बस, और कोई बात सुनना नहीं चाहता। माफी मांगो नहीं तो तुम्हारी बदमाशी और दगाबाजीका नतीजा अभी दिखा दूँगा।

मुन्शी बर०—(*अलग*) आह! मुन्शी बरबाद! मियां-की जूती मियाँके सर। बुढ़ापेकी शादीका यही नतीजा है।

(दरवाजा खोलकर दिलाराम और उलझनका बाहर आना)

मिस्टर धर०—आओ बेटी, इधर आओ ताकि मुन्शी बरबाद मेरे सामने तुमसे माफी मागे।

दिलाराम—क्या मै इनको माफ करूंगी? इतनी गालियां खा चुकनेपर? यह दुर्दशा सहनेपर? कभी नहीं। मैं इनके यहाँ अब एकदम नहीं ठहर सकती। मैं इनका अब मुंह न देखूंगी। मुझे ले चलिये आप अपने साथ।

उलझन—और नहीं तो क्या? यहाँ क्या बेचारी जान देगी?

मिस्टर धर०—नहीं बेटी, ऐसा न करो। इसमे बद-नामी होगी।

दिलाराम—और उन्होंने क्या मुझे कम बदनाम किया है? उससे बढ़कर अब क्या बदनामी होगी? नहीं, मैं अब इनके साथ नहीं रह सकती।

मिस्टर धर०—नहीं बेटी, तुमको रहना पड़ेगा। मेरा कहना मानो।

दिलाराम—जब आपकी मर्जी नहीं है तो मेरी क्या मजाल कि चूं कर सकूं?

उलझन—बेचारी कैसी सीधी है।

दिलाराम—आपका कहना मानना मेरा परम धर्म है।

उलझन—हाय! हाय! बेचारी गऊ है गऊ। तीन पाच कुछ नहीं जानती।

मिस्टर धर०—और नजदीक आओ बेटी दिलाराम।

दिलाराम—मगर इससे फायदा क्या? कलको फिर यही मुसीबत शुरू होगी।

मिस्टर धर०—नहीं, घबड़ाओ नहीं, अब यह नौबत कभी नहीं आयेगी। मुन्शी बरबाद! चलो अपनी स्त्रीके पैरोंपर गिरकर माफी मांगो।

मुन्शी बर०—पैरोंपर गिरूं?

मिस्टर धर०—हां हां, जल्दी करो। खैरियत इसीमें है।

मुन्शी बर०—(*अलग*) या ईश्वर! मियांकी जूती मियाके सर। (*हाथमें मोमबत्ती लिये हुए दिलारामके पैरोंपर गिरता है*) (*धरपकड़से*) आप क्या कहलाना चाहते हैं?

मिस्टर धर०—श्रीमती देवीजी, मैं आपसे माफी मांगता हूँ।

मुन्शी बर०—श्रीमती देवीजी, मैं आपसे माफी मांगता हूं।

मिस्टर धर०—उस बेवकूफीके लिये जो मैंने की है।

मुन्शी बर०—उस बेवकूफीके लिये जो मैंने की है।

(*अलग*) बुढ़ापेमें तेरे साथ शादी करनेमें।

मिस्टर घर०—और कान पकड़ता हूं कि कभी फिर ऐसी बेवकूफी न करूंगा और आइन्दा तुम्हारे साथ अच्छा बरताव रखूंगा।

मुन्शी बर०—कान पकड़ता हूँ कि कभी फिर ऐसी बेवकूफी न करूँगा और आइन्दा तुम्हारे-साथ अच्छा बर-तावो रखूंगा।

मिस्टर घर०—खबरदार! याद रखना, अब जो तुम्हारी कोई बेतुकी बात सुनी तो जानो तुम्हारी खैरियत नहीं।

मिसेज घर०—और जो मैं कहीं कुछ भी सुन पाऊँगी तो अब न मानूँगी और तुम्हें कच्चा खा जाऊँगी।

(*दूसरे मकानकी खिडकीका खुलना और उसपर भकभकानन्दका दिखाई पडना*)

भक०—अय, क्या फिर लड़ाई! फिर झगड़ा! फिर उपद्रव! फिर कलह! कोई घडी चैन नहीं। तनिक देर विश्राम नहीं। जब देखो तब कुटम्बस! चपेतघात! मारा-मारी! उठापटक! अयं?

मिस्टर घर०—कुछ नहीं, मियाँ-बीबीकी लड़ाई थी। सुलह करा दी। अब कोई झगडा नहीं है।

भक०—नहीं, इन दोनोंको व्याकरण पढा दीजिये तब फिर कभी कोई झगड़ा नहीं होगा। हे मूढ़ मित्र, जबतक व्याकरण न पढ़ोगे तबतक तुम महा उल्लू रहोगे। इसीलिये इधर आओ, हम तुम्हें अभी सिद्धान्तकौमुदी पढा दें और आप लोग भी खड़े-खडे सुनिये।

मिस्टर धर०—कै सफेका है ?

झक०—चार सौ पचहत्तर पन्नेका। अभी समाप्त कर दूँगा।

मिस्टर धर०—माफ कीजिये जनाब इस वक्त। मुन्शी बरबाद! अब हमलोग जाते हैं। मगर अब देखो, अपनी औरतको हमेशा खुश रखना। समझे ?

भक०—आहाहा! स्त्रीको मोहित करनेका उपाय तुम नहीं जानते। इसीसे कहता हूँ व्याकरण पढो। सुनो—

"हसता लभ्यते नारी रुदता लभ्यते धनम्।
पठता लभ्यते विद्या त्यजता लभ्यते यशः॥"

(मिस्टर और मिसेज़ धरपकडका जाना। दिलाराम और उलझनका मकानके भीतर जाना)

भक०—अयं! सब चल दिये बिना इस श्लोकका अर्थ सुने हुए।

मुन्शी बर०—आह! मुन्शी बरबाद! जाओ, जैसा

किया वैसा भुगतो। उसकी चालाकीके आगे तुम्हारी कभी दाल नहीं गल सकती। तुम्हारे लिये मुनासिब यही है कि गलेमे चक्की बाधके गंगामे डूब मरो। बुढ़ापेमें शादी और ख़ास कर ऐसी औरतके साथ करनेका यही नतीजा है। छोडो उसे उसकी मर्ज़ीपर। जैसा उसके जीमें आवे वैसा उसको करने दो। जवानीके आगे बुढ़ापेकी चल नहीं सकती।

भक०—क्या वडवडाते हो? बुढ़ापेका ब्याह। आहाहा! सुनो!

"अनभ्यासे विषं शास्त्रं अजीर्णे भोजन विषं।
मूर्खस्य च विषं गोष्ठी वृद्धस्य तरुणी विषं॥"

क्यों? इसकी कहानी भी सुनाता हूँ। रुको जरा पोथी ले आऊं।

(खिड़कीपरसे गायब होता है)

मुन्शी बर०— यहा रोज ही यही होता है। चलो मुन्शी बरबाद, मुंह लपेटके पड रहो। समझो कि आजसे तुम्हारे आख-कान कुछ भी नहीं है। *(जाता है)*

[ड्रापसीनका गिरना और तमाशेका खतम होना]

❀ समाप्त ❀

मीठी हँसी

ले०—श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल० एल० बी०

यथा नाम तथा गुण—प्रत्येक शब्द रोतेको हँसानेवाले और
हृदयको गुदगुदानेवाले है। इसमें तीन खण्ड है।
खण्ड क्या है, तीन प्रकारके आमोदके खजाने
हैं। किसीमे हँसीका आनन्द है तो
किसीमें कविताओंकी बहार।
अन्तमे मनोहर गानों
से सूखा
हृदय भी
पनप उठता है।
गरज यह कि पुस्तक क्या है
त्रिविध समीर भरी चमन है। पुस्तक
हाथमें उठाते ही हँसने लगियेगा और तबतक
हँसते रहियेगा जबतक कि समाप्त न हो जायगी।
अनेकों चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य १॥) मात्र।